1. बीरबहूटी

PART 1 (बीरबहूटियों को खोजना) (बादल बहुत बरस लिए थे। ------- स्टेशनरी की दुकानवाले ड्रॉपर से पैन में स्याही भरते थे।)

1. बीरबहूटी कहानी के मुख्य पात्र कौन-कौन हैं ?
   साहिल और बेला
2. ' बहुत सारा पानी उनमें बचा हुआ था। वे बादलों के ऊपर छाए हुए थे।' - इसका मतलब क्या है ?
   आगे भी वर्षा होगी
3. बहुत सारा पानी उनमें बचा हुआ था। किनमें ?
   बादलों में
4. अभी-अभी हुई बारिश का वर्णन कहानीकार ने कैसे किया है ?
   मेघों की छायाओं में गीली हवाएँ इधर-उधर घूम रही थीं। पेडों की तने अभी भी गीले थे। मूँगफलियों के हरे खेतों में पीले फूल अभी भी गीले थे। खेतों में छोटा-छोटा बाजरा उगा था। बाजरे की लंबी पतले पातों में पानी बूँदें अटकी हुई थीं।
5. साहिल और बेला स्कूल केलिए घर से कुछ समय पहले निकल आते थे। क्यों ?
   उन्हें बीरबहूटियों से मिलना था।
6. बेला किसके साथ बीरबहूटियाँ को देखने गई ?
   साहिल के
7. बीरबहूटियों की विशेषताएँ क्या-क्या थीं ?
   बीरबहूटियाँ सुर्ख, मुलायम, गदबदी और धरती पर चलती फिरती खून की बूँदें जैसी थीं।
8. दोनों कब और कहाँ बीरबहूटियों को खोजते थे ?
   बारिश के मौसम में सुबह स्कूल जाते समय, कस्बे से सटे खेतों में
9. बेला और साहिल बीरबहूटियों को कैसे खोजते थे ?
   एक दूसरे के बहुत नज़दीक रहकर, बिलकुल सटकर, गीली ज़मीन पर बैठकर

10. पटकथा (बीरबहूटियों को खोजना)

स्थान – कस्बे से सटा खेत।

समय – सुबह 9 बजे।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है, पीठ पर बस्ता है। चेहरे पर खुशी है।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहना है, पीठ पर बस्ता है। चेहरे पर खुशी है।

दृश्य का विवरण – दोनों बच्चे, स्कूल में जाते समय कस्बे से सटे खेतों में बीरबहूटियों को खोजने आए हैं।

संवाद -

बेला – देखो साहिल, यहाँ कितनी बीरबहूटियाँ हैं !

साहिल – हाँ, मैंने देखा। इसका रंग तुम्हारे रिबन के जैसा लाल है।

बेला - ठीक है। ये कितने सुर्ख, मुलायम और गदबदी हैं ! धरती पर चलती फिरती खून की बूँदें जैसी ...।

साहिल – तुमने कुछ सुना बेला ?

बेला - हाँ सुना, स्कूल में पहली घंटी लग गई है। तो हम जाएँ, बहुत देर लगी है।

साहिल – लेकिन मुझे दुकान से पैन में स्याही भी भरवानी है।

बेला - तू क्या बोलता है यार ? देर होकर कहीं माटसाब के आगे हो जाए तो ?

साहिल – नहीं बेला, स्कूल के नज़दीक के दूकान से ही भरवानी है।

बेला - ठीक है साहिल। तो जल्दी चलें।

(खेत की ज़मीन से उठकर दोनों बस्ते और वर्दी ठीक करके दुकान की ओर जाने लगते हैं।)

12. वार्तालाप को आगे बढाएँ।

साहिल - तुमने कुछ सुना बेला ?
बेला - हाँ सुना। पहली घंटी लग गई है।
साहिल - पहली घंटी किसकी है ?
बेला - हिंदी की, तूने गृहकार्य पूरा किया है क्या ?
साहिल - हाँ, लेकिन मुझे दुकान से पैन में स्याही भी भरवानी है।
बेला - तू क्या बोलता है यार ? देर होकर कहीं माटसाब के आगे हो जाया तो ?
साहिल - ऐसा नहीं होगा यार, स्कूल के नज़दीक के दुकान से ही भरवानी है।
बेला - क्या, कलम में स्याही बिलकुल नहीं है ?
साहिल - कुछ स्याही थी, पर मैंने उसे ज़मीन पर छिडक दिया।
बेला - ऐसा क्यों किया तूने ?

साहिल - नई स्याही भरवाने केलिए पैन को खाली किया ।
बेला - दुकान में स्याही नहीं है तो ?
साहिल - दुकान में स्याही ज़रूर होगा ।
बेला - तो हम जल्दी चलें ।
साहिल - ठीक है, बेला ।

13. मित्र के नाम साहिल का पत्र (बीरबहूटियों की विशेषताएँ)

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए पत्र भेज रहा हूँ ।

हमारे इलाके में अब बारिश का मौसम चल रहा है । कस्बे से सटे सारे खेत बीरबहूटियों से भर गए हैं । स्कूल में आते-जाते समय मैं अपनी सहेली बेला के साथ मिलकर उन्हें खोजते हैं । तुमने कभी सुना है बीरबहूटियों के बारे में ? ये बहुत सुर्ख, मुलायम और गदबदी हैं । उन्हें देखकर धरती पर चलती-फिरती खून की प्यारी-प्यारी बूँदें जैसे लगती हैं । सचमुच उन्हें इस तरह लाल रिबन जैसे कतार में खडे होते देखकर मन प्रसन्न हो जाता है । उन्हें खोजते रहने पर समय काट जाने का कोई अंदाज़ नहीं होगा । रविवार की छुट्टी में तुम यहाँ आना, हम साथ मिलकर उन्हें खोज लेंगे । तब तुम्हें पता चलेगा कि ये कितने मनमोहक हैं ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? तुम्हारे परिवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

14. टिप्पणी – सच्ची दोस्ती

जीवन में दोस्ती का स्थान महत्वपूर्ण है । दो व्यक्तियों के बीच का आत्मसंबंध दोस्ती का आधार है । एक कहावत है यदि आपका मित्र अच्छा है तो आपको दर्पण की कोई आवश्यकता नहीं है । दोस्तों को चुनते समय हमें बहुत सतर्क रहना चाहिए । क्योंकि कुछ लोगों की मित्रता सच्ची नहीं होती । असली दोस्ती में एक दूसरे को पूर्ण रूप से जानता है, अपनी बातें बिना कोई हिचक से दूसरे से बाँटते हैं । सच्चा मित्र मिलना बडे सौभाग्य की बात होती है । सच्चा मित्र किसी भी आपत्ति में अपने मित्र को छोडकर नहीं जाता । वे सुख में हो या दुख में साथ रहते हैं । सच्ची मित्रता में जाति, धर्म आदि किसी भी भेदभाव की भावना नहीं होती । सच्चे मित्रों से अलग होना बहुत दुखदायक होता है । समाज में जीने केलिए अच्छी दोस्ती बहुत सहायक होता है ।

15. पोस्टर – कहानी का नाटकीकरण

जी.एच.एस.एस, कोल्लम
मशहूर कथाकार प्रभात की
पाँचवीं कक्षा के दो छात्रों की
सच्ची मित्रता की कहानी
बीरबहूटी
एकांकी के रूप में
आयोजन – हिंदी मंच

2019 जून 19 बुधवार को
सुबह 10 बजे स्कूल सभाभवन में

रचना - नवीन, दसवीं कक्षा
निदेशन - श्री. वरुण, हिंदी अध्यापक
प्रस्तुति - छात्र-छात्राएँ, दसवीं कक्षा
आइए... देखिए... मज़ा लूटिए...
सबका स्वागत

PART 2 (पैन में स्याही भरवाने दुकान जाना)

(पैन में कुछ स्याही बची थी, उसे साहिल ने ज़मीन पर छिडक दिया । --------- साहिल भी कहता, " बहन जी पानी पीने चला जाऊँ ? ")

1. बेला और साहिल दुकान क्यों पहुँचे ?
   पैन में नई स्याही भरवाने केलिए
2. ' पैन में नई स्याही भरवाने केलिए साहिल और बेला दुकान पहुँचे । पर उन्हें निराशा लौटना पडा ।'- क्यों ?
   दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी । इसलिए उन्हें निराश लौटना पडा ।
3. पैन में कुछ स्याही बची थी, उसे साहिल ने ज़मीन पर छिडक दिया । ऐसा करना उचित है ? अपना मत प्रकट करें ।
   ऐसा करना उचित नहीं है । अगर दुकान जाने के बाद वहाँ स्याही है, यह निश्चित कर ऐसा करें तो परवाह नहीं होता ।
4. ' स्याही कल ही मिल पाएगी ।'- दुकानदार ने ऐसा क्यों कहा ?
   दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी ।
5. किसने पैन में बची स्याही को ज़मीन पर छिडक दिया ?
   साहिल ने

6. बेला और साहिलकितने दर्जे में पढते थे ?

पाँचवीं

7.‘ बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ‘ - दुकानदार ने ऐसा क्यों कहा ?

साहिल ने पैन में नई स्याही भरवाने की इच्छा से उसमें बची स्याही को जमीन पर छिडक दिया । दुकान पहुँचने पर वहाँ स्याही नहीं थी । तब दुकानदार ने साहिल से ऐसा कहा । कहने का मतलब है, किसी वस्तु को मिलने की प्रतीक्षा में हमारे पास के वस्तु को छोडना मूर्खता है । बिना सोच विचार करके कुछ नहीं करना चाहिए ।

8. पटकथा- (पैन में स्याही भरवाने दूकान में)

स्थान - गाँव की स्टेशनरी की दुकान ।

समय - सुबह 10 बजे ।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है, पीठ पर बस्ता है ।

2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहना है, पीठ पर बस्ता है ।

3. दुकानदार, करीब 50 साल के आदमी, धोती और कुर्ता पहने हैं ।

दृश्य का विवरण - बेला और साहिल पैन में स्याही भरवाने केलिए दुकान के पास खडे हैं ।

संवाद -

दुकानदार - अरे बच्चे, क्या चाहिए ?

बेला - भैया, एक पैन स्याही भर दो ।

दुकानदार - अरे, स्याही की बोतल अभी-अभी खाली गई है । अब तो कल ही मिल पाएगी ।

साहिल - बाप रे ! अब मैं क्या करूँ ?

दुकानदार - पैन में थोडी भी स्याही नहीं है ।

बेला - नहीं भैया । पैन में थोडी स्याही थी । इसने तो उसे ज़मीन पर छिडक दिया ।

दुकानदार - (हँसते हुए) अरे बच्चो, बादल को देखकर घडे को नहीं ढुलाना चाहिए ।

साहिल - हाँ गलती हुई ।

दुकानदार - कौन - सी कक्षा में पढते हो ?

साहिल - (बुरे मन से) पाँचवीं में ।

दुकानदार - दोनों ?

बेला - (खुशी से) हाँ, हम दोनों एक ही सेक्शन में पढते हैं । स्कूल का समय हो गया अंकिल, हम चलते हैं ।

दुकानदार - अच्छा । तो कल आओ बच्चो, स्याही ज़रूर मिलेगी ।

बेला - ठीक है भैया ।

(दोनों बच्चे निराश होकर दुकान से बाहर आते हैं ।)

9. टिप्पणी – साहिल और बेला की दोस्ती

साहिल और बेला प्रभात की कहानी बीरबहूटी के मुख्य पात्र हैं । वे दोनों फुलेरा गाँव के स्कूल में पाँचवीं कक्षा में पढनेवाले छात्र हैं । वे एक साथ स्कूल आते-जाते हैं । बीरबहूटियों को खोजने केलिए और खेलने केलिए एक साथ निकलते हैं । दोनों एक ही क्लास में पढते हैं, एक ही बेंच पर पास-पास बैठते हैं । कक्षा में साहिल जो करता है वही बेला भी करती है । एक साथ कॉपी लिखते हैं । किताब पढते तो दोनों किताब पढते, पाठ भी एक ही पढते । एक साथ पानी पीने चले जाते हैं । वे पास-पास रहते हैं । दोनों अच्छे दोस्त हैं । एक का दुख दूसरे का भी है । सुरेंदर जी माटसाब बेला के बालों में पंजा फँसाने पर साहिल दुखी हो जाता है । छत से गिरकर बेला के सिर पर चोट लगने पर भी । साहिल की पिंडली में कील लग जाने पर बेला भी बहुत दुखी हो जाती है । पाँचवीं का रिज़ल्ट आया तो छठी कक्षा में दोनों अलग-अलग स्कूलों में पढने जाने की बात सोचकर बेला को रुलाई आई तो साहिल की आँखें भी लाल हो गईं । दोनों आपस में सांत्वना देते हैं । इस प्रकार दोनों की अनुपम दोस्ती हम देख सकते हैं ।

10. टिप्पणी – अपनी दोस्ती

बचपन में मेरा दिली दोस्त था मनु । मनु के माँ-बाप गरीब थे, पर वह अच्छी तरह पढता था । सातवीं कक्षा तक हम दोनों एक ही कक्षा में पढते थे । क्लास में हम पास-पास बैठते थे । मैं पढाई में थोडा पिछडा था, इसलिए कभी-कभी पढाई में वह मेरी सहायता करता था । वह अकसर मेरा घर आता था, मैं उसके घर में भी । छुट्टी के दिन हम अन्य बच्चों के साथ पास के मैदान में खेलने जाते थे । खेलने के बाद हम वहाँ के तालाब में नहाने जाते थे । एक दिन हम स्कूल से लौट रहे थे, तब पैर फिसलकर सडक पर गिरने से पाँव में चोट लगी । तब वह मुझे अस्पताल ले गया । सातवीं पास होने पर मैं दूर के स्कूल में भर्ती कराया गया । वह गाँव में ही रहा । फिर हम मिल न पाये । उसकी यादें, अब भी मन में हैं ।

11. बेला की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक प्रभात की सुंदर कहानी बीरबहूटी का मुख्य पात्र है बेला नामक ग्यारह साल की लडकी । वह फुलेरा गाँव के स्कूल में पाँचवीं कक्षा में पढती है । उसका दोस्त है साहिल । दोनों अच्छे दोस्त हैं, वे एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं । दोनों एक ही कक्षा में पढते थे । साथ-साथ स्कूल आते-जाते हैं, रास्ते के खेत में बीरबहूटियों को खोजते हैं और खेल घंटी में गाँधी चौक में लंगडी टांग खेलते हैं । बाकी छात्रों के नज़र में बेला एक अच्छी लडकी है । एक दिन गणित के माटसाब ने कॉपी जाँचते समय उसमें गलती पाकर उसका अपमान करते तो वह बहुत उदास हो जाती है । पाँचवीं के रिज़ल्ट आने पर अगले साल बिछुड जाने के बात को लेकर दोनों दुखी हो जाते हैं । बेला में हम एक सरस स्वभाववाली, मित्रता निभानेवाली, स्वाभिमानी लडकी को देख सकते हैं ।

12. साहिल की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक प्रभात की सुंदर कहानी बीरबहूटी का मुख्य पात्र है साहिल नामक ग्यारह साल का लडका । वह फुलेरा गाँव के स्कूल में पाँचवीं कक्षा में पढता है । उसकी सहेली है बेला । दोनों अच्छे दोस्त हैं,वे एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं । दोनों एक ही कक्षा में पढते थे । साथ-साथ स्कूल आते-जाते हैं,रास्ते के खेत में बीरबहूटियों को खोजते हैं और खेल घंटी में गाँधी चौक में लंगडी टांग खेलते हैं । कॉपी जाँचते समय गणित के माटसाब बेला का अपमान करने पर वह दुखी हो जाता है । पाँचवीं के रिज़ल्ट आने पर अगले साल बिछुड जाने के बात को लेकर दोनों दुखी हो जाते हैं । साहिल में हम एक सरस स्वभाववाले, मित्रता निभानेवाले, स्वाभिमानी लडके को देख सकते हैं ।

PART 3 (बेला के साथ सुरेंदर माटसाब का बुरा व्यवहार)

(गणित के माटसाब सुरेंदर जी का पीरीयड खेल घंटी के बाद आता था । ---------- जब वह उसके पास आकर बैठी उससे नज़र नहीं मिला पाई ।)

1. बच्चे गणित के माटसाब सुरेंदर जी से क्यों डरते थे ?

   कॉपी जाँचते समय उसमें ज़रा सी गलती होने पर माटसाब बच्चों को इधर उधर फेंक देते थे या झापड मारने लगते थे ।

2. खेल घंटी बंद होने से दो मिनट पहले ही बच्चे अपनी–अपनी जगहों पर आकर बैठ जाते थे । क्यों ?

   खेल घंटी के बाद का पीरियड सुरेंदर माटसाब का था । और वे माटसाब से बहुत डरते थे ।

3. ' गणित के माटसाब छात्रों को ज़रा-सी गलती पर इधर- उधर फेंक देते थे ।' - उसपर अपना विचार लिखें ।

   छात्रों से अगर कोई गलती हुई तो प्यार भरी बातें कहकर उन्हें सुधारना चाहिए । गलती सुधारने में गुस्सा करना कभी ठीक नहीं है । ऐसा करने पर उस अध्यापक के प्रति हमेशा उनके मन में भय रहेगा । यह एक अच्छे अध्यापक केलिए लायक नहीं । शरारती बच्चों को भी प्यार भरी व्यवहार करके बदलना चाहिए ।

4. माटसाब ने बेला के बालों में पंजा क्यों फँसाया था ?

   उसकी कॉपी में गलती पाकर

5. माटसाब ने बेला को क्यों छोड दिया ?

   कॉपी में गलती न होने से

6. साहिल क्यों बुरी तरह डर गया ?

   बेला के भयभीत चेहरे को देखकर

7. बेला खुद को शर्मिंदा महसूस कर रही थी । क्यों ?

   क्योंकि साहिल के सामने माटसाब ने बेला के बालों में पंजा फँसाया ।

8. बेला साहिल से नज़र नहीं मिला पाई । क्यों ?

   क्योंकि उसे अच्छी लडकी माननेवाले साहिल के सामने माटसाब ने अकारण बालों में पंजा फँसाकर उसको अपमानित किया ।

9. ' बेला खुद को शर्मिंदा महसूस कर रही थी ।'- इसके क्या–क्या कारण हैं ?

   बेला जानती थी अपनी दिली दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी लडकी है । उसके सामने बेला अपमानित होना नहीं चाहती थी । लेकिन माटसाब का व्यवहार साहिल की उपस्थिति में थी । इसलिए उसे शरम आया ।

10. ' माटसाब चाहे मुझे पीट लेते मगर साहिल के सामने नहीं ।'- बेला ऐसा क्यों सोचती है ?

    बेला जानती थी कि अपने दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी है । साहिल के सामने वह अपमानित होना नहीं चाहती थी । इसलिए वह ऐसा सोचती है ।

11. ' बेला का मन बहुत खराब हो गया ।'- क्यों ?

    साहिल के सामने गणित के माटसाब ने गलती से बेला के बालों में पंजा फँसाया । उसे अच्छी माननेवाले साहिल के सामने यह व्यवहार होने से बेला का मन बहुत खराब हो गया ।

12. जब वह उसके पास आकर बैठी उससे नज़र नहीं मिला पाई । क्यों ?

    बेला जानती थी अपनी दिल दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी लडकी है । उसके सामने बेला अपमानित होना नहीं चाहती थी । लेकिन माटसाब का व्यवहार साहिल की उपस्थिति में थी । इस कारण उसे शरम आया । इसलिए बेला साहिल के पास आकर बैठी उससे नज़र नहीं मिला पाई ।

13. बेला की डायरी - गणित के माटसाब से हुए बुरे व्यवहार के बारे में

तारीख : …………………..

आज मुझे बहुत दुख का दिन था । गणित के माटसाब सुरेंदर जी मेरी कॉपी जाँचते वक्त उसमें गलती पाकर उन्होंने मेरे बालों मे पंजा फँसाया । लेकिन वह गलती न होने पर उन्होंने मुझे छोड दिया । मैं बहुत डर गयी थी । मेरे हाथ पैर काँप रहे थे । मुझे भयभीत होते देखकर साहिल भी बुरी तरह डर गया । माटसाब ने कॉपी मेरे बैठने की जगह पर फेंककर मुझे वहाँ जाकर बैठने को कहा । मुझे बहुत शरम आया । इसलिए मैं साहिल से नजर नहीं मिला पाई । क्या करूँ ? अगर कॉपी में गलती होती तो मेरी क्या हालत होती ? सोच भी नहीं सकती । घर पहुँचने पर भी मेरा मन दुख से भरा था । आज का यह बुरा दिन मैं जिंदगी भर याद रखूँगी ।

14. सहेली के नाम बेला का पत्र - क्लास में हुए बुरे अनुभव का ज़िक्र करते हुए

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए यह पत्र भेजती हूँ ।

आज स्कूल में एक घटना हुई । तीसरी पिरीयड गणित का था । गणित के माटसाब का नाम सुनते ही हम काँप जाते थे । आज वे मेरी कॉपी जाँच रहे थे । तभी उन्होंने मेरे बालों में पंजा फँसाया । लेकिन कॉपी में कोई गलती नहीं थी । उन्होंने मुझे छोड दिया । मैं डर से काँप रही थी । उन्होंने कॉपी मेरी सीट पर फेंक दी । फिर अपनी जगह पर बैठने का आदेश दिया । तुम जानती हो, वे कितने क्रूर हैं । उनकी क्लास हमें बहुत भयानक लगता है । वहाँ तुम्हें सुरेंदर जी जैसा कोई अध्यापक है क्या ?

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में, तुम्हारा मित्र
नाम (हस्ताक्षर)
पता । नाम

15. चरित्रगत विशेषताएँ - गणित के माटसाब सुरेंदरजी का

सुरेदर माटसाब बेला और साहिल के गणित अध्यापक थे । स्कूल के सभी बच्चे उनका नाम सुनने पर या दूर से देखने पर काँपना शुरू करते थे । इसलिए घंटी बजने के दो मिनट पहले ही अपने स्थान पर आकर बैठते थे । वे बीच बीच में गणित की कॉपी जाँचते थे । ज़रा-सी गलती पर भी झापड मारना, बालों में पंजा फँसाना, कॉपी दूर फेंकना आदि उनकी बुरी आदतें थीं । भयभीत होकर छात्र क्लास में साँस पकडकर बैठते थे । छात्रों के अपमान करने में उनको तनिक भी हिचक नहीं थी । बच्चों की गलतियों को माफ करना उनकी बस की बात नहीं थी । बच्चे उनसे बिलकुल प्यार नहीं करते थे ।

16. वार्तालाप – साहिल और बेला (माटसाब का व्यवहार)

साहिल - बेला, तुम अभी दुखी है क्या ?
बेला - फिर मैं क्या करूँ ?
साहिल - अरे, तुम जानती हो न माटसाब ऐसा ही हैं ।
बेला - मैंने कोई गलती नहीं की थी । फिर भी उन्होंने मेरे बालों में पंजा फँसाया ।
साहिल - हाँ, वे भी जानते थे । इसलिए तुम्हें छोड दिया ।
बेला - मैं सचमुच डर गई थी ।
साहिल - हाँ, मैं भी डर गया था ।
बेला - मेरे पाँव काँप रहे थे । मुझे लगा कि मैं गिर जाऊँगी ।
साहिल - मुझे भी एसा लगा ।
बेला - मैं बहुत लज्जित हूँ ... सबको मुँह कैसे दिखाउँ ? अकारण मुझे पीटने केलिए वे एक सोरी तो बोल सकते थे ... पर ।
साहिल - तुम इस घटना को भूलो ।
बेला - पर ... मैं दुख सह न पाती । घर जाकर माँ से यह बात ज़रूर बताऊँगी ।
साहिल - ज़रूर बताना । अब खुशी से घर जाओ ।
बेला - ठीक है साहिल, मैं कोशिश करूँगी ।

17. बेला और माँ के बीच हुए वार्तालाप - घर पहुँचने पर माटसाब के व्यवहार के बारे में

माँ - क्या हुआ बेटी, बहुत परेशान दिखती हो ?
बेला - क्या कहूँ माँ, आज स्कूल में एक घटना हुई ।
माँ - किसीके साथ झगडा हुआ होगा ?
बेला - नहीं । गणित के माटसाब ने मेरे बालों में पंजा फँसाया ।
माँ - सुरेंदर जी ! तुमने जरूर कोई गलती की होगी ।
बेला - नहीं माँ । मैंने जो लिखा था वह ठीक ही था ।
माँ - छोड दो । मास्टर जी है न ?
बेला - लेकिन साहिल के सामने वह अपमान मैं सह न सकी ।
माँ - कोई बात नहीं । वह तुम्हें अच्छी तरह समझता है ।

18. रपट (बेला के साथ माटसाब का व्यवहार)

छोटी लडकी के साथ माटसाब की क्रूरता

स्थान : …………… फुलेरा गाँव के स्कूल की पाँचवीं कक्षा में पढती बेला नामक दस साल की लडकी के साथ गणित के माटसाब सुरेंदर जी ने ऐसी क्रूरता दिखाई । कॉपी जाँचते वक्त उसमें गलती पाकर माटसाब ने बेला के बालों मे पंजा फँसाकर उसे फेंकने लगा । लेकिन सच में वह गलती न होने से उसे छोड दिया । उसे एक अच्छी लडकी माननेवाले अपने मित्रों के सामने हुए यह अपमान वह सह न सकती थी । छोटे बच्चों के साथ ऐसा क्रूर व्यवहार एक अध्यापक केलिए लायक नहीं है । कहा जाता है कि पूरे स्कूल के छात्र उनसे डरते हैं । कॉपी में ज़रा -सी गलती होने पर बच्चों को इधर उधर फेंक देना या झापड मारना उनकी आदत थी । बेला के पिता ने पुलिस थाने में शिकायत दर्ज़ की है ।

PART 4 (दीपावली के बाद स्कूल खुलना, गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेलना)

(दीपावली की छुट्टियों के बाद जब स्कूल खुला तो -------------- और समय से कुछ अधिक मुस्करा रही हो ।)

1. बेला के सिर पर चोट कैसे लगी थी ?

    छत से गिर जाने के कारण

2. बेला और साहिल गाँधी चौक क्यों गए थे ?

    लंगडी टाँग खेलने केलिए

SREEJITH R. KOVOOR VARKALA, SCRHS

3. साहिल के परेशान होने का कारण क्या था ?

दीपावली की छुट्टियों के बाद स्कूल खुला तो बेला के सिर पर पट्टी बाँधी थी । कोई उसे सफेद पट्टी कह रहा था तो कोई सुल्ताना डाकू तो कोई कुछ और कहकर चिढा रहा था । बेला की यह हालत देखकर साहिल परेशान हो गया ।

4.' नहीं खेलेंगे । तेरे सिर में फिर से लग जाएगी तो '- यहाँ साहिल का कौन–सा मनोभाव स्पष्ट होता है ?

बेला से उसकी अंतरंग मित्रता का ।

5. साहिल ने बेला से क्यों कहा कि " नहीं खेलेंगे ? "

बेला के सिर पर चोट लगी थी । खेलने पर फिर चोट लगने की संभावना थी । इसलिए साहिल ने बेला से ऐसा कहा ।

6. ' इन बच्चों को अपने चारों ओर खेलते देखकर गाँधीजी की मूर्ति ऐसी दिखाई पडती जैसे और सयय से कुछ अधिक मुस्करा रही हो ।'-इसका मतलब क्या है ?

गाँधीजी बच्चों को बहुत प्यार करते थे । इसलिए बच्चे जब निष्कलंकता और प्यार भरी दोस्ती के साथ अपनी मूर्ति की चारों ओर खेलने लगे तो उसे अधिक प्रसन्नता हुई होगी ।

7. पटकथा - 4 (गाँधी चौक के लंगडी टाँग खेल)

स्थान – स्कूल का मैदान ।

समय – सुबह 10 बजे ।

पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, स्कूल यूनीफॉर्म पहनी है ।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, स्कूल यूनीफॉर्म पहना है ।

दृश्य का विवरण - दीपावली के बाद स्कूल खुला तो बेला के सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी । यह देखकर साहिल उसकेपास आता है ।

संवाद -

साहिल - (परेशान होकर) तेरे सिर पर यह क्या हो गया बेला ?

बेला - (हँसकर) छत से गिरकर चोट लग गयी ।

साहिल - यह कब हुआ ?

बेला - बहुत दिन हो गए ।

साहिल - अब दर्द है क्या ?

बेला - नहीं । आज खेल घंटी में हम गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेलेंगे ।

साहिल - नहीं खेलेंगे । तेरे सिर में फिर से चोट लग जाएगी तो ...?

बेला - (ज़िद करते हुए) नहीं लगेगी ।

साहिल - तो ठीक है । अपनी मर्ज़ी ।

(दोनों खुशी से कक्षा में जाकर बैठते हैं ।)

8. साहिल का पत्र (गाँधी चौक का खेल)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ ।

दीपावली की छुट्टियों के बाद स्कूल खुला । मैं सबेरे ही स्कूल पहुँचा । थोडी देर बाद बेला आई । उसके सिर पर सफेद पट्टी बाँधी थी । बच्चे उसकी हँसी उठाने लगे । मैं उसके पास गया । वह छत से गिर गई थी । बहुत दिन हो गए थे । देखकर मुझे बहुत दुख हुआ । बाद में वह हमारे साथ गाँधी चौक में लंगडी टाँग खेली । मैं परेशान था यदि उसके सिर पर फिर से चोट लगी तो...। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ । पूरी खेल घंटी हम खुशी से खेलते रहे ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है? तुम कब यहाँ आओगे? तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

PART 5 (रविवार, साहिल पिंडली में चोट लगने से अस्पताल में) (रविवार का दिन था । ------ ये दोनों कहीं पर भी साथ ही दिखाई देते ।)

1. साहिल को सरकारी अस्पताल में पट्टी बँधवाने केलिए क्यों ले जाया गया ?

उसकी पिंडली में कील लगने से एक इंच गहरा गड्ढा हो गया था ।

2. बेला क्यों अस्पताल आई है?

सिर पर पट्टी बँधवाने केलिए

3. वार्तालाप (अस्पताल में, साहिल और बेला के बीच)

साहिल - हाय बेला, यहाँ क्यों आई हो ?

बेला - हाय साहिल, मैं तो सिर पर पट्टी बँधवाने आई है । क्या हुआ तुमको ?

साहिल – मेरी पिंडली में चोट लग गई है ।

बेला - कैसे ?

साहिल – स्टूल पर चढकर नीम की डाली पकडकर झूलते वक्त स्टूल टूटने से एक कील मेरी पिंडली में लग गई ।

बेला - डॉक्टर ने क्या कहा ?
साहिल – उन्होंने कहा घबराने की कोई बात नहीं। कुछ दिनों के बाद पट्टी खोलेंगे।
बेला - दर्द ज़्यादा है क्या ?
साहिल – अब दर्द कुछ कम हुआ है।
बेला - अच्छा मैं जाती हूँ, नर्स बुला रही है। बाई।
साहिल – ठीक है बेला, बाई।

4. बेला की डायरी (अस्पताल में जाना, वहाँ साहिल को देखना)

तारीख : ....

आज मैं अपने पापा के साथ सरकार अस्पताल में पट्टी बँधवाने गयी थी। तब वहाँ कतार में खडे साहिल को देखा। वह अपनी पिंडली में पट्टी बँधवाने आया था। स्कूल की छुट्टी होने से वह अपने घर में नीम की डाली पकडकर झूमते वक्त स्कूल की एक कील उसकी पिंडली में लग गग गई। एक इंच गहरा गड्ढा हो गया था। उसे पैर पर बहुत दर्द हो रहा था। ठीक से पैर ज़मीन पर रख न सकता था। बहुत मुश्किल से खडा था। बेचारा, कितनी बुरी हालत है उसकी। पर मुझे तो एक बात पर हँसी तो आई, कितनी एकता है हममें। अब मेरे सिर पर पट्टी है तो उसकी पिंडली में।

PART 6 (पाँचवीं कक्षा का रिज़ल्ट आना, दोनों की बिछुडाई) (पाँचवीं कक्षा का रिज़ल्ट आ गया। ---- " नहीं। तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड दिखाना।")

1. अजमेर के स्कूल में साहिल कौन-सी कक्षा में पढेगा ?
छठी
2. बेला के पापा उसे किस पाठशाला में पढाना चाहता है ?
राजकीय कन्या पाठशाला में
3. बेला और साहिल अब फुलेरा के स्कूल में नहीं पढ सकते। क्यों ?
उनका स्कूल पाँचवीं तक था। वे दोनों अब छठी में आ गए।
4. बेला और साहिल क्यों अलग हो रहे हैं ?
क्योंकि फुलेरा गाँव का उनका स्कूल पाँचवीं तक ही था।
5. साहिल और बेला को दूसरे स्कूल क्यों जाना पडता है ?
साहिल और बेला फुलेरा के जिस स्कूल में पढते हैं वह पाँचवीं तक का है। इसलिए पाँचवीं पास हुए साहिल और बेला को आगे की पढाई केलिए दूसरे स्कूल में जाना पडता है।
6. पाँचवीं कक्षा का रिज़ल्ट आने पर दोनों बच्चे बहुत दुखी थे।- कारण क्या था ?
गाँव का स्कूल पाँचवीं तक का होने से उन्हें आगे की पढाई केलिए अलग अलग स्कूलों में पढना पडेगा।

7. पटकथा (पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट आने पर)

स्थान - फुलेरा कस्बे की एक गली।
समय - सुबह 11 बजे।
पात्र - 1. बेला, करीब 11 साल की लडकी, फ्रॉक पहनी है।
2. साहिल, करीब 11 साल का लडका, कुर्ता और पतलून पहना है।
दृश्य का विवरण - दोनों पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट जानने के बाद दुखी मन से गली की एक पेड के नीचे खडे हैं।

संवाद -

साहिल - तुमने हमारा रिज़ल्ट देखा ?
बेला - हाँ देखा, हम दोनों छठी में आ गए हैं।
साहिल - अगले साल तुम कहाँ पढोगी ?
बेला - राजकीय कन्या पाठशाला में। और तुम ?
साहिल - मुझे अगले साल अजमेर भेज देंगे। वहाँ एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा।
बेला - क्यों साहिल ?
साहिल - पता नहीं क्यों ?
बेला - क्या अब तुम फुलेरा में ही नहीं रहोगे ?
साहिल - नहीं यार। तुम अपना रिपोर्ट कार्ड दिखाना।
बेला - ठीक है, तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड भी दिखाना। (दोनों एक दूसरे का रिपोर्ट कार्ड देखने लगते हैं।)
साहिल - तुम्हारी आँखों से आँसू क्यों आ रहे हैं ?
बेला - (हँसते हुए) मुझे क्या पता ? अब तुम्हारी आँखें भी लाल हो गई हैं क्यों ?
साहिल - मुझे भी नहीं पता।
बेला - आज से मैं तुम्हें कैसे चिढाऊँ ?
साहिल – तो क्या ? हम छुट्टी के दिन फिर मिलेंगे।
बेला - ठीक है, फिर मिलेंगे।
साहिल - ठीक है बेला।
(दोनों अलग-अलग रास्ते से चले जाते हैं।)

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCERTS

8. रिज़ल्ट जानकर घर आने पर साहिल और माँ के बीच हुए वार्तालाप

माँ - क्या हुआ बेटा ? बहुत परेशान दिखते हो ।
साहिल - बेला आगे मेरे साथ नहीं होगी न ?
माँ - नहीं बेटा । अगले साल वह राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी ।
साहिल - मैं अजमेर में । ऐसा है न माँ ?
माँ - हाँ बेटा । तुम्हारे पिता ने कहा था ।
साहिल - बेला के बिना मैं कैसे रहूँ माँ ?
माँ - बेटा, बेला जैसे दोस्त तुम्हें वहाँ भी मिलेगा ।
साहिल - मुझे नहीं लगता । क्या बेला मुझे भूलेगा ?
माँ - अच्छी दोस्ती कभी नहीं छूटेगा बेटा ।
साहिल - ठीक है माँ ।

9. बेला की डायरी (रिज़ल्ट दिवस की)

तारीख : ....

आज पाँचवीं कक्षा के रिज़ल्ट का दिन था । मैं और साहिल पास हो गए । मैं बहुत खुश हूँ ... साथ–साथ दुखी भी । क्योंकि मैं कल से साहिल से मिल नहीं पाएगी । अगले साल वह अजमेर जाएगा । उसे घर से दूर एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा । आज तक कितनी खुशी थी । बारिश के मौसम में साहिल के साथ बीरबहूटियों को खोजकर कितने बिताए । कल से किसके साथ लंगडी टाँग खेलूँ ? जाते समय उसकी आँखें लाल थीं और उसमें पानी भर गया था । मेरा विश्वास है कि वह भी दुखी है । क्योंकि हमारी दोस्ती उतनी सख्त थी ।

10. साहिल की डायरी (रिज़ल्ट दिवस की)

तारीख : ....

आज स्कूल का मेरा अंतिम दिन था । कितनी जल्दी पिछले पाँच साल बीत गये । अब मैं छठी कक्षा मे आ गया हूँ । आज संतोष के साथ दुख भी है । बचपन के दोस्त बेला से बिछुडने की वेदना मन में दर्द पैदा किया । आज उसकी आँखों में पहली बार मैंने आँसू देखा । मेरी भी आँखें भर गई थीं । बेला के साथ की स्कूल शिक्षा मैं कभी नहीं भूलूँगा । वह बहुत प्यारी और दिली दोस्त थी । फुलेरा के स्कूल पाँचवीं तक होने के कारण पिताजी ने मुझे अजमेर भेजने का निर्णय लिया था । वह तो अगले साल राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगी ।

PART 7 (रिपोर्ट कार्ड देखना) (साहिल बेला का रिपोर्ट कार्ड देख रहा था ---------------- एक इंच लंबा चोट का निशान था ।)

1. ' बारिश से पहले की बारिश '- इसका क्या मतलब है ?
   बेला और साहिल के दुख भरे आँसू बरसात के समान बरस रहे हैं ।
2. उनमें बारिश की बूँदों-सा पानी भर गया था । यहाँ ' उनमें ' किसकेलिए प्रयुक्त है ?
   साहिल की आँखों में
3. परीक्षा पास होने पर भी बेला और साहिल की आँखों से आँसू आये । क्यों ?
   साहिल और बेला पहली बार अलग-अलग स्कूलों में जाते हैं । यह सोचते समय दोनों की आँखों से आँसू आए ।
4. साहिल की आँखें लाल हो गईं । क्यों ?
   बेला और साहिल अगले वर्ष अलग-अलग स्कूलों में पढनेवाले हैं। वे यह सहन नहीं सकते थे। दोनों रोने लगे। इससे साहिल की आँखें लाल हो गईं।
5. ' आज आखिरी बारी वे एक दूसरे की कोई चीज़ को छूकर देख रहे थे ।'- इससे आपने क्या समझा ?
   पाँचवीं तक एक मन से हर काम लेनेवाले साहिल और बेला आगे की पढाई केलिए अलग अलग स्कूलों में भर्ती होनेवाले हैं, यानी वे बिछुड रहे हैं । इस कारण दोनों पहले की तरह कुछ कर न पाएँगे, मिल न पाएँगे । इसलिए ऐसा कहा होगा ।
6. ' यह बारिशों से पहले की बारिश का दिन था ।' कहानी के प्रसंग में यह कैसे सार्थक होता है ?
   हमेशा एकसाथ चलनेवाले साहिल और बेला आगे की पढाई केलिए अलग हो जानेवाले हैं । इस बिछुडन के बारे में आपस में बताकर दोनों दुखी हुए और उनकी आँखें भर गयीं । यह लेखक को बारिश से पहले की बारिश लगी ।

7. पटकथा (रिपोर्ट कार्ड देखने के बाद)

स्थान - स्कूल से घर जाने का रास्ता ।
समय - सुबह के 10 बजे ।
पात्र - 1. साहिल, करीब 11 साल का, कुर्ता और पतलून पहना है ।
2. बेला, करीब 11 साल की, फ्रॉक पहनी है ।
घटना का विवरण - साहिल और बेला दोनों किसी चिंता में मग्न है । वे आपस में बातें करने लगे ।

संवाद –

साहिल – तुम अपना रिपोर्ट कार्ड दिखाना ।
बेला - ठीक है, तुम्हारा रिपोर्ट कार्ड भी दिखाना । (दोनों एक दूसरे का रिपोर्ट कार्ड देखने लगते हैं ।)
साहिल - तुम्हारी आँखों से आँसू क्यों आ रहे हैं ?
बेला - (हँसते हुए) मुझे क्या पता ? अब तुम्हारी आँखें भी लाल हो गई हैं क्यों ?
साहिल - मुझे भी नहीं पता ।
बेला - आज से मैं तुम्हें कैसे चिढाऊँ ?

SREENITH R KOVOOR VARKALA, SCRT45

साहिल – तो क्या ? हम छुट्टी के दिन फिर मिलेंगे ।
बेला - ठीक है, फिर मिलेंगे ।
साहिल - ठीक है बेला ।
(दोनों अलग-अलग रास्ते से चले जाते हैं ।)

8. साहिल का पत्र बेला को (नए स्कूल के बारे में)

स्थान : ……………….
तारीख : ……………….

प्रिय बेला,
तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, मेरे नए स्कूल के बारे में बताने केलिए यह पत्र भेज रहा हूँ । परसों मैं इधर पहुँचा । यात्रा बहुत मुश्किल थी । गाडी में बडी भीड थी । कल यहाँ के स्कूल में मेरी भर्ती हुई । स्कूल होस्टल से आधा किलोमीटर दूर पर है । बडा स्कूल है । बडे बडे कमरे और मैदान । आँगन का बगीचा तरह तरह के फूलों से बहुत खूबसूरत है । कल सुबह स्कूल खुलेगा । होस्टल में पचास से अधिक छात्र हैं । कमरे में मेरा सहवासी है गणेश । वह आगरा से है । स्कूल जाने के लिए यहाँ से गाडी है । यहाँ की सडकें तो गाडियों से भरी हैं । कल शाम हम घूमने गए । इलाका बहुत सुंदर है । फुलेरा कितना छोटा है । यहाँ छोटी बडी दूकानें, बैंक, सिनेमाघर, मंदिर, मस्जिद सब कुछ हैं । यहाँ के लोग सदा व्यस्त हैं ।
आच्छा, वहाँ कैसे चल रहा है ? सब ठीक हैं न ? नया स्कूल कैसा है ? कल रात में भी मैंने बीरबहूटियों को खोजने का सपना देखा । वहाँ की सारी बातें विशद रूप से लिखना । अगली छुट्टी में हम मिलें । तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

9. बेला का पत्र साहिल को (अजमेर के स्कूल के बारे में)

स्थान : ……………….
तारीख : ……………….

प्रिय साहिल,
तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, तुम्हारे नए स्कूल के बारे में जानने और मेरे नए स्कूल के बारे में बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ ।
अब तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? अजमेर का तुम्हारा नया स्कूल कैसा है ? वहाँ कोई नया दोस्त मिला है क्या ? हॉस्टल स्कूल के पास ही है न ? तुम्हारा नया स्कूल फुलेरा का स्कूल जैसा है क्या ? तुम्हें पुराने स्कूल की याद कभी आती है ? अपने बारे में कहे तो मेरा नया स्कूल बहुत अच्छी है । वहाँ मुझे कई दोस्त मिले हैं । मुझे हमेशा तुम्हारी याद आती हैं । पहले की तरह हम कब खेत में बीरबहूटियों को खोजेंगे ? तुम्हारे स्कूल के गणित के माटसाब सुरेंदरजी जैसा नहीं है न ?
वहाँ की सारी बातें विशद रूप से ज़रूर लिखना । अगली छुट्टी में हम मिलें । तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारी सहेली
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

2. हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था PART -1 (कविता)

1. कवि हताश व्यक्ति के पास जाकर उसकी ओर हाथ क्यों बढाया ?
   क्योंकि कवि उसकी हताश को जानता था ।
2. व्यक्ति की हालत समझकर कवि ने क्या किया ?
   कवि ने उस व्यक्ति के पास गया और सहायता करने केलिए उसकी ओर हाथ बढाया ।
3. कवि ने हाथ बढाया तो उस व्यक्ति ने क्या किया ?
   व्यक्ति ने कवि का हाथ पकडा और उनके साथ चलने लगा ।
4. ‘ हम दोनों साथ चले ‘- कौन-कौन साथ चले ?
   कवि और हताश व्यक्ति
5. ‘ व्यक्ति को जानना ’ और ‘ हताशा को जानना ’ का अर्थ क्या है ?
   व्यक्ति को जानना - किसीको व्यक्तिगत रूप से यानी उसके नाम, पता, उम्र, ओहदा, जाति आदि से जानना ।
   हताशा को जानना - किसीको उसकी हताशा,निराशा, असहायता या संकट को जानना ।
6. ‘ अपरिचित होने पर भी कवि ने हताश व्यक्ति की सहायता की ।‘- इससे क्या संदेश मिलता है ?
   किसी व्यक्ति की सहायता करने केलिए उसको व्यक्तिगत रूप से जानने की ज़रूरत नहीं है । उसकी हताशा, दुख-दर्द, विवशता, समस्या, आवश्यकता आदि को पहचानना ही असली जानना है । दो मनुष्यों के बीच मानवीय संवेदना चाहिए ।

7. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ समकालीन हिंदी साहित्य के विख्यात कवि श्री. विनोद कुमार शुक्ल की सुंदर कविता हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था से ली गई हैं । इस कविता में कवि जानना शब्द की हमारी जानी पहचानी रूढी को तोड देते हैं ।

SREEJITH P, KOVOOR VARKALA, SCERIS

कवि कहते हैं कि सडक पर हताशा से बैठे एक अपरिचित व्यक्ति को देखते ही कवि उसकी समस्या को जल्दी पहचान लेते हैं। इसलिए उसकी सहायता करने केलिए उसकी ओर हाथ बढाते हैं। कवि के हाथ पकडकर वह खडा हुआ। कवि को वह नहीं जानता था, पर कवि के हाथ बढाने को जानता था। दोनों साथ-साथ चले। यानी कवि व्यक्ति को जानने के बदले उसकी समस्या को पहचाने। कवि का कहना है कि अकसर हम दूसरों को उनके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति आदि के द्वारा जानते हैं। लेकिन असल में किसीको जानना है तो उसकी हताशा,निराशा, असहायता या संकट को जानना ही काफी होगा। किसीको व्यक्तिगत रूप से जानना और उसकी हताशा, दुख-दर्द, विवशता, समस्या, आवश्यकता आदि से जानना दोनों अलग है। मनुष्य की समस्या को पहचानने केलिए उसको वैयक्तिगत (व्यक्तिगत) रूप से जानने की ज़रूरत नहीं है। सडक पर घायल पडे व्यक्ति को देखना पडे तो हमें समझना चाहिए कि वह व्यक्ति मुसीबत में है और उसे हमारी मदद की आवश्यकता है। यहाँ कवि मनुष्य को मनुष्य की तरह जानने की याद दिलाती है। कविता का संदेश है कि मनुष्यों के बीच मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है, जानकारियाँ नहीं।

जानना शब्द को एक विशेष अर्थ प्रस्तुत करनेवाली इस कविता की प्रासंगिकता सार्वकालिक है। कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है। गद्य में लिखी हुई इस कविता में गीतात्मकता का बोध खूब मिलता है। यह कविता कोई लोकगीत जैसा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती है। जानता था और नहीं जानता था का प्रयोग अधिक आकर्षक बना है।

8. रपट - सडक दुर्घटना में एक व्यक्ति घायल पडा। किसीने उसकी सहायता नहीं की। बहुत समय तक वह सडक पर ही पडा रहा।

घायल आदमी पडे रहे लंबी देर सडक पर

स्थान : ------- कल शाम को किसी अज्ञात गाडी के टकराने से घायल हुए एक आदमी बहुत समय सडक के किनारे ही पडा रहा। उसके शरीर से खून बह रहा था। उसका एक हाथ टूट गया था। सिर पर भी चोट लग गई थी। उसकी हालत बहुत नाज़ुक थी। बहुत लोग उसके पास से गुज़रे। पर किसीने उसकी सहायता करने की कोशिश नहीं की। कुछ लोग उसे देखे बिना चला गया तो कुछ उसे एक शो की तरह देखता रहा तो और कुछ उसकी फोटो खीचकर ज़्यादा लैक प्राप्त करने की कोशिश में लगे रहे। भाग्य से अंत में एक बूढा आदमी आकर उसे अस्पताल पहुँचाया। उनके अवसरोचित हस्तक्षेप से उसकी जान बच गई। इससे पता चलता है कि आज के ज़माने के लोगों में मनुष्यता बहुत कम देखने को मिलते हैं। वे अपने-अपने बारे में ही सोचते हैं। दूसरों की मदद करने में वे हिचकते हैं। यह तो बहुत खतरनाक स्थिति है।

9. व्यक्ति को जानने के संबंध में कवि के मत पर टिप्पणी

श्री. विनोद कुमार शुक्ल द्वारा लिखित हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था नामक कविता में प्रस्तुत प्रसंग आता है। कविता द्वारा कवि ने जानना शब्द के रूढीग्रस्त अर्थ को पूरी तरह से बदल दिया है। कवि का कहना है कि अकसर हम दूसरों को उनके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति आदि के द्वारा जानते हैं। लेकिन असल में किसीको जानना है तो उसकी हताशा,निराशा, असहायता या संकट को जानना ही काफी होगा। किसीको व्यक्तिगत रूप से जानना और उसकी हताशा, दुख-दर्द, विवशता, समस्या, आवश्यकता आदि से जानना दोनों अलग है। मनुष्य की समस्या को पहचानने केलिए उसको वैयक्तिगत (व्यक्तिगत) रूप से जानने की ज़रूरत नहीं है। सडक पर घायल पडे व्यक्ति को देखना पडे तो हमें समझना चाहिए कि वह व्यक्ति मुसीबत में है और उसे हमारी मदद की आवश्यकता है। यहाँ कवि मनुष्य को मनुष्य की तरह जानने की याद दिलाती है। कविता का संदेश है कि मनुष्यों के बीच मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है, जानकारियाँ नहीं।

2. हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था PART - 2 (टिप्पणी)

1. किसीको जानने केलिए हमें क्या करना चाहिए ?

हमें उसकी हताशा, निराशा, असहायता या उसके संकट को जानना चाहिए।

2. ‘ जानना ‘ शब्द की हमारी जानी-पहचानी रूढी क्या है ?

व्यक्ति को उसके नाम, पते, उम्र, ओहदे या जाति से जानना।

3. घायल पडे व्यक्ति के प्रति हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए ?

घायल पडे व्यक्ति को किसी का मदद की सख्त ज़रूरत है। अत: उसकी जानकारी के बिना सहायता करना अनिवार्य है।

4. कवि के अनुसार मनुष्य को किस तरह जानना चाहिए ?

मनुष्य की तरह

5. ‘ जानने ’ का असली आधार क्या है ?

व्यक्ति को उसकी हताशा से जानना

6. हमें किन-किन व्यक्तियों की मदद करनी चाहिए ?

हताश, असहाय और संकट में पडे

7. मुसीबत में पडे लोगों को किसकी ज़रूरत है ?

हमारी मदद की

8. ‘ जानना ‘ शब्द की लेखक की व्याख्या से आप कहाँ तक सहमत हैं ?

जानना शब्द की लेखक की व्याख्या से मैं सहमत हूँ। अकसर हम दूसरों को उसके नाम, पते, उम्र, ओहदे या जाति से ही जानते हैं। लेकिन सच में किसीको जानना है तो उसके दर्द और एहसास को समझना चाहिए। उसकी हताशा, असहायता, दुख और कठिनाई को जाने बिना जानना कभी पूर्ण नहीं होता।

9. कविता के शिल्प पक्ष पर लेखक के क्या-क्या निरीक्षण हैं ?

लेखक की राय में कविता का शिल्प पक्ष एकदम बारीक है। गद्य में लिखी हुई इस कविता में लिरिकल या गीतात्मकता का बोध भी खूब मिलता है। यह कविता कोई लोकगीत या गज़ल जैसा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती है। ‘ जानता था ’ और ‘ नहीं जानता था ’ का प्रयोग अधिक आकर्षक बना है।

SREEJITH KOVOOR VARKALA.COM

10. टिप्पणी – जानना शब्द की लेखक की व्याख्या

जानना शब्द की लेखक की व्याख्या से मैं सहमत हूँ। यहाँ लेखक ने जानना शब्द की हमारी उस जानी-पहचानी रूढी को तोड दिया है, जो व्यक्ति के नाम, पते, उम्र, ओहदे या जाति से जानने को जोडती है। प्रस्तुत टिप्पणी में लेखक ने जानना शब्द को नए ढंग से परिभाषित किया है। इस व्याख्या के पीछे लेखक का उद्देश्य व्यक्ति की आंतरिकता को जानने से है। जैसे अगर कोई व्यक्ति सडक पर घायल अवस्था में पडा है, तो हमें मदद करनी चाहिए। क्योंकि दो मनुष्यों के बीच लेखक ने मनुष्यता अहसास यानी मानवीय संवेदना का होना ज़रूरी माना है - जानकारियाँ का नहीं। किसी व्यक्ति की मुसीबत में सहायता करना चाहिए न कि जब हम उसे जानते हैं तभी उसकी मदद करें।

11. टिप्पणी – जीवन में मानवीय मूल्य का महत्व

हरेक व्यक्ति के जीवन में मूल्यों का अत्यधिक महत्व है । हमारा व्यक्तित्व और चरित्र हमारे द्वारा बनाए गए मूल्यों के आधार पर बनता है । अच्छे मूल्य हमें समाज में दूसरों की ज़रूरतों के प्रति मानवीय और संवेदनशील बनाते हैं । मूल्य मनुष्य को मनुष्य बनाते हैं , इसके बिना एक आदमी जानवर से कम नहीं होगा। जीवन की समस्याओं से बचने में मानवीय मूल्य आम जनता की मदद करती है। हमें दूसरों की परेशानियाँ जानकर उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए । जो विपत्ति के समय दूसरों की सहायता करता है , वही सच्चा मानव है । दूसरों की परेशानियों को हमें अपनी परेशानियाँ जैसा मानना चाहिए। हमें सहजीवियों के साथ करुणा एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए । दूसरों केलिए अपने जीवन तथा जीवन की सुविधाएँ तक त्यागनेवाले बहुत लोग आज भी हमारे ज़माने में रहते हैं । ऐसे लोग अमर बन जाते हैं । हम सब परस्पर सहायता करनेवाला हो तो समाज के हरेक प्यार –भरे जीवन बिता सकेंगे । संक्षेप में हम सभी को अच्छे मूल्यों को अपनाना चाहिए और आनेवाली पीढियों को भी इसका महत्व सिखाना चाहिए।

12. टिप्पणी- मनुष्य को मनुष्य की तरह जानना है

समकालीन हिंदी कवि विनोद कुमार शुक्ल की हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था कविता पर नरेश सक्सेना लिखी टिप्पणी में जानना शब्द को एक विशेष अर्थ प्रस्तुत किया है। यह कविता जानना शब्द की हमारी जानी पहचानी रूढी को तोड देते हैं। मनुष्य की समस्या को पहचानने केलिए उसको व्यक्तिगत रूप से जानने की ज़रूरत नहीं। किसीकी मदद करने केलिए उसकी दुख –दर्द और एहसास को समझना ही उचित होगा। यानी एक व्यक्ति को जानने केलिए उसके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति अदि की ज़रूरत नहीं। उसकी हताशा, निराशा, असहायता या उसके संकट को जानना ही सच्चा जानना है। मनुष्य को मनुष्य की तरह जानना चाहिए। सडक पर घायल पडे या मुसीबत में पडे अपरिचित व्यक्ति को देखकर उसकी मदद करना सच्चे मनुष्य का दायित्व है। व्यक्ति को जानने के बदले उसकी आवश्यकता या समस्या पहचानकर उसे ज़िंदगी की ओर वापस ले आना ही असली जानना है। अर्थात दो मनुष्यों के बीच मनुष्यता का अहसास यानी मानवीय संवेदना होना ज़रूरी है, जानकारियाँ ज़रूरी नहीं हैं।

13. पोस्टर (संदेश) points – अंगदान का महत्व

1. अंगदान जीवन दान ...
   अंगदान जीवन में मुस्कान।
2. अंगदान सर्वश्रेष्ठ दान ...
   स्वर्ग में स्थान मिलने को करो अंगदान।
3. अंधविश्वास को छोडिए ...
   अंगदान में सहयोग दीजिए।
4. मृत्यु के बाद दीजिए दूसरों को प्राण ...
   आगे बढिए और कीजिए अंगदान।
5. करो दान किड्नी, नेत्र, हृदय, जिगर और देह की ...
   अपनी मृत्यु के बाद किसीको जीवित रहने को मदद करें।
6. जीते जीते रक्तदान जाते जाते अंगदान
   और जाने के बाद नेत्रदान और देहदान।

विश्व अंगदान दिवस – अगस्त 13

14. पोस्टर (points)संदेश – सडक पर घायल पडे लोगों की जान बचाना मनुष्यता है

1. घायलों को जल्दी जल्दी पहुँचाएँ अस्पताल
   रक्त बहाकर उन्हें वहाँ पडने न दें
2. सडक पर घायल पडे को बचाना मनुष्यता है
   हरेक व्यक्ति की जान कीमत है
3. घायल पडे लोगों को देखे बिना गुज़रना नहीं चाहिए
   मोबाइल पर फोटो खींचने पर नहीं,
   उसकी रक्षा करने में हमारा ध्यान होना चाहिए।
4. घायल पडे की जान बचाएँ
   उनके घर का प्रकाश मिटने न दें
5. ध्यान रखें, उसे देखे बिना जाने वाले आपको ही
   यही हालत होने की संभावना है
6. घायलों का फोटो खींचकर लैक मिलने में नहीं
   उसपर मनुष्यता दिखाने में होना है हमारा ध्यान

15. पोस्टर (points)संदेश – अगस्त 19 विश्व मानवतावादी दिवस के अवसर पर 'ज्वाला कला समिति, जैसलमेर' विश्व प्रेम, भाईचारा आदि संदेशों का प्रचार करने जा रही है।

अगस्त 19 विश्व मानवतावादी दिवस

जातीय, धार्मिक और रंग संबंधी असमानता दूर करें।

विश्व प्रेम का प्रचार करें।

भाईचारा बनाए रखें।

असहायों की मदद करें।

ज्वाला कला समिति, जैसलमेर

3. टूटा पहिया PART -1 (मैं रथ का ----- घिर जाए)

1. समानार्थी शब्द लिखें ।

1. पहिया - चक्र 2. चुनौती - ललकार 3. टूटा – तोडा हुआ / छिन्न भिन्न
4. दुरूह - समझने में कठिन/ रहस्यमय 5. सेना - सैन्य 6. अक्षौहिणी सेना – चतुरंगिणी सेना
7. दुस्साहसी - अति साहसी/ अनुचित रूप में धैर्य दिखानेवाला

2. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1.मत फेंकना – नहीं छोडना/ उपेक्षा नहीं करना 2. चुनौती देना – ललकार देना 3. घिर जाना – फँस जाना

3. किसका प्रतीक है ?

1. टूटा पहिया – लघु मानव का / मानवीय मूल्य का/ हाशिए पर छोडे गए लोगों का
2. चक्रव्यूह – जीवन की समस्याओं का
3. अभिमन्यु – अधर्म के विरोधी का/ साहसी आदमी का / साधारण जनता का/ नई युवा पीढी का

4. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. हमें किसकी उपेक्षा मत करनी चाहिए ?
टूटे पहिये की (मानवीय मूल्य की / लघु मानव की)

2. ‘ लेकिन मुझे फेंको मत ’- किसको ?
टूटे पहिये को

3. कवि के मत में अक्षौहिणी सेनाओं को किसने चुनौती दी ?
अभिमन्यु ने

4. टूटा पहिया किसका सहारा बन सकता है ?
किसी दुस्साहसी अभिमन्यु का

5. कवि ने टूटा पहिए को मत फेंकने को क्यों कहा गया है ?
कवि के अनुसार जिस चीज़ को हम फालतू समझकर फेंक देते हैं,उसका कभी उपयोग करने का मौका आ सकता है । महाभारत युद्ध में महारथियों का मुकाबला करने में रथ के टूटे हुए पहिए का सहारा लिया था । उसी प्रकार शोषण से पीडित आम जनता केलिए शासक वर्ग के अधर्म और अत्याचार के खिलाफ मानवीय मूल्य रूपी यह टूटा पहिया काम आएगा ।

6. अभिमन्यु को दुस्साहसी क्यों कहा गया है ?
क्योंकि केवल सोलह साल का लडका अभिमन्यु कौरव पक्ष के बडे-बडे महारथियों से लोहा लोनो को तैयार हो जाता है ।

अथवा

अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु केवल चक्रव्यूह में घुसने की विद्या ही जानता था । लेकिन उससे बाहर निकलने का रास्ता उसे पता नहीं था । फिर भी बिना सोचे शत्रुओं की चुनौती स्वीकार करके चक्रव्यूह के अंदर प्रवेश करके युद्ध करने तैयार हुआ । इसलिए अभिमन्यु को दुस्साहसी कहा गया है ।

7. कवितांश का आशय (मै रथ का टूटा हुआ पहिया .... अभिमन्यू आकर घिर जाए !)

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **‘ श्री . धर्मवीर भारती ’** की कविता संग्रह **‘ सात गीत वर्ष ’** से चुनी गई ‘ टूटा पहिया ’ कविता से ली गई हैं । महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है । इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए ।

कवि रथ का टूटा हुआ पहिया बताने के जैसे कहते हैं कि मैं भले ही रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, किंतु मुझे अनुपयोगी मानकर मत फेंको । क्योंकि कौरवों से रचित दुरूह चक्रव्यूह में अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ दुस्साहस के साथ अभिमन्यु आकर घिर जाएगा । यानी जीवन की समस्याएँ रूपी चक्रव्यूह में शोषण की अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ कोई शोषित मनुष्य अभिमन्यु के समान आ जाए तो टूटा पहिया, टूटे मानवीय मूल्य ही उसका सहारा बन जाएगा । यहाँ टूटा पहिया मानवीय मूल्यों का,चक्रव्यूह जीवन की समस्याओं का और अभिमन्यु शोषण से पीडित आम जनता का प्रतीक है ।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है । कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है ।

8. टूटा पहिया कविता की प्रासंगिकता पर टिप्पणी लिखें ।

टूटा पहिया हिन्दी के प्रसिद्ध कवि धर्मवीर भारती की प्रतीकात्मक कविता है । इस कविता के द्वारा कवि लघु मानव की प्रधानता पर बल देते हैं ।

कवि महाभारत के एक पौराणिक प्रसंग का सहारा लेते हैं । चक्रव्यूह को भेदकर उसमें प्रवेश किया अभिमन्यु उसमें फँस जाता है । कौरव पक्ष के सभी महायोद्धा एकसाथ मिलकर अभिमन्यु पर आक्रमण करते हैं । उसके घोडे, रथ, हथियार – सब नष्ट कर देते हैं । तब उसे रथ का एक टूटा पहिया ही एकमात्र सहारा बन जाता है । इस टूटे पहिए की सहायता से वह उन महारथियों से थोडी देर केलिए अपनी रक्षा करता है और अंत में वीरमृत्यु होती है ।

यहाँ एक सारहीन या तुच्छ टूटा पहिया ही वीर योद्धा अभिमन्यु के लिए सहायक बनता है। इसी प्रकार समाज के तुच्छ माने जानेवाले मानव भी क्रांति (विप्लव) के वाहक बन सकते हैं और सामाजिक परिवर्तन संभव करा सकते हैं। अत : हमें यह मानना चाहिए कि समाज के तुच्छ माने जानेवाली बातें भी कभी-न-कभी बडी सहायक हो सकती हैं।

वर्तमान समाज में भी तुच्छ माने जानेवाले मानव का महत्वपूर्ण स्थान है। सच्चे प्रजातंत्र में कोई भी व्यक्ति तुच्छ नहीं होता। शासन का निर्माण भी उसके हाथों से हो सकता है। याने यह कविता बिलकुल अच्छी और प्रासंगिक है।

PART – 2 (अपने पक्ष को ----- लोहा ले सकता हूँ)

1. समानार्थी शब्द लिखें।

1. असत्य -झूठ 2. महारथी - महान योद्धा 3. अकेली - एकाकी 4. पक्ष - वश, भाग
5. अपने - निज 6. आवाज़ - ध्वनि 7. निहत्थी - निरायुध/ शस्त्रहीन 8. हाथ - कर

2. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. कुचल देना – रौंद डालना / शत्रु का सर्वनाश कर देना 2. लोहा लेना – सामना करना / मुकाबला करना / युद्ध करना

3. किसका प्रतीक है ?

1. ब्रह्मास्त्र - सर्वनाश का/ शोषक के हाथ की महाशक्ति का

4. प्रश्नों का उत्तर लिखें।

1. कविता के आधार पर किसका पक्ष असत्य का है ?
बडे बडे महारथी का (कौरवों का)

2. ‘ अकेली निहत्थी आवाज़ ’- यह किसके बारे में कहा गया है ?
अभिमन्यु के (अन्याय के विरुद्ध लडनेवाले के)

3. ब्रह्मास्त्रों से लोहा लेने में किसने अभिमन्यु की मदद की ?
टूटा पहिया ने

4. टूटा पहिया ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता है। इससे आपने क्या समझा ?
शोषक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति के ज़रिए ब्रह्मास्त्र से अकेले निरायुध व्यक्ति की असहाय आवाज़ को कुचल देना चाहते हैं। अगर उसके शस्त्रहीन हाथों में रथ का पहिया आ जाए तो वह ब्रह्मास्त्र से लड सकता है, उसका सामना कर सकता है।

5. अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी
बडे-बडे महारथी
अकेली निहत्थी आवाज को
अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें ! - इन पंक्तियों के आशय पर चर्चा करें।

अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी बडे बडे महारथियों ने अपने ब्रह्मास्त्रों से अभिमन्यु अकेली निहत्थी आवाज़ को कुचल डालना चाहा। शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति का दुरुपयोग करके आम जनता को कुचल डालना चाहता है।

6. तब मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया
उसके हाथों में
ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ ! - इन पंक्तियों में चर्चित पौराणिक संदर्भ वर्तमान परिवेश में कहाँ तक प्रासंगिक है ?

चक्रव्यूह में फँसे निरायुध अभिमन्यु ने रथ के टूटे हुए पहिए से शत्रुओं के ब्रह्मास्त्रों का लोहा ले सकता है। उसी प्रकार शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति के जरिए आम जनता पर अत्याचार करते समय इससे मुक्ति पाने केलिए उनको मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पडेगा।

7. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **‘ श्री. धर्मवीर भारती ’** की कविता संग्रह **‘ सात गीत वर्ष ’** से चुनी गई ‘ टूटा पहिया ’ कविता से ली गई हैं। महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए।

कवि रथ का टूटा हुआ पहिया बताने के जैसे कहते हैं कि अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी बडे बडे महारथियों ने अपने ब्रह्मास्त्रों से अभिमन्यु, अकेली निहत्थी आवाज़ को कुचल डालना चाहा। उस वक्त अभिमन्यु ने अपने रथ के टूटे हुए पहिए को हथियार बनाकर ब्रह्मास्त्रों से लोहा लिया था। शासक वर्ग अपने अधिकार और शक्ति का दुरुपयोग करके आम जनता को कुचल डालना चाहता है। ऐसी अवसर पर मैं, रथ का टूटा पहिया मानवीय मूल्य बनकर निरायुध के हाथ में आ जाता हूँ और ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ। यहाँ महारथी शोषक वर्ग का और ब्रह्मास्त्र शोषक के हाथ की महाशक्ति का प्रतीक है।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है। कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है।

SREENATH R, KOVOOR VARKALA, SCRIPS

PART - 3 (मैं रथ का ----- आश्रय ले)

1. समानार्थी शब्द लिखें।

1. सहसा - अचानक
2. सच्चाई - सत्य
3. गति - संचार
4. आश्रय - सहारा
5. सामूहिक - एकत्रित

2. मुहावरे का मतलब क्या है ?

1. झूठी पड जाना – असत्य सिद्ध होना / गलत साबित होना
2. आश्रय लेना – सहारा लेना

3. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. ' सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय लेगी '– कब ?

इतिहासों की सामूहिक गति सहसा झूठी पड जाने पर

2. इतिहासों की सामूहिक गति
सहसा झूठी पड जाने पर
क्या जाने
सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले ! - इन पंक्तियों से कवि क्या बताना चाहते हैं ?

आज के इस बदलते युग में भी इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोडकर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है । तब सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पडेगा । इसलिए हमें टूटा पहिया रूपी मानवीय मूल्य की उपेक्षा नहीं करना चाहिए। मुसीबत के अवसर पर अभिमन्यु केलिए टूटा पहिया कैसे उपयोगी बना उसी प्रकार आम जनता केलिए मानवीय मूल्य काम आएगा ।

3. टूटा पहिया किसका प्रतिनिधित्व करता है ? स्पष्ट करें ।

टूटा पहिया **लघु मानव** का प्रतिनिधित्व करता है । हमारे समाज में कुछ गरीब, निम्न जाति के लोग, दलित, आदिवासी, आदि लोगों को सब निस्सार या तुच्छ मानते हैं । वास्तव में ऐसा मानना ठीक नहीं है । क्योंकि कौन, कब, कैसे, कहाँ से काम में आएगा बता नहीं सकता । इसलिए किसीको निस्सार या तुच्छ न मानें ।

अथवा

टूटा पहिया **मानवीय मूल्य** का प्रतिनिधित्व करता है । हमें किसी भी मूल्य और वस्तु को निस्सार, अनुपयोगी मानकर फेंकना नहीं चाहिए । क्योंकि पता नहीं कब समय बदले, परिस्थितियाँ विपरीत हो जाए और वह निस्सार वस्तु या मूल्य अपनेलिए सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध हो । तुच्छ-सी लगनेवाली वस्तु भी सांत्वना देने में समर्थ हो सकती है । जब दुनिया में मानव मूल्यों का नाश होता रहेगा, तो साधारण मनुष्य इन्हीं मानव मूल्यों को समेटकर समाज की भलाई केलिए कर्मनिरत रहेगा । मानवीय मूल्यों के संरक्षण से ही संसार की उन्नति होगी ।

4. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के मशहूर कवि **' श्री .धर्मवीर भारती '** की कविता संग्रह **' सात गीत वर्ष '** से चुनी गई ' टूटा पहिया ' कविता से ली गई हैं । महाभारत युद्ध के प्रसंग को आधार बनाकर लिखी गई इस प्रतीकात्मक कविता में कवि ने वर्तमान सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है । इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि इस संसार में प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य है, किसी भी वस्तु को तुच्छ समझकर उपेक्षा न करना चाहिए ।

टूटा पहिया फिर भी अपने महत्व की याद दिलाती है कि मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ, लेकिन मुझे नहीं फेंकना । मुसीबत के अवसर पर अभिमन्यु केलिए टूटा पहिया कैसे उपयोगी बना उसी प्रकार आम जनता केलिए मानवीय मूल्य काम आएगा । इतिहास की सामूहिक गति सत्य और धर्म को छोडकर असत्य और अधर्म के मार्ग पर चलने लगती है । उस समय सत्य के पक्ष, आम जनता को अधार्मिक शक्तियों के विरोध करने में तुच्छ माननेवाले इस टूटा हआ पहिया यानी मानवीय मूल्य का सहारा लेना पडेगा । यानी समाज में शोषण और असमत्व बढते वक्त आम जनता को मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पडता है । यहाँ टूटा पहिया मानवीय मूल्य का प्रतीक है ।

मानवीय मूल्यों की शक्ति व्यक्त करनेवाली यह कविता हर तरह से बिलकुल प्रासंगिक तथा अच्छी है । कवि ने कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उन्हें अपने उद्देश्य कथन में पूर्ण रूप से सफलता मिली है ।

5. युद्ध विरुद्ध पोस्टर तैयार करें ।

युद्ध छोडो ... सब मिलजुलकर रहो ...

1. युद्ध विनाशकारी है ।
   युद्ध छोडो शांति से रहो ।
2. युद्ध से किसीको कोई लाभ नहीं
   युद्ध सर्वनाश है उसको रोको ।
3. युद्ध देश को विकास की ओर नहीं,
   विनाश की ओर ले जाता है ।
4. युद्ध से दूर रहें ...
   मानवराशी को बचाएँ ।
5. बंदूक, तोप, अणुबम आदि का प्रयोग न होने दे ...
   मानव की धन-संपत्ति, घर, बंधुजन आदि का नाश न करने दे ।
6. युद्ध की भयानकता समझो
   आगे युद्ध न होने केलिए सब कोशिश करें ।

हिरोशिमा दिवस – अगस्त 6

4. आई एम कलाम के बहाने

PART -1 (गाँव के स्कूल में मेरा एक साथी था - मोरपाल। --------------- रोज़ पंद्रह किलोमीटर बिना छलकाए लिए आता था।)

1. क्लास की दरीपट्टी पर लेखक और मोरपाल की जगहें साथ थीं। क्यों ?

   नाम का पहला अक्षर मिलने की वजह से

2. मिहिर और मोरपाल के बीच का सौदा क्या था ?

   खेल घंटी में खाने की अदला-बदली करने का

3. मोरपाल केलिए खास चीज़ थी राजमा। क्यों ?

   अपनी गरीबी के कारण घर में राजमा खरीद नहीं सकता था। इसलिए उसे राजमा देखने या खाने का अवसर नहीं मिला था

4. मोरपाल ने पहले कभी राजमा देखा भी नहीं था। कारण क्या होगा ?

   मोरपाल की गरीबी

5. छाछ किसकी कमज़ोरी है ?

   मिहिर की

6. ' हमारा सौदा था घंटी में खाने की अदला-बदली का।'- इस तरह की अदला बदली से हम क्या समझ पाते हैं ?

   सच्ची दोस्ती का मिसाल यहाँ हम देख सकते हैं । दोनों के बीच आपस में ऊँच -नीच या अमीर-गरीब का कोई भेद भाव नहीं था । इसलिए मोरपाल को पसंद राजमा-चावल लेखक लाकर देता था और लेखक को पसंद छाछ मोरपाल भी लाकर देता था।

7. खाने के डिब्बे में राजमा देखकर मोरपाल की बाँछें खिल जाती थीं। इससे आप क्या समझते हैं ?

   अपनी गरीबी के कारण घर में राजमा खरीद नहीं सकता था। इसलिए उसे राजमा देखने या खाने का अवसर नहीं मिला था। इसलिए राजमा मोरपाल केलिए खास चीज़ थीं।

8. पटकथा (खाने की अदला बदली के बारे में)

स्थान - स्कूल के कमरे में।

समय - दोपहर के 1 बजे।

पात्र - 1. मिहिर, 11 साल का लडका, नीली-खाकी यूनीफॉर्म पहना है।
2. मोरपाल, 11 साल का लडका, नीली-खाकी यूनीफॉर्म पहना है।

घटना का विवरण - खेल घंटी के समय दोनों खाना खाने लगते हैं। दोनों आपस में बातें करते हैं।

संवाद -

मोरपाल - अरे मिहिर, जल्दी आओ हम साथ खाएँ।

लेखक - पुस्तक बैक में रखकर मैं अभी आया।

मोरपाल - वाह ! तुम्हारे टिफिन बॉक्स में यह क्या है ?

लेखक - यह तो राजमा है। क्या तुमने इसे अभी तक खाया नहीं ?

मोरपाल - नहीं यार। मैं इसे आज पहली बार देख रहा हूँ।

लेखक - मेरेलिए सामान्य सी चीज़ तुम्हारेलिए इतना खास ! खाकर कहिए कैसा है राजमा-चावल ? तुमने आज क्या लाया ?

मोरपाल - मैं तो छाछ लाया हूँ।

लेखक - वाह छाछ ! इसे खाए कितने दिन हुए ?

मोरपाल - तुम्हारे चावल और राजमा की कडी बहुत स्वादिष्ठ है।

लेखक - तुम्हारे सब्जी-चावल और छाछ भी बहुत बढिया है।

मोरपाल - सच ! तो हम एक काम करें, आज से हर दिन खाना अदला-बदली करके खाएँ।

लेखक - ज़रूर। आज से मेरे घर से लाते राजमा-चावल तुम खाओगे और तुम्हारे घर से लाते छाछ-चावल मैं।

मोरपाल - सचमुच यह तो बडी खुशी की बात है। खेलने जाना है न ?जल्दी खाएँ।

लेखक - ठीक है।

(दोनों खाने की अदला-बदली करके खाते हैं।)

9. मोरपाल की डायरी (पहली बार राजमा खाए दिवस)

तारीख : ....

आज मेरेलिए एक विशेष दिन था । पहली बार मैंने राजमा खाया । कितना स्वादिष्ठ था। खाने केलिए बैठने पर मेरे दोस्त मिहिर के टिफिन बॉक्स में रखे राजमा देखते ही मेरी बाँछें खिल गयी थीं । उसे खाने से पहले मैंने कभी राजमा देखा भी नहीं था । राजमा जैसी चीज़ मेरेलिए तो अपूर्व ही था, पर उसकेलिए वह एक साधारण चीज़ था। मैं और उसके बीच खेल घंटी में खाने की अदला बदली करने का निश्चय किया । उसके घर से लाया राजमा-चावल मैंने खाया और मेरे घर से लाया छाछ -चावल उसने भी। जैसे मैंने राजमा खाया, वैसे उसने छाछ को भी बहुत चाव से खा लिया । ऐसा लगा कि छाछ उसकी कमज़ोरी है। आज से हर दिन मैं अपने घर से छाछ लाकर उसे दूँगा।

10. मोरपाल का पत्र (पहली बार राजमा खाए दिवस)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से,एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रहा हूँ।

मेरा दोस्त मिहिर रोज़ राजमा लाता है। उसके खाने के डिब्बे में राजमा देखकर मैं खुशी से खिल जाता हूँ। उसके टिफिन बॉक्स से मैंने पहली बार राजमा खाया। कितना स्वादिष्ठ है। मेरी छाछ उसको बहुत पसंद है। उसके घर में रोज़ राजमा पकाता है। उसकेलिए वह सामान्य चीज़ है। वह बहुत निष्कलंग है। लेकिन स्कूल जाना उसे पसंद नहीं है। छुट्टी के दिन पर वह घर में नाचा करता। जो भी हो,अब मुझे यहाँ भी एक मनपसंद मित्र को मिला। मिहिर जैसे एक मित्र को मिलने पर मैं बहुत भाग्यशाली हूँ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? तुम्हारे माँ बाप से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में, तुम्हारा मित्र
नाम (हस्ताक्षर)
पता। नाम

11. लघु लेख – मित्रता / दोस्ती

दोस्ती जीवन की सबसे कीमती उपहारों में से एक है। जिसकी ज़िंदगी में सच्चे दोस्त हैं, वह भाग्यशाली है। यह रिश्ता मनुष्य खुद बनता है। सच्चा मित्र मुश्किल हालतों में भी हमारे साथ खडा होता है। यह तो अनमोल धन के समान होता है। इसकी तुलना हम दुनिया की किसी और चीज़ से नहीं कर सकते। सच्ची मित्रता से एक साधारण मानव भी श्रेष्ठ और पूजनीय अनुभव है। अमीर- गरीब, छोटा-बडा आदि बातों में मित्रता का कोई स्थान नहीं है।

12. मिहिर और मोरपाल के जीवन अनुभवों के आधार पर टिप्पणी

मिहिर संपन्न परिवार में जन्मा था। उनको रोज़ स्कूल जाना पसंद नहीं था । उनके पास बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदे बेहतर कपडे होने से उनकेलिए स्कूल यूनीफॉर्म एक बोझ थी। स्कूल में बिताए समय को वह अपने बचपन का सबसे खराब समय समझा करता था । लेकिन उनका साथी मोरपाल दरिद्र परिवार का था। वह रोज़ पंद्रह किलोमीटर साइकिल चलाकर स्कूल आता था । घर की कडी मेहनत और खेत मजूरी के बाद स्कूल का एकमात्र समय वह बच्चा बना रह सकता था । उसके पास एकमात्र कमीज़ -पैंट का नया जोडा उसकी स्कूल यूनीफॉर्म ही थी। स्कूल में बिताए समय उसकेलिए बचपन का सबसे अच्छा समय था। रविवार की छुट्टी उनकेलिए हफ्ते का सबसे बुरा दिन था।

PART - 2 (मैं स्कूल जाने में रोया करता। ----------------- वह से ही शादी में पहनकर आता।)

भाग – एक (स्कूली जीवन)

1. मिहिर कब खुशी से नाचता था ?
   स्कूल की छुट्टी हो जाने से
2. मिहिर ने स्कूल में बिताए समय को अपने बचपन का सबसे खराब समय समझा। क्यों ?
   क्योंकि मिहिर को स्कूल जाना पसंद नहीं था।
3. ' रविवार की छुट्टी का दिन उनकेलिए हफ्ते का सबसे बुरा दिन हुआ करता।'- ऐसा क्यों कहा गया है ?
   स्कूल से गहरा प्रेम होने से मोरपाल ओर उसके जैसे सहपाठी बिना नागा रोज स्कूल आना चाहता था। स्कूल उनको जीवन में सफलता पाने की जोश पैदा करता था। रविवार को स्कूल न होने से वे निराश हैं और उसे हफ्ते का सबसे बुरा दिन मानते हैं।
4. मोरपाल के लिए जीवन का सबसे अच्छा समय स्कूल में बिताए समय था। क्यों ?
   स्कूल जाते समय ही मोरपाल घर के काम से बचकर एक बच्चा बना रह सकता था और अपने मित्रों के साथ खुशी से रह पाता। स्कूल उसको अच्छी शिक्षा पाकर बडे आदमी बनने की जोश पैदा करता था। इसलिए वह अपनेगाँव से पंद्रह साइकिल चलाकर बिना नागा रोज़ स्कूल जाना चाहता था।
5. बचपन का दोस्त मोरपाल के बारे में मिहिर की यादें क्या–क्या हैं ?
   मोरपाल मिहिर का अच्छा मित्र था। वह एक गरीब परिवार का था। वह रोज़ 15 किलोमीटर साइकिल चलाकर स्कूल आता था। वह अपने घर से छाछ लाता था और वह मिहिर को देकर मिहिर का राजमा-चावल खाता था। मोरपाल रोज़ यूनीफॉर्म पहनना और स्कूल जाना पसंद करता था।

6. लेख – गरीब बच्चों की हालत

हर बच्चा खेलना-खाना बहुत पसंद करता है। पर बहुत से बच्चे गरीब परिवार में जन्म लेने के कारण अपने बचपन से वंचित हैं। उनको स्कूल जाने के बजाय काम पर जाना पडता है। स्कूल जाने का मौका मिलते बच्चे भी पढाई में ध्यान नहीं दे सकते। उन्हें माँ-बाप के साथ खेत-मजूरी करने जाना पडता है। कभी समय पर खाना भी नहीं मिलता। मोरपाल जैसे कई बच्चे हैं जो स्कूल को बहुत पसंद करते हैं, पढाई में आगे हैं। पर भी बीच में पढाई छोडकर पूरा समय काम में लग जाना पडता है। गरीब बच्चे ऐसे कई तरह की परेशानियों में जीने को मजबूर होते हैं।

7. टिप्पणी - मोरपाल की चरित्रगत विशेषताएँ

मिहिर की आई एम कलाम के बहाने फिल्मी लेख का पात्र है मोरपाल। वह गाँव के स्कूल में मिहिर का साथी था। वह लेखक के पास ही बैठता था। खेल घंटी में खाने की अदला-बदली करता था। लेखक के टिफिन बॉक्स में रखे राजमा को देखकर वह खुशी से खिल जाता था। अपनी गरीबी के कारण वह उसे पहली बार देखा था। घर की कमरतोड मेहनत और खेत-मजूरी से बचने केलिए वह रोज़ स्कूल आता था। स्कूल के 15 किलोमीटर दूर के किसी गाँव से साइकिल चलाकर आता था। स्कूल उसको अच्छी शिक्षा पाकर बडे आदमी बनने की जोश पैदा करता था । वह लेखक केलिए छाछ लाकर देता था। उसके पास एकमात्र कमीज़-पैंट का नया जोडा वह नीली-खाकी स्कूल यूनीफॉर्म ही थी, इसलिए इसे पहनकर वह सब कहीं जाता था। वह आठवीं तक ही पढाई कर सकता है।

8. वार्तालाप को आगे बढाएँ (मिहिर को स्कूल की छुट्टी पसंद है)

मोरपाल – यार, तुम कल कहाँ गए थे ?

मिहिर - बारिश में कोई स्कूल आएगा क्या ?

SREEJITH P. KOVOOR VARKALA SCRIBS

मोरपाल – तुम्हें स्कूल की छुट्टी उतना पसंद है ?
मिहिर - हाँ यार, मुझे तो स्कूल आना ही पसंद नहीं । इसलिए ऐसी किसी छुट्टी की इंतज़ार हमेशा करता रहता हूँ ।
मोरपाल – पर मुझे तो स्कूल की छुट्टी बुरी लगती है ।
मिहिर - पूछना भूल गया, तुम रोज़ नागा स्कूल क्यों आते हो ?
मोरपाल – स्कूल आते समय ही मैं घर के कमरतोड मेहनत से बचकर एक बच्चा बन जाता है ।
मिहिर - आज तुम छाछ नहीं लाया ?
मोरपाल – हाँ लाया । तुम राजमा भी लाया है न ?
मिहिर - नहीं भूला । अब हम क्लास में जाएँ । घंटी बजा होगा । क्लास टीचर को छुट्टी पत्र भी देना है ।
मोरपाल – ठीक है । जल्दी चलो ।

9. मिहिर का पत्र मामाजी को (स्कूल के अनुभवों के बारे में)

स्थान : ....
तारीख : ....

प्यारे मामाजी,

सादर प्रणाम । आप कैसे हैं ? घर में सब ठीक हैं न ? मैं यहाँ ठीक हूँ , मेरी पढाई अच्छी तरह से चल रही है ।

मैं इस पत्र के द्वारा अपने स्कूल के अनुभवों का वर्णन करना चाहता हूँ । मेरे स्कूल में मेरा सबसे अच्छा मित्र है मोरपाल । हम दोनों कक्षा में एकसाथ बैठते हैं, एकसाथ खाना खाते हैं । वह एक गरीब लडका है । उसका घर स्कूल से 15 किलोमीटर दूर है । मोरपाल साइकिल चलाता हुआ स्कूल आता है । उसके घर से लाया गया छाछ मुझे बहुत पसंद है । खेल घंटी में हम खाने अदला-बदली करते हैं । उसे तो मेरा राजमा चावल बहुत पसंद है । मेरे सभी दोस्त अच्छे हैं । लेकिन मुझे स्कूल जाना और यूनीफ़ॉर्म पहनना उतना अच्छा नहीं है । फिर भी मैं रोज़ स्कूल जाता हूँ ।

शेष बातें अगले पत्र में । मामीजी और भाई-बहनों को मेरा हैलो बोलिएगा ।

सेवा में, आपका भानजा
नाम (हस्ताक्षर)
पता । नाम ।

भाग – दो (स्कूल यूनीफार्म से जुडा कार्य)

1. मोरपाल शादी में भी स्कूली यूनीफ़ॉर्म पहनकर क्यों आता था ?
   क्योंकि मोरपाल के पास एकमात्र कमीज़ पैंट का नया जोडा वह नीली खाकी स्कूल यूनिफ़ॉर्म ही थी ।
2. मैं स्कूल की नीली-खाकी यूनीफ़ॉर्म से हमेशा चिढा करता । - इससे आपने क्या समझा ?
   लेखक के पास अपनी पसंद से बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदे बेहतर कपडे थे । इसलिए स्कूल की नीली-खाकी यूनीफ़ॉर्म से सदा चिढा करता था और उसे पहनना पसंद नहीं करता था ।

3. मिहिर का पत्र (शादी में भी मोरपाल यूनीफ़ॉर्म पहनकर आया देखकर)

स्थान : ....
तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए यह पत्र भेज रहा हूँ ।

मैंने अपने मित्र मोरपाल के बारे में पहले तुमसे बताया था न ? उसे मैंने हमेशा स्कूल यूनिफ़ॉर्म पहने ही देखा था । लेकिन मोहल्ले की किसी शादी में उसे वही स्कूल यूनिफ़ॉर्म पहने हुए देखा तो सचमुच मैं हैरान रह गया । कोई शादी में ऐसा आता है क्या ? हम तो शादी में बेहतर कपडे ही पहनते हैं न ? सोचा कि उससे इसके बारे में पूछ ले । बाद में ही मुझे पता चला कि उसके पास एकमात्र कमीज पैंट का नया जोडा वह नीली -खाकी स्कूल यूनिफ़ॉर्म ही थी । इसलिए वह हमेशा यही पहनकर घूमता था। कितनी बुरी हालत है उसकी । अगले दिन ही मैं अपने पास के कुछ नए कपडे उसको दूँगा ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे चल रही है ? तुम कब यहाँ आओगे ? तुम्हारे परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में, तुम्हारा मित्र
नाम (हस्ताक्षर)
पता । नाम

भाग – तीन (मोरपाल की पढाई छूटना)

1. मोरपाल पढाई छोडकर आज क्या करता है ?
   घर की कमरतोड मेहनत और खेत-मजूरी
2. मोरपाल की पढाई आठवीं के बाद छूट जाता है । इसका कारण क्या है ?
   गरीबी के कारण खेती में पिता की सहायता करने केलिए

3. वार्तालाप – मिहिर और मोरपाल के बीच (मोरपाल स्कूल छूट देने की बात)

मिहिर - नमस्ते मोरपाल ।
मोरपाल - नमस्ते ।
मिहिर - तुम क्यों उदासीन हो ? बताओ मुझसे । क्या बात है ?
मोरपाल - तुमसे छिपाने को कुछ नहीं है । कल से मैं स्कूल नहीं आऊँगा ।
मिहिर - क्या ? तुमने क्या बताया ?

मोरपाल - ठीक ही कहा है मिहिर।
मिहिर - फिर तुम क्या करने जा रहे हो ?
मोरपाल - कल से पिताजी को खेती में सहायता करने जाऊँगा।
मिहिर - तुमको स्कूल आना बहुत पसंद है न ?
मोरपाल - पसंद है। लेकिन मैं मज़बूर हूँ।
मिहिर - मुझे स्कूल आना बहुत पसंद नहीं है। कल से तुम भी नहीं हो तो ...
मोरपाल - कोई बात नहीं ... अच्छी तरह पढो। हम फिर मिलेंगे।
मिहिर - ठीक है मोरपाल।

4. मोरपाल की डायरी (वह कल से स्कूल नहीं जा पाने से दुखी होकर)

तारीख : ....

आज मेरेलिए दुखी दिन था। आज सबेरे पिताजी ने कहा कि कल से स्कूल नहीं जाएँ। मेरा परिवार बहुत गरीब है। इसलिए कल से पिताजी के साथ खेत-मजूरी करने जाना है। अब मैं आठवीं कक्षा में हूँ। मुझे आगे पढने का शौक है। मैं स्कूल जाए बिना मिहिर को कैसे मिलूँगा ? मेरे दोस्तो में सबसे जिगरी दोस्त मिहिर ही है। उससे राजमा-चावल कैसे खाऊँगा ? मेरे जैसे मिहिर भी दुखी होगा। मुझे सिर्फ एक जोडा नीली-खाकी यूनीफॉर्म ही थी। तब भी सारे दिन स्कूल जाना पसंद था। आगे मैं क्या करूँ ?

PART - 3 (नील माधव पांडा की ' आई एम कलाम ' देखते हुए मुझे ------------- जिनसे मिलकर हमारे कलाम को कुछ कहना है।)

भाग – एक (कलाम और रणविजय की दोस्ती)

1. फिल्म का नायक कौन था ?
   छोटू उर्फ कलाम
2. ' बाकी निन्यानवे कहानियों को कभी भूलना नहीं चाहिए जो हमारे बचपनों में है।'- लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ?
   समाज में बहुत कम लोग ही बचपन में देखते अपना सपना पूर्ण कर पाता है । बाकी अपने पारिवारिक परेशानियों के अनुसार जीने को मजबूर होते हैं। फिल्म में कलाम को अपनी मंजिल मिलती है लेकिन लेखक का मित्र मोरपाल अपना लक्ष्य पाने में सफल नहीं बनता । इसलिए लेखक ऐसा कहते हैं।
3. कलाम और रणविजय के बीच दोस्ती कैसे होती है ?
   पहली मुलाकात के समय दोनों के बीच घुडसवारी सीखने और पेड पर चढना सिखाने के लेन देन को लेकर दोस्ती हो जाती है।

4. टिप्पणी - छोटू उर्फ कलाम की चरित्रगत विशेषताएँ

' नील माधव पांडा ' की ' आई एम कलाम ' फिल्म का नायक है छोटू उर्फ कलाम । चाय की दूकान में काम करनेवाले कलाम का सपना था-स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालोंवाला राष्ट्रपति कलाम सा बनना । एक अलग जीवन , बेहतर जीवन का सपना दिखाने से कलाम को स्कूल जाना बहुत पसंद था । वह सबकुछ जल्दी से सीखनेवाला था तथा जीवन की कठिनाइयों को हराकर बडे आदमी बनने की आशा रखनेवाला एक ईमानदार लडका भी । घुडसवारी सीखने और पेड पर चढना सिखाने के लेन देन को लेकर रणविजय के साथ उसकी दोस्ती हो जाती है । अंग्रेज़ी सीखने में रणविजय उसकी मदद करता है तो कलाम रणविजय को हिंदी । स्कूल के हिंदी भाषण प्रतियोगिता केलिए भाषण तैयार करने में कलाम रणविजय की सहायता भी करता है । दोस्ती को ऊँचा स्थान देने से अपने ऊपर चोरी का आरोप लगाने पर अपने मित्र को बचाने केलिए वह उस आरोप को सह लेता है । राष्ट्रपति कलाम जी से मिलने वह गाँव छोडकर दिल्ली तो पहुँचता है पर उनसे मिल न सकता । अंत में अपने दोस्त के साथ स्कूल जाकर पढने में वह सफल बनता है।

5. टिप्पणी – कलाम और रणविजय के जीवन के अंतरों पर

कलाम गरीब घर का लडका था। पर उसका मित्र रणविजय तो राज परिवार का यानी ढाणा के राणा का बेटा था। कलाम केलिए स्कूल जाना सबसे बडा सपना था, पर रणविजय स्कूल जाना कतई पसंद नहीं करता था। कलाम चाय की दुकान में काम करता था। रणविजय तो अंग्रेज़ी स्कूल का छात्र था। रणविजय गुड सवारी जानता था तो कलाम पेड पर चढना जानता था। कलाम को अच्छी तरह हिंदी आती थी तो रणविजय को अंग्रेज़ी। कलाम को पहनने केलिए अच्छे कपडे तथा पढने केलिए पुस्तकें नहीं थे तो रणविजय के पास पहनने केलिए महंगे कपडे तथा पढने केलिए अनेक पुस्तकें थे। रणविजय सुख-सुविधाओं पर रहते समय कलाम अभावों में जीवन बिता रहा था। कलाम सीखने में तेज़ हो तो रणविजय कुछ आसली था।

भाग – दो (भाटीसा की दुकान जुडे कार्य)

1. छोटू कहाँ काम करता है ?
   भाटीसा की चाय की दुकान में
2. कलाम को चाय की दुकान में क्यों काम करना पडा ?
   वह गरीब परिवार का था।
3. छोटू उर्फ कलाम का सपना क्या था ?
   स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालों वाले राष्ट्रपति कलाम जैसा बनना।
4. माँ कलाम को चाय की दुकान थडी पर क्यों छोड जाती है ?
   काम करने केलिए
5. छोटू सिर्फ़ छोटू होकर नहीं जीना चाहता। - इसका मतलब क्या है ?
   वह कलाम जैसा बनना चाहता है।

6. छोटू खुद ही अपना नाम कलाम रख लेता है । क्यों ?

ढाणी के लोग उसे छोटू कहकर बुलाता था, जो वह पसंद नहीं करता था । उसका सपना था – स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालोंवाले राष्ट्रपति कलाम जैसा बनना । पढ-लिखकर कलाम जी जैसे बडे आदमी बनने के मोह से वह खुद अपना नाम कलाम रख लेता है । इस नामकरण में हम उसकी आकांक्षाओं का अक्स देख सकते हैं ।

7. ' लेकिन छोटू सिर्फ छोटू होकर नहीं जीना चाहता ।'- इससे आपने क्या समझा ?

चाय की दूकान में काम करनेवाला होने पर भी छोटू की आकांक्षाएँ बडी हैं । टीवी में देखे राष्ट्रपति कलाम जी का भाषण सुनकर, उनसे प्रभावित होकर वह अपना नाम कलाम रख देता है । स्कूल की अच्छी शिक्षा पाकर डॉ. कलाम जैसा बडा आदमी बनना उसका सपना है ।

8. छोटू की कलाकारी की प्रशंसा भाटी सा क्यों करता है ?

क्योंकि छोटू हर काम अच्छी तरह से करता है । उसके हाथ से बनाई चाय में जादू है । वह जल्दी ही भाषाएँ सीख लेता है ।

9. लूसी मैडम कलाम को क्या वादा देती है ?

वे उसे अपने साथ दिल्ली लेकर जाएँगी और राष्ट्रपति डॉ. कलाम जी से मिलवाएँगी ।

10. छोटू की डायरी (टीवी में राष्ट्रपति कलाम को देखने के बाद)

तारीख : ……………….

आज मेरे मन में एक विचार आया । वह मैं कभी साकार करूँगा । मुझे सब छोटू बुलाते हैं । आज से मेरा नाम कलाम है । टीवी में हमारे राष्ट्रपति डॉ. कलाम का भाषण मैंने देखा । कितना प्रभावकारी शब्द है उनका । भविष्य में मैं भी डॉ.कलाम जैसा बनूँगा । उनके नाम आज ही एक पत्र लिखूँगा । फिर उनसे मिलूँगा । इसकेलिए पढना ज़रूरी है । मैं कठिन परिश्रम करूँगा और सफल हो जाऊँगा ।

11. कलाम की डायरी (माँ छोटू को भाटीसा की चाय की दुकान में नौकरी केलिए छोड देती है ।)

तारीख : ……………….

आज मैं अपनी माँ के साथ गाँव से भाटी सा की चाय की थडी में आया । मुझे यहाँ काम करने केलिए छोडके मेरी माँ गाँव चली गई । मेरे घर की गरीबी ने मुझे यहाँ पहुँचाया । आगे मुझे यहाँ रहना पडेगा । कोई परवाह नहीं । मुझे एक बडी इच्छा है । राष्ट्रपति कलाम के समान बनना । मैं इस चाय की थडी से पैसा कमाकर अपने लक्ष्य तक पहुँचूँगा । ईमानदारी से काम करके सबकी प्रशंसा का पात्र बनना है । लेकिन सबसे पहले पढाई होनी चाहिए । अन्य बच्चों की तरह स्कूल जाकर पढाई करने का अवसर मुझे कब मिलेगा । यदि भाटी सा मेरी सहायता करेंगे तो मैं किसी न किसी तरह छोडा-थोडा पढना भी चाहता हूँ । जो भी हो मैं अपना प्रयास ज़ारी रखूँगा । छुट्टी मिलने पर माँ से फिर मिलूँगा । मेरे जीवन का यह अविस्मरणीय दिन मैं कभी नहीं भूलूँगा ।

12. वार्तालाप (माँ छोटू को भाटीसा की चाय की दुकान में नौकरी केलिए छोड देती है ।)

माँ - जी आप इस थडी के मालिक हैं ?
भाटी सा - हाँ । बताइए माँ, मैं आपकी क्या सहायता करूँ ?
माँ - यह मेरा बेटा है, इसे आपकी दुकान में काम पर रखने की कृपा कीजिए ।
भाटी सा - आप कहाँ से रही हैं ?
माँ - मैं जैसलमेर के पासवाले एक गाँव से आती हूँ । मैं अपनी गरीबी से इस बच्चे को बचाना चाहती हूँ । आप मेरी मदद कीजिए ।
भाटी सा - ठीक है । मैं इसे कितने रुपए दे दूँ ? छोटा लडका है ।
माँ - आप कुछ भी दीजिए, इसे अपने पास रखने की कृपा करें ।
भाटी सा - ज़रूर । एक महीना देख लेता हूँ । ठीक है तो अपने पास ही रख लूँगा ।
माँ - बडी मदद होगी साहब ।
भाटी सा - अंदर आओ बेटा, अपने सामान रख लो । क्या आपका बेटा जल्दी यहाँ के सारे काम सीख लेगा ?
माँ -ज़रूर साहब, मेरा बेटा सीखने में तेज़ है । वह जल्दी ही सब सीख लेगा ।
भाटी सा - तो ठीक है माँ, आप जाइए । मैं इसे देख लूँगा ।
माँ - धन्यवाद साहब ।
भाटी सा - धन्यवाद माँ ।

13. वार्तालाप – छोटू भाटी सा को चाय बनाकर देने पर

कलाम - प्रणाम भाटी मामा ।
भाटी सा - खुश रहो बेटा ।
कलाम - आप चाय पीजिए ।
भाटी सा - चाय ... तुमने बनाई ?
कलाम - हाँ जी ।
भाटी सा - अरे वाह !
कलाम - कैसे हैं भाटी मामा ?
भाटी सा - इस चाय में जादू है ।
कलाम - आपको पसंद आई ?
भाटी सा - बिलकुल, पहली बार ऐसी चाय पीता हूँ ।
कलाम - सही ?
भाटी सा - यह तो कलाकारी है । इसलिए आजकल ज़्यादा विदेशी लोग इसी दुकान में आते हैं । ज़रूर ऐसा ही होगा ।
कलाम - धन्यवाद भाटी मामा ।

14. वार्तालाप – कलाम और लूसी मैडम के बीच का (दिल्ली जाने की कलाम की इच्छा के बारे में)

कलाम - मैडम नमस्ते । क्या चाहिए ?
लूसी मैडम - नमस्ते कलाम । मुझे बस एक चाय चाहिए ।
कलाम - ठीक है, मैं अभी लाता हूँ ।
लूसी मैडम – भाटीसा कहाँ गया ?
कलाम - बाज़ार गया है ।
लूसी मैडम – (चाय पीकर) तुम्हारी चाय तो कमाल की है बेटा ।
कलाम - जी, आपकी तारीफ केलिए धन्यवाद । आप कब दिल्ली जाएँगी ?
लूसी मैडम – अगले हफ्ते । क्या है बेटा, बताइए ?
कलाम - जी, मैं दिल्ली जाकर राष्ट्रपति कलाम जी से मिलना चाहता हूँ । क्या मैं भी आपके साथ आऊँ ?
लूसी मैडम – ऐसा हो तो भाटीसा से कहकर तुम भी आओ मेरे साथ । मैं ज़रूर तुम्हें उनसे मिलवाऊँगी ।
कलाम - ठीक है मैडम । भाटीसा से छुट्टी माँगकर मैं ज़रूर आपके साथ आऊँगा ।
लूसी मैडम - ठीक है बेटा । तुम जाने की तैयारियाँ करो, अगले हफ्ते हम एकसाथ यहाँ से निकलेंगे । यही है चाय का पैसा । दिल्ली जाने के दिन मैं तुम्हें बुलाऊँगी । बाई ।
कलाम - आपकी इस मदद केलिए बहुत बहुत शुक्रिया मैडम । बाई ।

15. कलाम की डायरी – लूसी मैडम उसे दिल्ली ले जाने का वादा करती हैं ।

तारीख : ……………….

कैसे भूलूँ आज का दिन ?आज लूसी मैडम आई थीं … इधर चाय की दुकान में । मैंने बढिया चाय बनाकर दी । मुझसे बहुत बातें कीं । मेरी चाय उन्हें भी पसंद है । भाटीसा के समान वे भी बहुत तारीफ करती हैं । विदेशी हैं, फिर भी अपनापन का अनुभव होता है । उनसे कुछ अंग्रेज़ी शब्द सीख लिया है । उनसे बातें करने में कितना मज़ा आता है । आज उन्होंने वादा की … “ मुझे दिल्ली लेकर जाएँगी ” “ मुझे पढाएँगी ” बहुत खुश हूँ मैं … बहुत खुश हूँ ।

PART - 4 (एक दिन रणविजय को उसके स्कूल में भाषण देने ----------- मंज़िल मिलती है ।)

भाग – एक (रणविजय को स्कूल में भाषण प्रतियोगिता)

1. रणविजय बहुत परेशान हुआ । क्यों ?

एक दिन रणविजय को उसके स्कूल में भाषण देने केलिए कहा जाता है । लेकिन उसकी हिंदी इतनी अच्छी नहीं थी । इस कारण रणविजय बहुत परेशान हुआ ।

2. रपट तैयार करें (स्कूल के भाषण प्रतियोगिता में रणविजय को प्रथम स्थान मिला)

भाषण प्रतियोगिता ; रणविजय को प्रथम स्थान

स्थान : --------- कल जैसलमेर के सरकारी हाईस्कूल में भाषण प्रतियोगिता चलाई गई । इसमें ढाणा के राणा का बेटा कुँवर रणविजय को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ । पुरस्कार प्राप्ति के बाद उसने कहा कि अपने दोस्त कलाम ने यह भाषण तैयार किया था । इसलिए पुरस्कार उसकेलिए है । कुँवर की हिन्दी अच्छी न होने से कलाम उसकी मदद की थी । यह पुरस्कार प्राप्ति रणविजय और कलाम के बीच की दोस्ती की अनूठी निशानी भी है । पुरस्कार वितरण स्कूल के प्रधानाध्यापिका ने किया। ढाणी में कुँवर के विजय पर खुशी मनाई गई ।

3. वार्तालाप (स्कूल में भाषण प्रतियोगिता)

कलाम - अरे कुँवर, तुम क्यों उदासीन हो ?
रणविजय - कुछ नहीं छोटू ।
कलाम - क्या बात है ? जो भी हो, हल हो जाएगा ।
रणविजय - मुझसे कल स्कूल में हिंदी में भाषण देने केलिए कहा है ।
कलाम - वह अच्छी बात है न ?
रणविजय - बात यह है छोटू … मुझे हिंदी अच्छी तरह मालूम नहीं है ।
कलाम - यही बात है न … ? मैं तुम्हारी मदद करूँगा ।
रणविजय - कैसे ?
कलाम - मैं लिख दूँगा, तुम प्रस्तुत करो ।
रणविजय - ज़रूर । बहुत बहुत धन्यवाद छोटू ।
कलाम - तुम मेरा मित्र हो न … मुझसे धन्यवाद कहने की कोई आवश्यकता नहीं ।
रणविजय - ठीक है यार ।

भाग – दो (छोटू पर चोरी का आरोप)

1. राणा सा के कारिंदे कलाम पर चोरी का आरोप क्यों लगाते हैं ?

वे कलाम के घर की तलाशी लेने आते समय वहाँ कुँवर रणविजय की चीज़ों को पाने से ।

2. छोटू ने चोरी का आरोप सहन किया । क्यों ?

दोस्ती का प्रण न तोडने केलिए और रणविजय को राणा से उससे की दोस्ती की सज़ा मिलने से बचाने केलिए वह चोरी का आरोप सहन करता है ।

3. ‘ लेकिन कलाम फिर कलाम है ’- लेखक के इस प्रस्ताव पर अपना विचार लिखें ।

राणा सा के कारिंदे कलाम पर चोरी का आरोप लगाने पर भी मित्र रणविजय से की दोस्ती का प्रण न तोडने केलिए वह उसको सह लेता है । रणविजय को राणा से उससे की दोस्ती की सज़ा मिलने से बचाने केलिए वह ऐसा करता है । अभावों में रहने पर भी कलाम दोस्ती को ऊँचा स्थान देनेवाला होने से लेखक ऐसा कहते हैं ।

4. रपट (चोरी का आरोप लगने पर छोटू चाय की थडी छोडकर भाग जाता है ।)

चोरी का आरोप : बालक लापता

स्थान : .... चोरी के आरोप से दुखी बालक छोटू कल से जैसलमेर से लापता हो गया है । छोटू कुछ महीनों से भाटी सा की चाय की थडी में काम कर रहा था । इसके बीच ढाणी के राणा के बेटे से उसकी दोस्ती हो गयी । उसने छोटू को बहुत सारी चीज़ें भेंट स्वरूप दी थी । ये देखकर राणा सा के आदमी गलती से उसे चोर समझा था । रणविजय से असलियत जानने पर राणा और उसके आदमी छोटू की खोज में हैं ।

5. कलाम का पत्र (दोस्ती को बनाए रखने में अपनी परेशानी, चोरी का आरोप)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं अब यह पत्र भेज रही हूँ ।

यहाँ पर मेरा एक मित्र है जिसका नाम है रणविजय। वह राणा सा का पुत्र है । कुछ दिनों के पहले के राणा सा के कारिंदे मेरे घर की तलाशी लेने आये थे । कुँवर रणविजय की कुछ चीज़े मेरे घर से मिलीं और इससे मेरे ऊपर चोरी का आरोप लगाया गया । पर मैंने इस आरोप के सामने अपनी दोस्ती का प्रण नहीं तोडा । मैं चोरी का आरोप सह लेता था, पर रणविजय से हुई दोस्ती के बारे में नहीं बताया । इस प्रकार बहुत परेशानियाँ का अनुभव महसूस करते हुए पिछले हफ्ता चला गया ।

पता नहीं, कब मुझे अपने पसंदीता स्कूल जाकर पढने का अवसर मिलेगा ? मुझे मिलने तुम कब यहाँ आओगे ? जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र

(हस्ताक्षर)

नाम

सेवा में,

नाम

पता ।

भाग – तीन (छोटू की सफलता)

1.‘ छोटू को अपनी मंज़िल मिलती है ।‘ उसकी मंज़िल क्या थी ?

स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालों वाले राष्ट्रपति कलाम जैसा बनना ।

2. पोस्टर – फिल्म का प्रदर्शन

प्रगति फिल्म क्लब, चेन्नै

वार्षिक समारोह

2020 मार्च 18, बुधवार को
सुबह 10 बजे सिनी हॉल, चेन्नै

उद्घाटन – जिलाधीश

अध्यक्ष – क्लब प्रसिडेंट

* विविध प्रधियोगिताएँ
* सार्वजनिक सम्मेलन
* पुरस्कार वितरण

फिल्म का प्रदर्शन -

आई एम कलाम

प्रदर्शन दोपहर साढे 2 बजे से - 4 बजे तक

भाग लें ... लाभ उठाएँ ...

सबका स्वागत

3. कलाम की डायरी (फिल्म के अंत में कलाम का सपना साकार हो जाता है ।)

तारीख : ....

आज अपनी पसंद के स्कूल में मेरा पहला दिन । मेरा सपना साकार हो गया । स्कूल बस में मित्र रणविजय के साथ स्कूल गया । स्कूल यूनीफॉर्म पर टाई बाँधकर हम दोनों साथ- साथ चले । क्लास में उसके साथ बैठकर पढा । स्कूल की बात माँ से कहने पर वे भी खुश हुई । याद आया, चाय की दूकान में काम करते समय लफ्टन से रूठता था । लूसी मैडम ने मुझे दिल्ली ले जाकर कलाम जी से मिलवाने का वादा दिया था । चोरी के आरोप पर गाँव छोडकर दिल्ली पहुँचा था । लेकिन कलाम जी से मिल न सका । पर मेरी चिट्ठी कलाम जी तक जरूर पहुँचेगी । सब सपने जैसे लग रहे हैं आज ! भाटीसा आजकल बहुत खुश दिखते हैं । अपनी पढाई का खर्चा मैं खुद उठाऊँगा । अच्छी तरह पढ -लिखकर मैं कलाम जी जैसा बडा आदमी बनूँगा ।

4. छोटू उर्फ कलाम ने राष्ट्रपति डॉ.कलाम को देने लिखा पत्र

जैसलमेर
06 जून 2019

आदरणीय राष्ट्रपति साहब,

नमस्कार । आप कैसे हैं ? आशा है आप वहाँ कुशल से हैं । मैं आपसे अपनी मंज़िल बताना चाहता हूँ । मैंने अपनी चिट्ठी में थोडी लिखी है, पर बहुत समझना । चिट्ठी को तार समझकर जल्दी जवाब देना ।

मैं ढाणी के एक थडी में काम करनेवाला एक बच्चा हूँ, जिसकी जिंदगी आपने बदल दी । मेरा नाम छोटू है,लेकिन मैं अपने को कलाम मानता हूँ । मुझे छोटू अच्छा नहीं लगता । टीवी में आपका भाषण सुना । कितना अच्छा था । मैं समझता हूँ कि हर बच्चा लाल बहादुर शास्त्री बन सकता है और राष्ट्रपति कलाम भी बन सकता है । मैं आप जैसे बनना चाहता हूँ । लेकिन मैं बडा गरीब हूँ । मुझे स्कूल जाने की इच्छा है , मेरे मित्र रणविजय के साथ । लूसी मैडम ने आपसे मिलवाने का वादा किया था ।

मुझे आपसे बहुत-सी बातें करनी हैं । मालूम है आपको बच्चे बहुत पसंद हैं । पढ-लिखकर मुझे आपके जैसा होना है । इसलिए कृपया आप मेरी मदद कीजिए । बस इतना ही कहना है और हाँ ... धन्यवाद भी बोलना है ।

आपका आज्ञाकारी छात्र
कलाम (छोटू)

सेवा में
डॉ. अब्दुल कलाम
राष्ट्रपति
दिल्ली

5. सबसे बडा शो मैन **भाग – एक** (गाते-गाते अचानक माँ की आवाज़ फटकर ------------------ हटने को मज़बूर कर दिया ।)

1. गाने के बीच माँ की आवाज़ को क्या बदलाव आई ?
   माँ की आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल गयी ।
2. लोग क्यों चिल्लाने लगे ?
   गाते समय चार्ली की माँ की आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल जाने से ।
3. चार्ली की माँ स्टेज से हटने को क्यों मजबूर हो गई ?
   गाते समय उसकी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल जाने से लोग चिल्लाने लगे तो वे स्टेज से हटने को मजबूर हो गई ।
4. इस अभद्र शोर ने माँ को स्टेज से हटने को मजबूर कर दिया । उस समय माँ की हालत कैसी होगी ?
   जब तारीफ करनेवाले माँ की हालत समझे बिना शोर मचा रहे थे तब माँ ने बहुत तनाव का अनुभव किया होगा । किसी भी कलाकार यह सह पाना मुश्किल की बात है । उसे यह भय भी हुआ होगा कि अब किस प्रकार अपने बच्चे का पालन –पोषण करेगी ।

5. पोस्टर – म्यूज़िक प्रोग्राम

मशहूर गायिका हेन्ना जी की
म्यूज़िक प्रोग्राम
आयोजन – एल. एम.ए क्लब, लंदन

तारीख - 14 फरवरी को
समय - शाम को 7 बजे से
स्थान - लंदन के ओल्डरशॉट थिएडर में

प्रवेश टिकट से :
सादा सीट – 50 रॉयल सीट – 100
गायिका के साथ एक रात बिताने अवसर न खोने दें
आइए ... मज़ा लूटिए ...
सबका स्वागत

भाग – दो (चार्ली को वह अकसर ------------------ भीड को झेल पाएगा ।)

1. चार्ली परदे के पीछे खडा होकर आवाज़ के तमाशे को देख रहा था । यहाँ तमाशा क्या थी ?
   चार्ली की माँ स्टेज पर गाना गाते समय उनकी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल गई । लोग म्याऊँ- म्याऊँ की आवाज़ निकालने लगे । चार्ली को माँ का यह हाल तमाशा जैसे लगा ।
2. माँ और मैनेजर के बीच बहस क्यों हुआ ?
   मैनेजर चार्ली को स्टेज पर ले जाने की ज़िद को लेकर
3. मैनेजर किसकी ज़िद करने लगा ?
   चार्ली को स्टेज पर भेजने की
4. मैनेजर चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद क्यों करने लगा ?
   मैनेजर ने चार्ली को पहले कभी माँ के कुछ दोस्तों के सामने अभिनय करते हुए देखा था । इसलिए मैनेजर लोगों को शांत कराने केलिए चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद करने लगा ।
5. चार्ली को स्टेज पर भेजने से माँ क्यों डर गई ?
   पाँच साल का उसका बेटा शोर मचाती इस उग्र भीड को कैसे झेल पाएगा ।

6. वार्तालाप (माँ और मैनेजर के बीच का बहस)

मैनेजर - हेन्ना जी क्या हुआ ?
माँ - जी ... मेरा गला खराब हो गया है ।
मैनेजर - और एक बार कोशिश करो ।
माँ - कोई फायदा नहीं ।
मैनेजर - देखो लोग शोर मचा रहे हैं । उनको किसी न किसी तरह शांत कराना होगा ।
माँ - हे भगवान , अब मैं क्या करूँ ?
मैनेजर - लेकिन इसी तरह छोड दें तो वे सब कुछ तोड देंगे । मैं एक बात कहूँ ? तुम मानोगी न ?
माँ - बताइए ।
मैनेजर - आपका बेटा है न चार्ली ... उसको स्टेज पर भेजो, वह कुछ करके दिखाएगा ।
माँ - चार्ली ! आप यह क्या कह रहे हैं ?
मैनेजर - मैंने उसका अभिनय देखा है । बडा होशियार है । इसलिए कह रहा हूँ ।
माँ - पाँच साल का छोटा बच्चा इस उग्र भीड को कैसे झेल पाएगा ? मुझे गर लगता है ।
मैनेजर - घबराओ मत, मुझे उस पर विश्वास है ।
माँ - मैं क्या बताऊँ सर । और कोई उपाय नहीं तो आपकी मर्ज़ी ।

7. वार्तालाप (माँ चार्ली से स्टेज पर जाने का अनुरोध करती है ।)

माँ – चार्ली बेटा ... ।
चार्ली – क्या है माँ क्या हुआ ?
माँ – बेटा ... यह देखो ... लोग चिल्ला रहे हैं । उन्हें शांत कराना है ।
चार्ली – मैं क्या करना है बताइए ?
माँ – मैनेजर साब कहता है तुम स्टेज पर जाकर कुछ करो ।
चार्ली – मैं ? मुझे क्या आता है ?
माँ – मेरे दोस्तों के सामने जो किया वही स्टेज पर जाकर करो ।
चार्ली – इतना है तो मैं करूँगा माँ ।
माँ – तो मेरे साथ चलो बेटा ।
चार्ली – ठीक है माँ ।

भाग – तीन (बहुत मुबाहिसा के बाद ------------------ गाने सजने लगा ।)

1. ' पाँच साल का चार्ली स्टेज पर अकेला था '– उस समय चार्ली ने क्या सोचा होगा ?
   चार्ली ने सोचा होगा कि अपनी माँ की जगह लेते हुए मुझे हिम्मत से काम लेना होगा, माँ की तरह अच्छी तरह गाना होगा । यदि ऐसा नहीं हुआ तो लोग और शोर मचाएँगे, लेकिन माँ केलिए मुझे गाना होगा ।
2. चार्ली को स्टेज पर क्यों जाना पडा ?
   गाते समय उसकी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल जाने से लोग चिल्लाने लगे तो वे स्टेज से हटने को मजबूर हो गई । तब मैनेजर लोगों को शांत कराने केलिए चार्ली को स्टेज पर भेजने की ज़िद करने लगा तो उसको स्टेज पर जाना पडा ।

भाग – चार (गाना अभी आधा ही हुआ ------------------ वह नहीं लौटा ।)

1. चार्ली को स्टेज पर गाना पडा । क्यों ?
   माँ की आवाज़ फटने से
2. चार्ली ने बीच में गाना क्यों रोक दिया ?
   चार्ली का गाना आधा ही हुआ तो स्टेज पर पैसों की बौछार शुरू हो गई । उन पैसों को बटोरने केलिए उसने बीच में गाना रोक दिया ।
3. चार्ली की किस घोषणा हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया ?
   पहले मैं ये पैसे बटोरूँगा और उसके बाद ही गाऊँगा ।
4. चार्ली ने क्या घोषणा की ?
   पहले मैं ये पैसे बटोरूँगा और उसके बाद ही गाऊँगा ।
5. " पहले मैं ये पैसे बटोरूँगा "- ऐसा किसने कहा ?
   चार्ली ने
6. ' इस बात ने हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया ।'– कैसे ?
   चार्ली का गाना आधा ही हुआ तो स्टेज पर पैसों की बौछार शुरू हो गई । तब गाना रोककर उसने पैसे बटोरने के बाद आगे गाने की घोषणा की । इस बात ने हॉल को हँसीघर में तब्दील कर दिया ।
7. चार्ली को क्यों लगा कि मैनेजर खुद पैसे रख लेना चाहता है ?
   क्योंकि मैनेजर एक रूमाल लेकर आया और पैसे बटोरने लगा
8. चार्ली क्यों मैनेजर के पीछे व्याकुलता से लग गया ?
   क्योंकि उसे लगा कि मैनेजर सारे पैसे खुद लेना चाहता है ।
9. दर्शकों की हँसी क्यों बढ गई ?
   क्योंकि चार्ली रूमाल की पोटली में पैसे बाँध बैकस्टेज की ओर जाते मैनेजर के पीछे व्याकुलता से लग गया ।

10. पटकथा (स्टेज पैसे फेंकते देखकर चार्ली गाना रोककर पैसे बटोरकर आगे गाने के बारे में लोगों से घोषणा करता है ।)

स्थान - संगीत प्रोग्राम के एक हॉल में ।

समय - शाम को 7 बजे ।

पात्र - 1. चार्ली, करीब पाँच साल का बच्चा, पतलून और कमीज़ पहना है ।
2. चार्ली की माँ, करीब 40 साल की औरत, चुडीदार पहनी है । स्टेज के एक कोने में खडी है ।
3. मैनेजर, करीब 50 साल का आदमी, पतलून और कमीज़ पहना है । स्टेज के एक कोने में खडा है ।
4. हॉल भर में दर्शक शोर मचा रहे हैं ।

दृश्य का विवरण - स्टेज पैसे फेंकते देखकर चार्ली गाना रोककर पैसे बटोरकर आगे गाने के बारे में लोगों से घोषणा करता है ।

संवाद –

चार्ली - (हाथ उठाते हुए) मेरे प्यारे दर्शको, ... मेरे गाने केलिए इतने पैसे फेंकने केलिए बहुत शुक्रिया ।
दर्शक - गाना पसंद आया तो ऐसा ही है न ? पर तुमने गाना क्यों रोक दिया बेटा ?
चार्ली - पहले मैं ये पैसे बटोरकर माँ को दूँगा और उसके बाद ही आगे गाऊँगा । तब तक क्षमा करो ।
दर्शक - ठीक है बेटा । जल्दी आकर गाना पूरा करो बेटा ।
चार्ली - धन्यवाद । पैसे बटोरकर माँ को देकर मैं अभी आया । (चार्ली पैसे बटोरने लगता तो मैनेजर वहाँ आता है ।)
मैनेजर - चार्ली बेटा, पैसा बटोरने केलिए मैं तुम्हारी मदद करूँगा ।
चार्ली - (संदेह से) अच्छा ठीक है ।

(एक रूमाल लेकर मैनेजर पैसे बटोरता है । पैसे की पोटली लेकर मैनेजर बैकस्टेज की ओर जाता है । चार्ली व्याकुलता से उसका पीछा करता है । मैनेजर पैसे की पोटली माँ के हवाला करने के बाद ही चार्ली स्टेज लौटता है ।)

भाग – पाँच (चार्ली ने जनता में गुदगुदी ----------------- जन्म ले लिया था ।)

1. चार्ली ने लोगों में गुदगुदी फैला दी । कैसे ?
चार्ली का गाना सुनकर लोग पैसे फेंकने लगे तो वह गाना रोककर पैसा बटोरने लगा । मैनेजर पैसे बटोरकर बैकस्टेज जाने लगे तो शिकायत करते हुए उनके पीछे चला । वे पैसे की पोटली माँ को देने तक चार्ली वापस नहीं आया । उसके इन व्यवहारों ने जनता में गुदगुदी फैला दी । वे उसकी मासूमियत, प्रस्तुती और प्रवृत्तियों को स्वीकार कर रहे थे ।

2. लोगों ने छोटे बच्चे की तारीफ क्यों की ?
चार्ली ने अपनी प्रस्तुति और बाल सहज भोलापन से जनता में गुदगुदी फैले दी थी । इसलिए लोगों ने छोटे बच्चे की तारीफ की ।

3. दर्शकों ने चार्ली का अभिनंदन कैसे किया ?
दर्शकों ने देर तक खडे होकर तालियाँ बजाईं । कई लोगों ने माँ से हाथ मिलाकर चार्ली की तारीफ की ।

4. दर्शकों ने देर तक खडे होकर तालियाँ क्यों बजाईं ?
चार्ली ने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश किया । उसकी प्रस्तुति और मासूमियत से प्रभावित होकर दर्शकों ने देर तक खडे होकर तालियाँ बजाईं ।

5. अंत में दर्शकों ने तालियाँ बजाकर माँ का स्वागत क्यों किया ?
पाँच वर्षीय बालक चार्ली ने अपनी मासूमियत से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर चिल्लाते दर्शकों को अपने वश में लाया । उसने जनता में गुदगुदी फैला दी । इसलिए दर्शकों ने तालियाँ बजाकर माँ का स्वागत किया ।

6. ' चार्ली स्टेज पर पहली बार आया और माँ आखिरी बार ... ।' माँ का शो आखिरी हो जाने का कारण क्या था ?
चार्ली की माँ अपनी आवाज़ फटने के कारण स्टेज पर गा नहीं सकती थी । विवशता से उसे स्टेज छोडना पडा । गले का दर्द बढ रही थी । उनके बदले स्टेज पर उतरे चार्ली को लोगों ने एक अच्छे कलाकार के रूप में मान लिया था । इसलिए उन्होंने ऐसा निर्णय लिया होगा ।

7. ' उसने जन्म ले लिया था ।'– इसका क्या मतलब है ?
स्टेज में पहली बार उतरे पाँच साल के चार्ली ने अपने भोलापन से दर्शकों के मन को आनंदित कर दिया । इस उम्र में उसने ऐसा कर दिया तो बाद में बडे होकर वह क्या–क्या नहीं कर सकता । इसलिए ऐसा कहा गया है ।

8. समाचार (चार्ली का पहला शो)

माँ की आवाज़ फटी ; बेटा बना शो मैन

स्थान : .... लंदन के प्रसिद्ध थिएडर में पहली बार कदम रखा पाँच साल का बच्चा चार्ली ने स्टेज पर चमत्कार कर दिया । गाते वक्त अपनी माँ की आवाज़ को फटते देखकर मैनेजर के साथ वह स्टेज पर लाया गया । चार्ली निष्कलंकता से गा रहा था कि लोग प्रसन्न होकर स्टेज पर पैसा फेंकने लगे । बच्चा गाना बंद करके पैसे बटोरने लगा । इस व्यवहार ने हॉल को हँसीघर में बदल दिया । इसके बाद उसने दर्शकों से बातचीत की, नृत्य किया और अपनी माँ सहित कई गायकों की नकल उतारी । दर्शकों ने खुशी से तालियाँ बजाकर चार्ली का अभिनंदन किया । लोगों ने उसमें एक महान कलाकार को देख लिया था ।

9. माँ की डायरी (अपनी हालत और बेटे का पहला शो)

तारीख : ....

आज का दिन मैं कैसे भूलूँ ? ... दुख और खुशी भरा दिन । मेरा लाडला चार्ली आज शो मैन बन गया । उसका पहला शो हमेशा यादों में रहेगा । लगता है मैं आगे गा नहीं पाऊँगी । गले में खराबी है । गाते वक्त मेरी आवाज़ को फटते देखकर मैनेजर के साथ वह स्टेज पर लाया गया । मैं बहुत डर गयी थी । लेकिन बेटा चार्ली ने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश कराने लगा । खूब पैसा भी मिला । शैतान, मेरी फटी आवाज़ का भी नकल उतार दी । हे भगवान ! आगे भी मेरा लाडला शो में कमाल करे ।

10. चार्ली की माँ का पत्र

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ ।

कल मेरा एक म्यूज़िक प्रोग्राम था । क्या कहूँ ? प्रोग्राम शुरू ही हुआ था । मेरी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल गई । लोग चिल्लाने लगे । मैं स्टेज से हट गई । मैं इस विचार में था कि क्या करूँ ? तभी मैनेजर ने चार्ली को स्टेज पर ले गया । उसने कमाल कर दिया । लोग खुश हुए । उसे बहुत पैसे भी दिए । इस प्रकार मेरे मान की भी रक्षा हुई । मेरे लाडले को लोग एक शो मैन मान लिया है । लगता है आगे उसका समय रहेगा ।

वहाँ तुम्हारी नौकरी कैसे हो रही है ? तुम कब यहाँ आओगी ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

11. चार्ली की डायरी (पहला शो)

तारीख : ……………….

आज मेरेलिए कैसा दिन था, बता नहीं सकता । माँ के आवाज़ खराब होने से मुझे पहली बार स्टेज पर जाना पडा । लोग बहुत शोर मचा रहे थे । पहले मैं बहुत डर गया था । फिर भी मैं अपनी मासूमियत से मशहूर गीत जैक जोन्स गाना शुरू किया । गाना आधा ही हुआ तो स्टेज पैसों की बौछार हो लगी । फिर मैंने अपनी निष्कलंकता से गीत गाकर, बातचीत करके, नृत्य करके और गायकों की नकल उतारकर सबको खुश कराने लगा । खूब पैसा भी मिला । लोगों ने मुझे एक शो मैन की तरह मान लिया था । मेरा यह पहला शो हमेशा यादों में रहेगा ।

12. मैनेजर की डायरी

तारीख : ……………….

आज का दिन मेरी ज़िंदगी का सबसे महत्वपूर्ण दिन था । मैं ने जो कुछ किया था, वह बिलकुल सही निकला । चार्ली बहुत होशियारी से लोगों को अपने वश में कर लिया । केवल पाँच साल का बच्चा... बडी चतुराई है उसमें   ! मुझे डर था कि पाँच साल का लडका उग्र भीड को झेल पाएगा क्या ? उसका जैक जोन्स का गाना... बहुत अच्छा निकला । दूसरों की नकल उतारना... नाचना... सब अच्छे निकले । स्टेज पर लोग जमकर पैसे बरसने लगे । तारीफ करने लगे । मन खुशी से खिल उठने लगा । ज़रूर वह एक बडा शो मैन बनेगा ।

13. चैप्लिन स्मृति मंच के नेतृत्व में 16 अप्रैल 2021 को चैप्लिन स्मृति दिवस पर दिल्ली के करोलबाग में सर्कस फ़िल्म का समकालीन महत्व विषय पर संगोष्ठी होनेवाली है । इसकेलिए एक **पोस्टर** तैयार करें ।

चैप्लिन स्मृति मंच के नेतृत्व में

संगोष्ठी

विषय - सर्कस फ़िल्म का समकालीन महत्व

दिनांक - 16 अप्रैल 2021 को, (चैप्लिन स्मृति दिवस पर)
स्थान   - करोलबाग, दिल्ली
समय   - शाम 7 बजे

उद्घाटन   - जिलाधीश
विषय प्रस्तुति – क्लब प्रसिडेंट

सर्कस फ़िल्म का प्रदर्शन भी होगा ।

भाग लें ...   लाभ उठाएँ ...

सबका स्वागत

14. वार्तालाप - चार्ली और माँ (चार्ली के पहली शो के बाद)

माँ   – आज तूने कमाल कर दिया बेटे !
चार्ली   – लेकिन मैं खुश नहीं हूँ अम्मा ।
माँ   – क्या हुआ बेटा ?
चार्ली   – आप पर लोगों ने ...
माँ   – छोड दो बेटा, गाना बीच में रुक गया न ?
चार्ली   – आपकी आवाज़ को क्या हुआ माँ ?
माँ   – पता नहीं। लगता है अब गा नहीं सकती ...
चार्ली   – ऐसा न कहो माँ ।
माँ   – दर्शकों ने तुझे मान लिया है, इस पर मैं खुश हूँ ।
चार्ली   – भूल जाओ माँ, सब ठीक हो जाएँगे ।

6. अकाल और उसके बाद PART - 1 (कई दिनों तक ------------- हालत रही शिकस्त)

1. समानार्थी शब्द लिखें।

1. पास - समीप 2. दिन - दिवस 3. उदास - दुखी 4. एक आँखवाली – कानी 5. भीत - दीवार 6. अवस्था / स्थिति - हालत

7. शिकस्त - पराजय / टूट फूट 8. कई - बहुत 9. गश्त लगाना – इधर–उधर चलना

2. कवितांश का आशय

हिंदी के मशहूर प्रगतिशील कवि नागार्जुन ने अकाल और उसके बाद कविता के प्रस्तुत अंश में अनेक बिंबों और प्रतीकों से सजाकर अकाल की भीषणता का वर्णन किया है। कविता में अकाल से ग्रस्त एक घर का बारीक चित्रण है।

अकाल के प्रभाव से घर में कुछ भी अनाज नहीं था। इस कारण कई दिनों तक खाना पकाने कोई चूल्हा नहीं जलाता और दाना पीसने कोई चक्की के पास नहीं आता। यानी इनका कोई काम नहीं है। इसलिए दोनों अपनी निर्जीव हालत पर दुखी रही। घर में खाना मिलने पर ही उसका छोटा हिस्सा घर की कानी कुतिया को भी मिलता है। पर यहाँ कानी कुतिया पिछले कुछ दिनों से खाना न मिलने की निराशा से चूल्हा और चक्की के पास सोई थी। भूख मिटाने केलिए कुछ मिलने की तलाश में छिपकलियाँ दीवार पर इधर-उधर घूम रही थीं। दीपक हों तो उन्हें पतंग मिलते, लेकिन दीपक जलाने केलिए तेल कहाँ ? भोजन न मिलने से चूहों की हालत भी बहुत शोचनीय थी, दाने की तलाश में वे हार गए हैं। क्योंकि घर में खाना बनने पर ही उन्हें भी खाने केलिए कुछ मिलता है। अकाल का असर केवल मनुष्यों को ही नहीं अन्य जीव-जंतुओं पर भी पडता है। यहाँ कवि ने साधारण किसान की भूख और बेचैनी को व्यंग्यात्मक शैली में वर्णित किया है।

कवि नागार्जुन ने एक भी मानव पात्र को प्रस्तुत न करके अन्य जीव-जंतुओं और निर्जीव पदार्थों के ज़रिए घर की बुरी हालत का चित्रण अच्छी तरह किया है। कविता में अकाल ग्रस्त घर के माहौल को प्रस्तुत करने में कवि सफल हुए हैं। सरल भाषा में लिखी यह कविता बिलकुल अच्छी और प्रासंगिक है।

3. प्रश्नों का उत्तर लिखें।

1. कवितांश में किस हालत का चित्रण है ?

अकाल की भीषणता का

2. कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास

‘ चूल्हे का रोना ’ और ‘ चक्की का उदास होना ’– इसका मतलब क्या है ?

अकाल के कारण घर में दाना नहीं था। इसलिए खाना पकाने कोई चूल्हा नहीं जलाता और दाना पीसने कोई चक्की के पास नहीं आता। इस कारण दोनों अपनी निर्जीव हालत पर दुखी रही।

3. चूल्हा और चक्की क्यों बहुत दुखी हैं ?

अकाल के कारण घर में दाना नहीं था। इसलिए खाना पकाने कोई चूल्हा नहीं जलाता और दाना पीसने कोई चक्की के पास नहीं आता। इस कारण दोनों अपनी निर्जीव हालत पर दुखी रही।

4. कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त - ये पंक्तियाँ किस हालत की ओर इशारा करती है ?

यहाँ कवि अकाल की भीषणता की स्थिति का वर्णन करते हैं। अकाल से घर की हालत दयनीय बन गई है। अकाल की तीव्रता के कारण छिपकली, चूहा जैसे जीवों को भी खाने केलिए कुछ नहीं मिलता है।

5. कानी कुतिया कहाँ सोई हुई थी ? क्यों ?

कानी कुतिया उदास होकर चूल्हा और चक्की के पास सोई हुई थी। क्योंकि उसे कहीं से खाने को कुछ मिलने की संभावना नहीं थी।

6. छिपकलियाँ भीत पर गश्त क्यों लगा रही थीं ?

अकाल के कारण घर की हालत इतनी बुरी थी कि किसीकेलिए खाना नहीं था। इसलिए कीडों को न मिलने से यानी भूख से परेशान होकर छिपकलियाँ दीवार पर इधर-उधर चलती थीं। दीपक हों तो उन्हें पतंग मिलते, लेकिन दीपक जलाने केलिए तेल कहाँ ?

7. अकाल में चूहों की क्या हालत हो गई ?

भोजन न मिलने से अकाल में चूहों की हालत भी बहुत शोचनीय बन गयी, दाने की तलाश में वे हार गए हैं।

8. ‘ चूहों की भी रही शिकस्त ’- इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं ?

अकाल के कारण घर में खाना नहीं है।

9. टिप्पणी – अकाल का चित्रण

हिंदी के मशहूर कवि नागार्जुन ने आकाल और उसकेबाद कविता में अकाल से ग्रस्त एक घर का बारीक चित्रण किया है। अकाल के प्रभाव से घर में कुछ भी अनाज नहीं था। इस कारण कई दिनों तक खाना पकाने कोई चूल्हा नहीं जलाता और दाना पीसने कोई चक्की के पास नहीं आता। इसलिए दोनों अपनी निर्जीव हालत पर दुखी रही। पिछले कुछ दिनों से चूल्हे जलने और चक्की के चलने की प्रतीक्षा में पडी कानी कुतिया अंत में उनके पास ही सो गई। घर की गरीबी के कारण दीया नहीं जलाता, कीडे नहीं आते। इस कारण भूख मिटाने केलिए कुछ मिलने की तलाश में छिपकलियाँ दीवारों पर इधर-उधर घूम रही थीं। चूहों को खाने केलिए कुछ नहीं मिला था। इसलिए उनकी हालत भी अत्यंत दयनीय थी। अकाल का असर केवल मनुष्यों को ही नहीं अन्य जीव-जंतुओं पर भी पडता है। एक भी मानव पात्रको ही नहीं अन्य जीव-जंतुओं पर भी पडता है। एक भी मानव पात्र को प्रस्तुत न करके अन्य जीव-जंतुओं और निर्जीव वस्तुओं के ज़रिए घर की बुरी हालत यानी अकाल की भीषणता का चित्रण कवि ने आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया है।

10. टिप्पणी – अकाल की परेशानियाँ

अकाल बहुत दुखदायक है । इस अभावयुक्त हालत में चारों ओर विषाद और निराशा छा जाती है । पाठभाग में भी हम यह देख सकते हैं । देश में अकाल फैलने के कारण घर की हालत बहुत बुरी थी । कई दिनों तक चूल्हा रोया । चूल्हे में रखकर पकाने केलिए कोई दाना घर में नहीं था । चक्की भी उदास रही । चक्की में डालकर पीसने केलिए अनाज घर में नहीं था । खाने की प्रतीक्षा में चक्की और चूल्हे के पास पडी हुई कानी कुतिया सो गयी । दीवार पर छिपकलियों की गश्त लगी रही, दीपक हो तो उन्हें पतंग मिलते, लेकिन दीपक जलाने केलिए तेल कहाँ ? चूहों की हालत भी शिकस्त रही । घर के अंदर ही नहीं बाहर खेतों में भी अनाज नहीं था । अकाल मनुष्य के साथ-साथ पशु-पक्षियों को भी भूखमरी का शिकार बना देता है । अकाल भोजन की समस्या, भूख-प्यास की परेशानी तथा कई बीमारियाँ फैलने का कारण भी बनता है । अकाल की परेशानियों से बचने का उचित उपाय हमें खुद ढूँढना है ताकि हम सुख भरा जीवन बिता सके ।

11. पोस्टर (संदेश) **points – जल संरक्षण**

1. जल प्रकृति का अमूल्य वरदान...
   सभी का अस्तित्व जल पर निर्भर ।
2. जल जीवामृत है...
   जल नहीं है तो कल नहीं ।
3. जल का दुरुपयोग मत करो...
   जल का उपयोग सावधानी से।
4. जलस्रोतों को प्रदूषित मत करो...
   शुद्ध जल स्वस्थ जीवन का आधार ।
5. पहाडियों को गिराना,जंगल-पेडों की कटाई,
   जलस्रोतों व खेतों को मिटाना आदि बंद करो...
   जल की किल्लत से रक्षा पाओ ।
6. जल को संजोके रखो...
   हमारेलिए... आगामी पीढी केलिए...।
7. भूमिगत जल शोषण पर रोक लगाएँ...
   पेयजल केलिए संभाव्य लडाई से बच दें ।
8. बारिश के पानी को बेकार बहने न दें...
   पानी को धरती में उतरने दो ।

विश्व जल दिवस – मार्च 22

PART - 2 (दाने आए ------------- कई दिनों के बाद)

1. समानार्थी शब्द लिखें।

1. दाना - अनाज 2. अंदर - भीतर 3. पाँख - पंख, पर 4. कौआ - काक 5. आँखें चमक उठीं – घर के सभी संतुष्ट हो गए

2. कवितांश का आशय

अकाल और उसके बाद कविता के प्रस्तुत अंश में कवि नागार्जुन ने अनेक बिंबों और प्रतीकों से सजाकर अकाल के बाद की खुशहाली का वर्णन किया है ।

अकाल के दिन बीत जाने से घर की हालत एकदम बदल गयी । घर में कई दिनों के बाद दाने अए । घरवालों ने चूल्हा जलाया और आँगन से ऊपर धुआँ उठने लगा । घर के अंदर के चूल्हा,चक्की जैसे निर्जीव वस्तुओं और सभी जीव जंतुओं की आँखें नए जीवन आने की खुशी में चमक उठीं । घर से खाने की बाकी चीज़ें बाहर फेंकने पर उसे चुगकर तेज़ी से उड जाने की तैयारी में कौए ने अपनी पाँखें खुजलाईं । यानी कौए भी नई आशा के साथ आगे बढने केलिए तैयार हो उठते हैं । अकाल के दिन खतम होने पर घर के अंदर दाना आने से मनुष्यों के साथ सभी जीव-जंतु संतुष्ट हो जाते हैं ।

यहाँ कई दिनों के बाद फिर सबके मन में आई खुशी का,घर की बदली हालत का वर्णन सरल शब्दों में किया है । अकाल के बाद की खुशहाली की ओर सबका ध्यान आकर्षित करनेवाली यह कविता की प्रासंगिकता सार्वकालिक है ।

3. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. कवितांश में किस हालत का चित्रण है ?

   अकाल के बाद की खुशहाली

2. ‘ चमक उठीं घर भर की आँखें ’– इसका मतलब क्या है ?

   अकाल के दिन बीत जाने पर कई दिनों के बाद घर में अनाज आने से खाना पकाया गया । इसलिए घर के अंदर के चूल्हा, चक्की जैसे निर्जीव वस्तुओं और सभी जीव जंतुओं की आँखें नए जीवन आने की खुशी में चमक उठीं ।

3. ‘ धुआँ उठा आँगन से ऊपर ’– इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं ?

   अकाल दूर होने से कई दिनों के बाद घर में दाने आए। इससे चूल्हा जलाने लगा, आँगन से ऊपर धुआँ उठने लगा । घर में रहनेवाले सभी जीवों की आँखें खुशी से चमकने लगीं । क्योंकि आज उनको खाना मिलनेवाला है ।

4. कौआ अपनी पाँखें खुजलाने का कारण क्या है ?

   अकाल के बाद घर में खाना पकाया गया । इसलिए घर से खाने की बाकी चीज़ें बाहर फेंकने पर उसे चुगकर तेज़ी से उड जाने की तैयारी में कौआ अपनी पाँखें खुजलाया होगा । यानी कौए भी नई आशा के साथ आगे बढने केलिए तैयार हो उठते हैं ।

5. ‘ घर भर की आँखें ’– कवि के अनुसार यहाँ घर के सदस्य कौन–कौन हैं ?

   चूल्हा, चक्की, कानी कुतिया, छिपकली, चूहा और कौआ ।

6. दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
   धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद - इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं ?

   कवि ने यहाँ अकाल के बाद की स्थिति का वर्णन किया है । अकाल के बाद घर में दाने आने पर घर के आँगन से ऊपर धुआँ उठता है । अर्थात् चूल्हा जलने लगा है । यह घर में खाने पकाने की ओर इशारा करता है । अकाल की भीषण हालत अब बदल गई है ।

7. टिप्पणी – अकाल के बाद का चित्रण

हिंदी के मशहूर कवि नागार्जुन ने आकाल और उसकेबाद कविता में अकाल से ग्रस्त एक घर के अकाल के बाद की हालत का बारीक चित्रण किया है। अकाल के समय में जो दयनीय अवस्था थी, अकाल के बाद वह बदल गई। अकाल के बाद घर के भीतर दाना आने पर मनुष्य ही नहीं, सभी जीव-जंतुओं और निर्जीव वस्तुओं में खुशी का अनुभव होने लगा। दाना मिलने पर खाना पकाने केलिए चूल्हा जलाया गया। उस समय बहुत दिनों के बाद घर के आँगन से ऊँपर धुआँ उठता हुआ दिखाई देता है। घर के अंदर के चूल्हा, चक्की जैसे निर्जीव वस्तुओं और सभी जीव-जंतुओं की आँखें नए जीवन आने की खुशी में चमक उठीं। घर से खाने की बाकी चीज़ें बाहर फेंकने पर उसे चुगकर तेज़ी से उड जाने की तैयारी में कौए ने अपनी पाँखें खुजलाईं। अकाल के दिन खतम होने पर घर के अंदर दाना आने से मनुष्यों के साथ-साथ सभी जीव-जंतु भी संतुष्ट हो जाते हैं। अकाल के समय धीरे-धीरे बदलने पर मनुष्य के जीवन में सुख भरे दिन वापस आते हैं और पुन : अपनी संप्पन्नता को प्राप्त कर लेती है। प्रकृति भी पुन: अपने स्वरूप को प्राप्त करती है और समस्त प्राणी चैन की साँस लेते हैं। यहाँ प्रकृति की बदली हालत यानी अकाल के बाद की खुशहाली का चित्रण कवि ने आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया है।

8. टिप्पणी - कविता में कई दिनों तक और कई दिनों के बाद दुहराने का तात्पर्य

नागार्जुन की एक छोटी-सी कविता है अकाल और उसके बाद। इस कविता के पहले बंद की चार पंक्तियों में अकाल की भीषणता का वर्णन और दूसरे बंद के चार पंक्तियों में अकाल के बाद की खुशहाली का वर्णन करते हैं। बहुत दिनों तक पडे रहे लंबे अकाल के वर्णन करने केलिए कवि कई दिनों तक कई बार दोहराते हैं। इसी प्रकार कई दिनों के अकाल के दुख के बाद फिर आई खुशी का वर्णन करने केलिए कई दिनों के बाद का प्रयोग कवि दोहराते हैं। घर में कई दिनों तक खाने के अभाव में मनुष्य ही नहीं सभी निर्जीव वस्तुएँ बहुत विवश होते हैं। अकाल के बाद घर के भीतर दाना आने पर मनुष्य ही नहीं सभी जीव-जंतुओं और निर्जीव वस्तुओं में खुशी का अनुभव होते हैं। कई दिनों तक शब्द वस्तुओं की चेतनहीन हालत और कई दिनों के बाद शब्द चेतनयुक्त हालत सूचित करता है। कई दिनों तक ज़ारी रहा दुख कई दिनों के बाद खुशी में बदल गया। कई दिनों के दुख के बाद की खुशी हमें समझाने केलिए कवि ने ऐसा प्रयोग किया है। सुख और दुख मानव जीवन रूपी सिक्के के दो पहलू हैं।

9. लेख – खेती का महत्व

खेती नहीं तो खाना नहीं। खाना जीवों की आधारभूत आवश्यकता है। भोजन के बिना जीवों को जीवित रह न सकते। संसार का अन्नदाता किसान तपती हुई धूप,कठिन सर्दी और भारी वर्षा में कठिन परिश्रम करके अनाज उत्पन्न करते हैं। देश की उन्नति तथा उसके समग्र विकास में खेती का स्थान उत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत कृषि प्रधान देश है। कृषि के माध्यम से खाद्य उत्पन्न होता है। आज कई कारणों से खेती कम होती जा रही है। इसलिए किसानों का आदर करके खेती को बढावा देना चाहिए।

10. पोस्टर (संदेश) points – खेती का संरक्षण

1 खेती पर हमारा जीवन निर्भर...
खेती नहीं तो हम नहीं।
2 खेती और किसान को प्रोत्साहन दें...
किसान हमारे अन्नदाता हैं।
3 अच्छे बीज,खाद,आर्थिक सहायता आदि से किसानों की सहायता करें...
खेती को बढावा दें,खेती का विकास करें।
4 खेती नहीं तो खाना नहीं...
खाना जीवों की अभूतभूत आवश्यकता है।
5 भारत एक कृषिप्रधान देश है...
किसानों की उन्नति के बिना देश की उन्नति नहीं होती।

देशीय किसान दिवस – दिसंबर 23

11. पोस्टर - भोजन के दुर्व्यय के विरुद्ध

1. भोजन है जीवन, अन्न ही है भगवान
2. खाने की बर्बादी न करें...
बचे हुए भोजन का सदुपयोग करें।
3. बचा हुआ अच्छा भोजन
ज़रूरतमंद तक पहुँचाएँ।
4. भोजन का दुर्व्यय ... सबसे बडा पाप है जीवन में
इसलिए जितनी हो भूख ... उतना ही भोजन थाली में।

7. ठाकुर का कुआँ **PART - 1** (जोखू ने लोटा मुँह से लगाया तो ------------- उसने वह बदबूदार पानी पीने को न दिया।)

1. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में चर्चित मुख्य समस्या क्या है ?
ऊँच-नीच का भेदभाव
2. गंगी ठाकुर के कुएँ से पानी ले नहीं सकती थी। क्यों ?
गंगी निम्नजाति की मानी जाती है। / छुआछूत की प्रथा है।
3. दूर से लोग डाँट बताएँगे। क्यों ?
वे निम्न जाति के हैं।
4. खराब पानी पीने से बीमारी बढ जाएगी।– पानी के खराब होने के क्या–क्या कारण हो सकते हैं ?
कूडे कचरों से पानी गंदा होता है। कुआँ साफ न होगा तो पानी गंदा होगा। कुएँ में जानवरों के मरने से पानी गंदा होगा।
5. यहाँ पानी की खराबी दूर करने का क्या उपाय बताया गया है ?
पानी को उबालना
6. 'ठाकुर के कुएँ पर कौन चढने देगा ?' गंगी क्यों इस प्रकार सोचती है ?
गंगी चमार जाति की है। वर्ण व्यवस्था के अनुसार वह अछूत थी। उनकी छाया तक ऊँच जाति अपवित्र मानी जाती थी। इसलिए गंगी ठाकुर के कुएँ के पास नहीं जा सकती।

7.' गंगी ने जोखू को गंदा पानी पीने को न दिया ।'– क्यों ?

क्योंकि वह जानती थी खराब पानी से पति की बीमारी बढ जाएगी ।

8. गंगी नहीं जानती थी कि पानी को उबाल देने से उसकी खराबी जाती रहती है। - यहाँ किस सामाजिक वास्तविकता प्रकट होती है ?

यहाँ गंगी की अशिक्षित हालत का संकेत है । निम्नजाति के लोग शिक्षा से वंचित रह जाते हैं । इसलिए उनमें अनजानी, अंधविश्वास आदि भी देखे जाते हैं । जाति के नाम पर किसीसे शिक्षा मिलने का अपना अधिकार छीनना उचित नहीं है ।

9. ' मगर दूसरा पानी आवे कहाँ से ? '- यहाँ जोखू की किस की ओर संकेत है ?

जोखू निम्नजाति में जन्मा था । उस समय जातिप्रथा ज़ोरों में था । निम्नजाति के लोगों को उच्च जाति के लोगों के कुएँ से पानी लेने का अधिकार नहीं था । पीने का पानी तक उन्हें निषेध था ।

10. ' पानी कहाँ से लाएगी ? '- जोखू के इस कथन पर अपना विचार लिखें ।

गंगी पानी लाते कुएँ में कोई जानवर गिरकर मरा है । निम्नजाति के होने से उन्हें ठाकुर और साहू के कुएँ से पानी लाने की अनुमति नहीं थी । यदि ऐसा किया तो उच्चजाति के लोग उसे जान से मार डालेगा । कोई तीसरा कुआँ गाँव में नहीं था । इसलिए शुद्ध पानी लाने की कठिनाई की ओर यहाँ संकेत है ।

11. ' क्या एक लोटा पानी न भरने देंगे '- गंगी के इस कथन पर अपना विचार लिखें ।

अछूत होने के कारण गंगी को कुएँ से साफ पानी भरने का भी हक नहीं है । सभी अधिकार समाज में उच्च माननेवालों के पास है । गंगी को समझ में नहीं आती कि लोग कैसे श्रेष्ठ बनते हैं । यहाँ समाज की असमानता के विरुद्ध गंगी का आक्रोश ही प्रकट होता है ।

12. हाथ-पाँव तुडवा आएगी और कुछ न होगा । - जोखू के इस कथन पर आपका विचार क्या है ?

यह वाक्य गंगी से जोखू का कथन है । इस कथन के ज़रिए जोखू एक सामाजिक सत्य को हमारे सामने प्रस्तुत करता है । इसमें छुआछूत के भावना के विरुद्ध जोखू का आक्रोश हम सुन सकते हैं । निम्न जाति के लोगों को उच्च माननेवालों के कुएँ से पानी भरने की अनुमति नहीं थी । ये लोग उच्च वर्ग के लोगों की क्रूरता सहकर जीने को विवश थे ।

13. जोखू लोटे का पानी क्यों पी नहीं सका ?

लोटे के पानी से सख्त बदबू आ रही थी । ऐसे बदबूदार पानी पीने से बीमारी बढ जाने की संभवना होने से पत्नी गंगी ने उसे वह पानी पीने न दिया था ।

14. जोखू ने पूछा - पानी कहाँ से लाएगी ? – इस शंका के क्या-क्या कारण हैं ?

जोखू के गाँव में उच्च जातिवाले ठाकुर और साहू के दो कुएँ हैं । निम्न जाति के लोगों के कुएँ का पानी खराब हो गया था । निम्नजातिवाले लोगों को ठाकुर और साहू के कुएँ से पानी लेने की अनुमति नहीं है । इसलिए जोखू ने गंगी से ऐसा कहा ।

15. गंगी गाँव के कुएँ से पानी नहीं ले सकती थी । क्यों ?

गाँव के अन्य दो कुएँ ऊची जाति के लोग हैं । निम्न जाति की स्त्री होने के कारण गंगी वहाँ से पानी नहीं ले सकती थी ।

16. गंगी यह न जानती थी कि पानी को उबालने से उसकी खराबी दूर हो जाती है । क्यों ?

क्योंकि वह अशिक्षित थी ।

17. पटकथा (शुरुआत भाग)

स्थान – एक झोंपडी का भीतरी भाग ।

समय – दोपहर के दो बजे ।

पात्र – गंगी और जोखू । (गंगी 40 औरत, धोती और चोली पहनी है । जोखू 50 का आदमी, धोती और बनियन पहना है ।)

दृश्य का विवरण – प्यास से परेशान होकर जोखू कमरे की पलंग पर बैठा है । उसको गंगी पीने केलिए लोटे में पानी देती है ।

संवाद –

जोखू – बहुत प्यास लग रही है । थोडा पानी लाओ ।

गंगी – अभी लाती हूँ ।

जोखू – यह कैसा पानी है ? तू यह पानी कहाँ से लायी ?

गंगी – गाँव के कुएँ से । कल ही लायी हूँ । क्या हुआ ?

जोखू – मारे प्यास के पिया नहीं जाता । गला सूखा जा रहा है और तू सडा पानी पिलाए देती है !

गंगी – (लोटा नाक से लगाते हुए) हाँ बदबू है । मगर कैसे ? कल लाते समय बदबू नहीं थी । कोई जानवर कुएँ में गिरकर मरा होगा ।

जोखू – प्यास सह नहीं पाता । ला, थोडा पानी, नाक बंद करके पी लूँ ।

गंगी – मैं नहीं दूँगी, खराब पानी से आपकी बीमारी बढ जाएगी । मैं कहीं से दूसरा पानी लाकर देती हूँ । आप लेट जाइए ।

जोखू – दूसरा पानी ! कहाँ से लाएगी ?

गंगी – ठाकुर और साहू के दो कुएँ तो हैं, क्या एक लोटा पानी न भरने न देंगे ?

जोखू – हाथ–पाँव तुडवा आएगी । बैठ चुपके से ।

गंगी – आप चिंता मत कीजिए । मुझे पता है क्या करना है ।

जोखू – ठीक है । तुम्हारी मर्ज़ी । जल्दी वापस आना ।

(मन में साहस भरकर गंगी रस्सी और घडा लेकर ठाकुर के कुएँ की ओर निकल जाती है ।)

17. समाचार तैयार करें ।

कुएँ में मरा जानवर ; पीने के पानी केलिए तरसते लोग

स्थान : .... यहाँ के निम्न वर्ग के लोग के कुएँ में पिछले दिन एक मरे जानवर को दिखाई दिया । पानी गंदा होने से उससे बदबू आ रही है । निम्न वर्ग के लोगों के पानी लेने का एकमात्र आश्रय यह कुआँ था । पेयजल के अभाव से यहाँ लोग बहुत मुसीबत में हैं । पिछले दिनों से इस कुएँ के पानी का उपयोग करते लोग आशंका में है । ऊँचे वर्ग के लोगों के कुएँ तक जाने की अनुमति न होने के कारण गरीब लोग चिंतित है ।

PART - 2 (रात के नौ बजे थे। ------------- परंतु घमंड यह कि हम ऊँचे हैं !)

1.' हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं '– यहाँ किस सामाजिक समस्या की ओर संकेत है ?
जातिप्रथा

2. ' इस कुएँ का पानी सारा गाँव पीता है। किसीकेलिए रोक नहीं, सिर्फ ये बदनज़ीब नहीं भर सकते।'- गंगी क्यों इस प्रकार सोचती है ?
क्योंकि वे नीची जाति के हैं।

3. यहाँ बदनज़ीब कौन है ?
निम्न जाति के लोग

4. गंगी क्यों सोचती है ठाकुर जैसे लोग छंडे हैं ?
क्योंकि ठाकुर जैसे लोग चोरी, जाल फरेब, झूठे मुकदमे आदि करते हैं।

5. इस कुएँ का पानी सारा गाँव पीती है। - किस कुएँ का ?
ठाकुर के

6. मैदानी बहादुरी का तो अब न ज़माना रहा है, न मौका।– इसका क्या मतलब है ?
पुराने ज़माने में उच्च वर्ग के लोग अपनी शक्ति के सहारे गरीबों का शोषण करते थे। आज के बदलते ज़माने में कानून को मान्यता मिली है। लेकिन संपन्न वर्ग के लोग रिश्वत और शिफ़ारिश के सहारे कानून को भी वश में कर लिए हैं।

7. गंगी का विद्रोही दिल किस पर चोटें करने लगा ?
रिवाज़ी पाबंदियों और मजबूरियों पर

8. रिवाज़ी पाबंदियों और मजबूरियों पर गंगी का दिल विद्रोह करता है। क्या आप इसका समर्थन करते हैं ? क्यों ?
पानी प्रकृति का अनमोल वरदान है। इसपर सबका समान अधिकार है। पानी भरने से कुछ लोगों को मना करना बिलकुल अन्याय है। इसके विरुद्ध विद्रोह करना ही उचित है।

9. ' हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं ? '- इन व्यवहारों से गंगी के कौन-कौन से मनोभाव प्रकट होते हैं ?
गंगी विद्रोही नारी है, जातिप्रथा वह पसंद नहीं करती। वह जातिप्रथा के विरुद्ध आवाज़ उठाना चाहती है।

10. ' हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं ? '- गंगी के इस विचार पर आपका मत क्या है ?
समाज में व्याप्त जाति भेद पर गंगी का आक्रोश यहाँ प्रकट है। उच्च वर्ग के ठाकुर, साहू आदि बडे अन्याय करते हैं। लेकिन उनका सब कहीं आदर होता है। अछूत असहाय होकर अत्याचार के शिकार हो रहे हैं। यह हालत तो बदल जाना ही होगा। जन्म के आधार पर किसीको नीच मानना निंदनीय अपराध है। ऊँच-नीच की भावनाओं को तोडकर एक मन से करने से ही सामाजिक उन्नति संभव है। जाति भेद मानवता व ईश्वर के प्रति अपराध है।

11. ऊँच–नीच के भेदभाव पर अपना विचार क्या है ? लिखें।
हमें ऊँच–नीच के भेदभावों को छोडना चाहिए। जाति प्रथा के कारण गरीब लोगों को कई प्रकार की सामाजिक कुरीतियों का शिकार बनना पडता है। किसीको जन्म के आधार पर नीच मानना निंदनीय अपराध है।

12. गंगी का विद्रोही दिल रिवाज़ी पाबंदियों और मजबूरियों पर चोटें करने लगा। - यहाँ प्रस्तुत रिवाज़ी पाबंदी और मज़बूरी क्या है ?
जाति के नाम पर समाज में बडा भेदभाव था। निम्न कहे जानेवाले लोगों से छुआ पानी पीना, भोजन खाना, कुएँ से पानी भरना, रास्ते में उनसे मिलना आदि बातों को पाबंदी थी। निम्न वर्ग के लोग ये सब सहकर जीने को विवश थे। उच्च वर्ग के लोगों के हितानुसार अपनी ज़िंदगी की प्राथमिकताओं की तय करने केलिए भी वे विवश थे।

13. यह प्रसंग किस सामाजिक व्यवस्था की ओर संकेत किया है ?
यह प्रसंग जातीय असमानता की समस्या की ओर संकेत करता है। मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है। जाति के नाम पर लोगों को उच्च और निम्न मानना अन्याय है। जातीय असमानता एक सामाजिक अभिशाप है।यह सामाजिक विकास में बडा बाधा उत्पन्न करती है। सभी लोगों को अच्छी शिक्षा मिलने पर एक हद तक यह समस्या दूर हो जाएगी। लेकिन आज भी हमारे देश में जाति के नाम पर हमले होते हैं, हत्या तक होती है। मुंशी प्रेमचंद अपनी कहानी ठाकुर का कुआँ में गंगी नामक पात्र के द्वारा जातीय असमानता के खिलाफ अपना विचार प्रस्तुत करते हैं।

14. टिप्पणी – समाज में सभी लोगों को समान अवसर का अधिकार है

हमारे देश में अनेक लोग रहते हैं। उनके रंग, रूप, वेश, भाषा आदि भिन्न हैं। कुछ लोग अमीर हैं तो कुछ लोग गरीब हैं। लेकिन इनके बीच सामाजिक असमानता हम देखते हैं। यह आज की एक बडी समस्या है। अन्न, वस्त्र, घर आदि मानव की आवश्यकताएँ हैं। लेकिन समाज के कुछ लोग इनसे वंचित हैं। हमारे संविधान के अनुसार हर एक नागरिक को खाना मिलने का, घर मिलने का, कपडे मिलने का और पीने के पानी मिलने का अधिकार है। फिर भी समाज के सभ्य कहे जानेवाले संपन्न वर्ग गरीब या निम्न वर्ग के लोगों को कुचल डालते हैं। इस कारण निम्न वर्ग के लोगों को पीने केलिए शुद्ध पानी भी नहीं मिलता है। यह उचित नहीं है। समाज के सभी लोगों को समान रूप से जीने का अवसर मिलना चाहिए।

15. टिप्पणी – जाति भेद एक अभिशाप है

हमारे समाज में जाति भेद एक बडी समस्या है। आदमी जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है। जाति के नाम पर मनुष्य को अलग-अलग विभागों में बाँटना अभिशाप है। उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोग से कठिन मेहनत करवाते हैं। लेकिन उसे उचित वेतन नहीं देता है। सार्वजनिक कुएँ से पानी भरना, इष्ट भोजन खाना, आवश्यक वस्त्र पहनना, मंदिर में प्रवेश करना आदि को उन्हें नहीं मिलता है। उनके बच्चों को स्कूल में जाकर पढने का अवकाश तक नहीं है। निम्न कहे जानेवाले लोगों से छुआ पानी पीना, भोजन खाना, कुएँ से पानी भरना, रास्ते में उनसे मिलना आदि बातों में पाबंदी थी। निम्न वर्ग के लोग ये सब सहकर जीने को विवश थे। उच्च वर्ग के लोगों के हितानुसार अपनी ज़िंदगी की प्राथमिकताओं को तय करने केलिए भी वे विवश थे। इन भेदभावों से मुक्ति आवश्यक है। जाति प्रथा को इस समाज से नहीं इस देश से दूर करना चाहिए। इससे ही समाज की तथा देश की भलाई होती है।

SREEJITH P, KOVOOR VAPKAH, SCRIPS

16. पोस्टर (संगोष्ठी) – जातिप्रथा एक अभिशाप है

सरकारी जी एच एस एस, कोल्लम

संगोष्ठी

विषय - जातिप्रथा एक अभिशाप है

आयोजन – हिंदी मंच

2018 जनवरी 18, गुरुवार को
सुबह 10 बजे, स्कूल सभा भवन में

उद्घाटन – शिक्षा मंत्री, केरल

प्रस्तुति - हिंदी अध्यापक

जातिप्रथा समाज का अभिशाप है ...
इसे रोको ... समाज को सुधारो ... ।

भाग लें... लाभ उठाएँ...

सबका स्वागत

17. पोस्टर (points) संदेश – जातिप्रथा एक अभिशाप है

1. मानव–मानव के बीच जाति भेद न करें ...
   जातीय असमानता सामाजिक अपराध, इसे खतम करें ।
2. छुआछूत दूर करो ...
   समाज की उन्नति पाओ ।
3. नीच कुल में जन्म लेना व्यक्ति का अपना दोष नहीं ...
   जन्म के आधार पर नीच जाति मानना निंदनीय अपराध ।
4. सभी मानव समान ...
   जाति न देखो, कर्म देखो ।
5. एक देश, एक जाति, एक धर्म
   जाति ने नाम पर अत्याचार न करें ।
6. मनुष्य को जाति के नाम पर नहीं मनुष्य की तरह जानो ...
   याद दें ... आपत्ति, संकट पर कोई जाति नहीं होती ।
7. धरती पर सभी का हक एक जैसा
   जाति के नाम पर किसीसे यह अधिकार मत छीनो ।
8. करो रोकथाम जातिप्रता का ...
   अपनेलिए ... मनुष्यता केलिए ...
9. जातीय असमानता संविधान के खिलाफ ...
   इसे मिटाओ ... सभी मानवों को समान मानो ।

विश्व जातिगत भेदभाव विरुद्ध दिवस – मार्च 21

PART - 3 (कुएँ पर किसी के आने की आहट हुई ----------- अनुभव उसे पहले कभी न हुआ था ।)

1. औरतें कुएँ के पास क्यों आई थीं ?

कुएँ से घरवालों केलिए घडे में ताज़ा पानी भरकर लाने केलिए

2. गंगी ने क्षणिक सुख की साँस ली । क्यों ?

कुएँ के पास कोई नहीं था ।

3. गंगी दबे पाँव कुएँ की जगत पर चढी, विजय का ऐसा अनुभव उसे पहले न हुआ था । – गंगी को ऐसा अनुभव क्यों हुआ होगा ?

अछूत होने के कारण गंगी ठाकुर के कुएँ के पास नहीं जा सकती । रात की निर्जन हालत में सही, गंगी जीवन में पहली बार ठाकुर के कुएँ की जगत पर चढी, इससे उसको गर्व का अनुभव हुआ होगा ।

4. वार्तालाप (दो औरतें कुएँ से पानी भरने आयीं)

पहली औरत - (जलन के साथ) देखो दीदी, ये मर्द लोग कितने बुरे हैं ।

दूसरी औरत - ठीक कहा तुमने । खाना खाने बैठते ही हुकम चलाया कि कुएँ से ताज़ा पानी भर लाओ । घडे केलिए पैसे नहीं है ।

पहली औरत - (गुस्से में) हमें आराम से बैठे देखकर मरदों को जलन होती है ।

दूसरी औरत - हाँ, ये लोग एक कलसिया भर पानी भरकर नहीं आते। बस हुकम चला दिया कि ताज़ा पानी भर लाओ, जैसे हम लौडियाँ ही तो हैं ।

पहली औरत - लौडियाँ नहीं तो और क्या हो तुम ? रोटी-कपडा नहीं मिलती क्या ? दस-पाँच रुपए भी छीन-झपटकर लेती हो न ? और क्या चाहिए तुम्हें ?

दूसरी औरत - मत लजाओ दीदी ! छिन्न भर आराम करने को मन बहुत तरसता है । इतना काम और कहीं करें तो इससे आराम मिलती । यहाँ काम करते हुए मर जाने पर भी किसीके चेहरे पर खुशी नहीं दिखता ।

पहली औरत - तुम सच कहती हो दीदी, ये लोग हमें नौकर समझकर रखे हैं ।

दूसरी औरत - ज़रूर । अब हम लौट चलें । वे हमें बुला रहे होंगे ।

पहली औरत - ठीक है । जल्दी चलिए ।

PART - 4 (उसने रस्सी का फंदा ---------- वही मैला-गंदा पानी पी रहा है ।)

1. गंगी रस्सी छोडकर क्यों भाग गई ?

ठाकुर के द्वारा पकडे जाने डर से

2. गंगी के हाथ से रस्सी क्यों छूट गई ?

गंगी को मालूम हुआ कि दरवाज़ा खोलकर ठाकुर आनेवाला है । इस कारण से वह डर गयी और रस्सी हाथ से छूट गई ।

3. शेर का मुँह इससे अधिक भयानक न होगा । यहाँ ठाकुर के दरवाज़े की तुलना शेर की मुँह से क्यों की गई है ?

शेर एक खूँखार जानवर है । उसके सामने से बच जाना मुश्किल है, पर असंभव नहीं । पर ठाकुर जैसे उच्च वर्ग के लोग शेर से भी अधिक क्रूर है । एक अछूत को कुएँ से पानी भरते देखें तो उसे जरूर मार ही डालेगा । गंगी यह बात अच्छी तरह से जानती थी । इसलिए जब ठाकुर का दरवाज़ा एकाएक खुलता है तो अत्यंत डर जाने से वह ऐसा सोचती है ।

4. जोखू ने गंदा पानी पीने का निश्चय क्यों किया ?

जोखू को मालूम था कि ठाकुर और साहू के कुएँ से पानी लेना आसानी की बात नहीं है । उसकी राय में ठाकुर लाठी मारेंगे और साहूजी एक के पाँच लेंगे । इस कारण से ही उसने गंदा पानी पीने का निश्चय किया ।

5. गंगी और जोखू के बीच हुए वार्तालाप (ठाकुर के कुएँ से वापस घर आने पर)

गंगी – अरे ! आप यह क्या कर रहे हैं ?

जोखू – फिर मैं क्या करूँ ? प्यास के मारे गला सूख गया है ।

गंगी – लेकिन वह बदबूदार पानी है न ? आप की बीमारी बढ जाएगी तो ?

जोखू – और मैं क्या करूँ ? तू साफ पानी लाने गई थी न ? मिल गया ?

गंगी – नहीं ।

जोखू – फिर इतनी देर तक कहाँ थी ?

गंगी – मैं ठाकुर के कुएँ से पानी ले रही थी ।

जोखू – फिर क्या हुआ ?

गंगी – इसी बीच ठाकुर ने मुझे देखा और मैं जान बचाकर भाग गयी ।

जोखू – मैंने पहले ही कहा था न ?

गंगी – अब क्या होगा ? भगवान ही जाने !

जोखू – ठीक है । अब लेटकर सो जाओ ।

6. गंगी की डायरी (ठाकुर के कुएँ से वापस घर आने पर)

तारीख : ....

आज का यह बुरा दिन मैं कैसे भूलूँ ? प्यास के मारे मेरे बीमार पति को शुद्ध पानी दे न पाई । आज उनके पूछने पर मैंने जो पानी दिया उससे बदबू आ रही थी । इसलिए मैंने उन्हें वह पानी पीने नहीं दिया । उनकेलिए साफ पानी लाने केलिए मैं रात के अंधेरे में रस्सी और घडा लेकर ठाकुर के कुएँ की ओर निकल पडी । मैं घडे में रस्सी डालकर पानी खींच रही थी, अचानक ठाकुर दरवाज़ा खोलकर बाहर आए । मैं जल्दी घडा, रस्सी सब छोडकर वहाँ से भाग गयी । यदि पकड लिया तो ... । घर पहुँचकर मैंने देखा, मेरे पति वही गंदा पानी पी रहे हैं । अब मैं उन्हें कैसे मना करूँ ? हे भगवान ! हमारी यह बुरी हालत कब बदलेगी ?

7. जोखू की डायरी (अपनी बुरी हालत पर)

तारीख: ……………….

आज बीमार होने पर भी मुझे बदबूदार पानी पीना पडा । गला सूखा जा रहा था, तब मैं गंगी से पीने को कुछ पानी माँगा । पर उससे बदबू आ रहा था । हम जिस कुएँ से पानी भरते थे, उसमें कोई जानवर गिरकर मरा था । निम्नजाति के होने से हमको ठाकुर और साहू के कुएँ से पानी भरने की अनुमति नहीं थी । गंगी तो साहस के साथ ठाकुर के कुएँ से पानी लेने गया । पर निराश लौट आयी । हे भगवान ! हमारी यह हालत कब बदलेगी ?

8. टिप्पणी - गंगी की चरित्रगत विशेषताएँ

गंगी मुंशी प्रेमचंद की मशहूर कहानी ' ठाकुर का कुआँ ' की नायिका है । वह निम्नजाति की मानी जाती है । उसके पति जोखू बीमार है । पीने केलिए पति को साफ पानी दे न पाने से वह परेशान होती है । ठाकुर के कुएँ से पानी लेने जाने पर जोखू उसे डाँटता है । लेकिन वह पीछे मुडनेवाली नहीं थी । रात को चुपके –चुपके वह ठाकुर के कुएँ से पानी लाने जाती है । अत्यधिक सावधानी से पानी लेते समय ठाकुर का दरवाज़ा खुलता है और गंगी वहाँ से बच जाती है । उसका विद्रोही दिल रिवाज़ी पाबंदियों पर चोटें करता है । वह अपने पति से बहुत प्यार करती है । वह जानती थी कि गंदा पानी पीने से बीमारी बढ जाएगी । लेकिन बेचारी अनपढ गंगी यह नहीं जानती थी कि पानी को उबालने से उसकी खराबी दूर होती है । इस प्रकार गंगी में एक गरीब, असहाय और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ विद्रोह करनेवाली स्त्री को हम देख सकते हैं ।

9. जोखू की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

प्रेमचंद की कहानी ठाकुर का कुआँ का नायक है जोखू । नीच जाति में जन्म होने से उसको कई प्रकार की यातनाएँ सहना पडता है । लेकिन उसको किसीसे शिकायत नहीं है । वह अच्छी तरह जानता है कि अब की सामाजिक व्ववस्थिति उच्च जाति के अनुकूल है, कानून और न्यायालय उनके पक्ष में है । इसलिए उच्च वर्ग के विरुद्ध आवाज़ उठाने से कोई फायदा नहीं । वह बीमार से परेशान है, प्यास मिटाने कुछ शुद्ध पानी पीना चाहता है । फिर भी ठाकुर के कुएँ पर पानी भरने जाने से वह गंगी को रोकता है । वह अपनी पत्नी को बहुत चाहता है । अपने परिवार को नष्ट न होने के लिए उस समय समाज में पनपे सामाजिक असमानताओं को सहने वह तैयार हो जाता है । वह ठाकुर जैसे लोगों के विरुद्ध कुछ करना नहीं चाहता, क्योंकि वह जानता है कि ऐसा करने पर यहाँ जीना भी मुश्किल हो जाएगा ।

10. गंगी का पत्र (पानी लाने की उसकी परेशानी)

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्यारी माँ,

आप कैसी हैं ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । आपकी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ ।

हमेशा मन में आपकी याद आती है । वहाँ पहुँचने केलिए मन में बडी चाह है । लेकिन अपने परिवार की हालत देखकर मैं चुप होकर कैसे बैठूँगी ? माँ, जोखू को बीमार पडे कुछ दिन बीत गए । हमें साफ पानी नहीं मिलता है । गंदा पानी पीने से बीमारी बढने की संभावना है । इसलिए एक दिन साफ लेने केलिए मैं ठाकुर के कुएँ की जगत पर गई । रात नौ बजे के बाद मुझे एक मौका मिला । मैंने घडा और रस्सी कुएँ में डालकर तेज़ी से पानी खींचकर कुएँ की जगत पर रखा । उस वक्त ठाकुर का दरवाज़ा खुल गया । मेरे हाथ से घडा पानी में गिरा । ठाकुर को वहाँ आते देख मैं भागकर घर पहुँची । भाग्य से मेरी जान बच गयी । अब हम गंदा पानी पीकर जीते हैं ।

माँ एक दिन यहाँ आइए । तब सब हाल देखें । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र

(हस्ताक्षर)

नाम

सेवा में,

नाम

पता ।

8. बसंत मेरे गाँव का PART - 1 (मकर संक्रंति के बाद सूरज .... बसंत में संगीत का सुर घुल जाते हैं ।)

1. फूलदेई का त्योहार किस ऋतु में मनाया जाता है ?
   बसंत ऋतु में
2. फूल न मुरझाएँ ; इसकेलिए बच्चा क्या करते हैं ?
   फूलों को न मुरझाने रिंगाल से बनी टोकरियों में रखकर रात भर पानी से भरे गागरों के ऊँपर रखा जाता है ।
3. फूलदेई किसका त्योहार है ?
   बच्चे का
3. फूलदेई त्योहार में बडों की भूमिका क्या है ?
   बच्चों को सलाह देना
4. सरसों फूल का रंग क्या है ?
   पीला
6. फूलदेई त्यौहार में गाए जानेवाले चैती गीत में किन-किन के किस्से होते हैं ?
   चैती गीतों में पांडवों की हिमालय यात्रा के किस्से और पहाडी वीरों की शौर्य गाथाएँ सम्मलित होती हैं ।
4. ‘ बसंत बौराने लगता है ‘– इसका मतलब क्या है ?
   बसंत ऋतु में पहाडी ढलानों पर फ्योंली और सरसों के पीले फूलों से शानदार पीलाई छा जाते हैं । बसंत की यह खूबसूरती मन को उन्मत्त करने लगता है ।
5. बच्चे फूलदेई त्योहार कैसे मनाते हैं ?
   बच्चे शाम तक फूल चुनते हैं । उन्हें बिना मुरझाए सुरक्षित रखते हैं । सबेरे वे गाँव भर घूमते हैं । इन फूलों से घरों की देहरियाँ सजाते हैं । लोग उन्हें चावल, गुड, दाल आदि दक्षिणा के रूप में देते हैं । इक्कीस दिन तक यह क्रम रहता है । अंतिम दिन इकट्ठी सामग्री से सामूहिक भोज बनाया जाता है ।
6. उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में फूलदेई को बच्चों को सबसे बडा त्यौहार मानते हैं । क्यों ?
   फूलदेई त्यौहार से जुडे फूल चुनने से लेकर सामूहिक भोज बनाने तक के सारे काम बच्चे करते हैं । इस त्यौहार के आयोजन में बडों की भूमिका केवल सलाह देने तक सीमित रहती है । इसलिए फूलदेई को उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में बच्चों के बडे त्यौहार मानते हैं ।

7. लडके की डायरी (फूलदेई त्यौहार के बारे में)

तारीख : ....

इस वर्ष भी फूलदेई का त्यौहार मनाया गया । हम पिछले वर्ष यह त्यौहार मनाने के उन दिनों से इस वर्ष के त्यौहार की प्रतीक्षा कर रहे थे । हम बडे उत्साह से थे । एक-एक दिन हमारी टोलियाँ फूल तोडने केलिए जाती थीं । फिर हमारी टोलियाँ गाँव के विभिन्न प्रांतों में जाकर उन फूलों से घरों की देहरियाँ सजाईं । उन घरों से दक्षिणा के रूप में दाल, चावल, गुड आदि मिले । हमने इक्कीस दिनों से मिली इन चीज़ों से सामूहिक भोज बनाया । मेरे साथ अनेक लडके-लडकियाँ थे । वे सभी उत्साह के साथ इस जश्न में भाग लिए । बुजुर्ग लोग हमें सलाह देने केलिए वहाँ उपस्थित थे । हम आज से अगले वर्ष के फूलदेई के त्यौहार की प्रतीक्षा में हैं ।

8. मित्र के नाम पर अपना पत्र (फूलदेई त्यौहार का वर्णन)

स्थान : ....

प्रिय मित्र,

तारीख : ....

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । हमारी अध्यापिका ने पिछली कक्षा में पढाए उत्तराखंड के एक प्रमुख त्योहार फूलदेई की विशेषताएँ मैं तुमसे बाँटना चाहता हूँ ।

फूलदेई बसंत ऋतु में उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में मनाये जानेवाले बच्चों का बडा त्योहार है । इक्कीस दिन के इस त्योहार में बच्चे सुबह से शाम तक तरह-तरह के फूल चुन लेते हैं । इन फूलों को रिंगाल की टोकरियों में रखकर सुबह तक मुरझा न पाने केलिए रात भर पानी से भरे गागरों के ऊपर रखा जाता है । सुबह होते ही बच्चों की टोलियाँ गाँव भर में घूमती हैं और इन फूलों से घरों की देहरियाँ सजाए जाते हैं । उन घरवाले बच्चों को दक्षिणा के रूप में चावल,गुड,दाल आदि देते हैं । इक्कीस दिन तक इकट्ठी की जाती इन चीज़ों से अंतिम दिन सामूहिक भोज बनाया जाता है । इस त्योहार से जुडे हुए सारे काम बच्चे ही करते हैं । इस आयोजन में बडों की भूमिका केवल सलाह देने तक सीमित होती है ।

इस त्योहार के बारे में पढने के बाद मुझे भी वहाँ जाकर इसे देखने का मन हो रहा है । क्या तुम भी आओगे मेरे साथ ? वहाँ तुम्हारी खबर क्या-क्या हैं ? माँ-बाप से मेरा पूछताछ कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

9. वार्तालाप – पत्रकार और गाँववाला

पत्रकार - जी, क्या आप यहाँ के रहनेवाले हैं ?
गाँववाला - हाँ । पिछले बीस साल से मैं यहाँ रहता हूँ ।
पत्रकार - मैं एक पत्रकार हूँ । क्या, आप मुझे फूलदेई त्यौहार के बारे में कुछ बता सकते हैं ?
गाँववाला - ज़रूर । पूछिए, आपको क्या जानना है ?
पत्रकार - फूलदेई त्यौहार किस ऋतु में मनाता है ?
गाँववाला - बसंत ऋतु में, इक्कीस दिन की यह बच्चों का बडा त्यौहार है ।
पत्रकार - इसे बच्चों का बडा त्यौहार क्यों कहते हैं ?

गाँववाला - इस त्यौहार के आयोजन में सारे काम बच्चे ही करते हैं। बडे लोग तो केवल सलाह ही देते हैं।
पत्रकार - अंतिम दिन की कोई खासियत है ?
गाँववाला - अंतिम दिन को बच्चे सामूहिक भोज बनाते हैं। बडे लोग चैती गीत गाते रहते हैं। लगता है आपको कुछ भाग्य है।
पत्रकार - ऐसा क्यों कहा आपने ? बताइए ?
गाँववाला - आप यहाँ के सजावट नहीं देखा ? अरे यह तो त्यौहार का आखिरी दिन है। आप सामूहिक भोज में भाग लेकर ही जाइए।
पत्रकार - यह तो बडी खुशी की बात है। बहुत शुक्रिया।

10. रपट (उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में फूलदेई त्यौहार मनाया)

फूलदेई का जश्न धूमधाम से मनाया गया

स्थान : .... उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में इक्कीस दिनों से फूलदेई का त्योहार मना रहे थे। यह त्योहार पूर्ण रूप से बच्चों के द्वारा मनाया गया। बडों की भूमिका सिर्फ सलाह देना मात्र रहा। बच्चों ने रोज़ देर शाम तक रिंगाल से बनी टोकरियों में फूल चुने और गागरों में पानी भरकर उसके ऊपर रखे। रोज़ सुबह गाँव भर बच्चों की टोलियाँ घूमीं। पिछली शाम चुने गए फूल घरों की देहरियों पर सजाए गए। जिनके घरों में फूल सजाए गए उन्होंने बच्चों को चावल,गुड,दाल आदि दिए। दक्षिणा में मिली यह सामग्री पूरे इक्कीस दिन तक इकट्ठी की गई। फूलदेई की विदाई के साथ यह उत्सव कल समाप्त हुआ। अंतिम दिन कल इकट्ठी की गई सामग्रियों से सामूजिक भोज बनाया गया। त्योहार के दिनों में लोकगीतों की प्रस्तुति हुई थीं। नाटक,प्रतियोगिता,गरीब लोगों केलिए कपडा वितरण आदि विभिन्न कार्यक्रम इसके साथ चलाए गए।

11. पोस्टर – फूलदेई समारोह

उत्तराखंड कला समिति के नेतृत्व में

सामूहिक फूलदेई त्योहार

2019 मार्च 22, शुक्रवार को देहरादूर गाँव में
सुबह 8 बजे से रात 12 बजे तक

उद्घाटन - महापौर

- फूलों की प्रदर्शनी
- लोकगीत प्रस्तुति
- सामूहिक भोज
- गरीबों केलिए कपडा वितरण

सबका हार्दिक स्वागत

PART - 2 (बसंत की गुनगुनी धूप .... ऋतुओं के बदलने का उल्लास बना रहेगा।)

1. पशुचारकों की खुशी का कारण क्या है ?
   महीनों बाद घर लौटने का समय आया है।
2. पशुचारक अपनी पुरानी वसूली कब की जाती है ?
   बर्फीले मौसम में निचले इलाकों की ओर जाते समय
3. ठंड के मौसम में बर्फीले इलाकों से पशुचारक निचले इलाकों में क्यों उतरते हैं ?
   ठंड के मौसम में पहाडों के चरागाह बर्फ से ढक जाते हैं। तब अपनी जानवरों को चराने केलिए वहाँ के पशुचारक अपने जानवरों के साथ निचले इलाकों में उतरते हैं।
4. बुराँस के फूल का रंग क्या है ?
   लाल
5. ' आपसी विश्वास के दम पर वर्षों से यहाँ लेन–देन चल रहा है।'– यहाँ गाँववालों की कौन–सी विशेषता प्रकट होती है ?
   उत्तराखंड के हिमालयी अंचल के गाँववाले सीधे–सादे और ईमानदार हैं। वे किसीको धोखा देना नहीं चाहते हैं। वे पशुचारक के साथ जो नकद–उधार करते हैं, उसका कोई आंकडे कहीं दर्ज नहीं करते। वे आपसी विश्वास को बडा मोल देते हैं।
6. ' जब तक हिमालय रहेगा ऋतुओं के बदलने का उल्लास बना रहेगा।'- इसका क्या तात्पर्य है ?
   हमारे देश के ऋतु चक्र का आधार हिमालय है। बसंत, गर्मी, सर्दी, वर्षा आदि बारी–बारी आने का कारण हिमालय है।
7. अपने घर लौटने की खुशी उत्सव का माहौल रच देती है। पशुचारकों के महीनों तक के पहाडी जीवन पर टिप्पणी लिखें।
   ठंड के मौसम में बर्फीले इलाकों से पशुचारक निचले इलाकों में उतरते हैं। महीनों तक फैले चरागाहों,घने जंगलों और अनजान बस्तियों में भटकने के बाद अपने घर लौटने की खुशी उत्सव का माहौल रच देती है। वे गीत गाते हैं, नाचते हैं। अपने साथ उनके भेड-बकरियाँ, घोडे-खच्चर, कुत्ते भी होले हैं। रास्ते में आनेवाले गाँवों से उनका लेन-देन भी होता रहता है। वे जानवरें के साथ-साथ कीडाजडी, करण और चुरु जैसी दुर्लभ हिमालयी जडी व औषधियाँ भी बेचते हैं। इन गाँवों से उनका सदियों का रिश्ता है।

8. रपट (पशुचारक और गाँववालों के बीच का लेन-देन)

आपसी विश्वास के दम पर सदियों से व्यापार

स्थान : ...... उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में बसते पशुचारकों और गाँववालों के बीच आपसी विश्वास के बल पर सदियों से लेन-देन हो रहा है। सर्दी बढने पर जानवरों के साथ निचले इलाकों में उतरे पशुचारक गर्मी होने पर वापस अपने घर लौटते हैं। इस समय रास्ते में आनेवाले गाँवों से उनका लेन-देन चलता है। वे जानवरों के साथ -साथ दुर्लभ हिमालयी जडी और औषधियाँ भी बेचते हैं। इन गाँवों से उनका सदियों का रिश्ता है, इसलिए उसी समय पूरी कीमत चुकाने की ज़रूरत नहीं होती। वर्फीले मौसम में फिर निचले इलाकों में जाते वक्त पुरानी वसूली की जाती है। मज़े की बात है कि नकद-उधार के आंकडे कहीं दर्ज़ नहीं होते। केवल आपसी विश्वास के दम पर चलते यह व्यापार बिलकुल अलग ही है।

9. पटकथा – पशुचारक और गाँववालों के बीच का लेन-देन

स्थान - गाँव की एक सडक के किनारे ।

समय - शाम के छे बजे ।

पात्र - पशुचारक और गाँववाला ।

घटना का विवरण - पशुचारक जानवरों के साथ औषधियाँ लेकर वापस अपने घर लौटते वक्त रास्ते में एक गाँववाले से उसकी मुलाकाल होती है ।

संवाद –

पशुचारक – नमस्ते भैया, क्या चाहिए आपको ?

गाँववाला – मुझे कुछ जडी-बूटियाँ चाहिए ।

पशुचारक – बताइए क्या-क्या चाहिए ? हमारे पास कीडाजडी, करण और चुरु हैं ।

गाँववाला – मुझे थोडा-सा कीडाजडी और चुरु चाहिए ।

पशुचारक – इतनी तो बाकी पडी है । यह तो 120 रुपए का है ।

गाँववाला – अब मेरे पास 100 रुपए ही हैं ।

पशुचारक – कोई बात नहीं, अगले साल बाकी दीजिए ।

गाँववाला – ठीक है । यह 100 रुपए ले लो, बाकी 20 रुपए अगले साल दे दूँगा ।

(जानवरों को लेकर पशुचारक आगे बढ जाते हैं ।)

10. पोस्टर (संदेश) points – प्रकृति और मनुष्य के आपसी संबंध

1. प्रकृति हमारी माँ, हम सबकी जान...
   करो इसका सम्मान,प्रकृति की रक्षा हमारी सुरक्षा ।
2. मनुष्य और प्रकृति का संबंध अटूट...
   प्रकृति नहीं है तो मानव भी नहीं ।
3. प्राकृतिक वस्तुओं का शोषण कम करो...
   प्राकृतिक दुर्घटनाओं से रक्षा पाओ ।
4. स्वच्छ प्रकृति स्वस्थ जीवन का आधार...
   प्रकृति के बिना मनुष्य का अस्तित्व नहीं ।
5. पहाडियों को गिराना, जंगल-पेडों की कटाई,
   जलस्रोतों व खेतों को मिटाना आदि बंद करो...
   प्रकृति का संतुलन कायम रखो ।
6. प्रकृति को संभालो...
   हमारेलिए... आगामी पीढी केलिए... ।

विश्व पर्यावरण दिवस – जून 5

9. दिशाहीन दिशा PART - 1 (घर में चलते समय मन में यात्रा की .... अंतिम पडाव कन्याकुमारी हो ... ।)

1. मोहन राकेश की बडी इच्छा क्या थी ?

   विशाल समुद्र-तट के साथ-साथ एक लंबी यात्रा करना

2. लेखक समुद्र-तट की यात्रा क्यों न कर न सके ?

   समय और साधन की कमी से

3. लेखक ने फौरन यात्रा करने का निश्चय क्यों किया ?

   नौकरी छोड देने की वजह से हाथ में पैसा आने के कारण

4. लोग गोआ जाना क्यों पसंद करते हैं ?

   गोआ में खुला समुद्र-तट है, एक आदिम स्पर्श लिए प्राकृतिक रमणीयता है और वहाँ जीवन बहुत सस्ता है-रहने-खाने की हर सुविधा वहाँ बहुत थोडे पैसों में प्राप्त हो सकती है ।

5. गोआ की ज़िंदगी बहुत सस्ती है । लेखक के इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ?

   लेखक के इस कथन से मैं सहमत हूँ । गोआ में रहने-खाने की हर सुविधा बहुत थोडे पैसों में प्राप्त होने से वहाँ जीवन सस्ता है ।

6. " घर में चलते समय मन में यात्रा की कोई बनी हुई रूप–रेखा नहीं थी । "– लेखक के इस कथन के आधार पर बताएँ कि किसी यात्रा पर जाने से पहले यात्रा की रूप–रेखा बनाना ज़रूरी है ?

   किसी यात्रा केलिए जाने से पहले रूप–रेखा बनाना ज़रूरी है । क्योंकि कहाँ जाना है, कितने दिन रुकना है, क्या–क्या देखना है इन सबकी रूप–रेखा पहले ही तैयार नहीं की तो हम अपनी रुचि के अनुसार सब कुछ देख नहीं पाएँगे ।

7. घने शहर की छोटी–सी तंग गली में पैदा हुए लेखक को कन्याकुमारी के समुद्र–तट के प्रति आत्मीयता का अनुभव होने का आधार क्या हो सकता है ?

   लेखक का जन्म शहर की छोटी–सी तंग गली होने से उनके मन में विपरीत के प्रति आकर्षण हो सकता है । छोटी गली में पैदा होने के कारण विशाल समुद्र–तट के प्रति आकर्षण होना स्वाभाविक ही है ।

8. लेखक की डायरी (लेखक ने यात्रा करने का निश्चय किया)

तारीख : ....

यात्रा करने की आशा थी । समुद्र–तट की यात्रा बहुत अच्छी है । बहुत बार सोचा था कि ऐसा एक यात्रा पर जाऊँ । लेकिन समय और साधन पास नहीं होते थे । अब इसका अवसर आ गया है । नौकरी छोडने दी तो कुछ पैसे मिले । उन पैसों से यात्रा करने का निश्चय किया । लेकिन कहाँ जाना है, क्या–क्या देखना है इन सबकी कोई रूप–रेखा ही नहीं तैयार की । पहले कन्याकुमारी जाने को सोचा था । वहाँ से गोआ या बंबई । मित्रों की भी विभिन्न रायें हैं । निर्णय तो लेना ही चाहिए ।

PART – 2 (दिसंबर सन् बावन की पच्चीस तारीख। .... मुद्दत हुई है यार को मेहमाँ किए हुए ...।“)

1. ताल के पास पहुँचते वक्त लेखक और मित्र को क्या इच्छा हुई ?

भोपाल ताल में कुछ देर नाव पर सैर करने की इच्छा हुई।

2. लेखक का मित्र अविनाश क्या करता था ?

भोपाल से निकलनेवाले एक हिंदी दैनिक का संपादन करता था।

3. अविनाश ने अपना कोट उतारकर मल्लाह को दे दिया। इसकेलिए क्या–क्या कारण हैं ?

सर्दी बढ रही थी पर मल्लाह के पास चादर नहीं था। अविनाश कुछ समय और झील का सैर करना चाहता था।

4. उसके खामोश हो जाने से सारा वातावरण ही बदल गया। वातावरण की खामोशी लेखक पर कैसा प्रभाव पडा ?

गज़लों में मग्न रहने से बाहर की दुनिया से वे कुछ समय से अनजान थे। गज़ल रुकते ही वे बाहर का वातावरण यानी रात, सर्दी, नाव का हिलना और झील का विस्तार महसूस करने लगे।

5. भोपाल के आम जीवनी की ज़िंदगी में गज़लों का क्या रिश्ता है ?

गज़ल एक तरह का उर्दू प्रेम गीत है। गज़ल अपनी सरलता और संगीतात्मकता के कारण साधारण अनपढ लोग गज़लें पसंद करते हैं। मीठे स्वर में लय के साथ गाने लायक गज़लें सबके मन को भाती हैं। गज़लों से खूब परिचित होने से साधारण लोग भी गज़लें रटते रहते हैं। गज़ल गाते-गाते लोग एक अद्भुत दुनिया में पहुँच जाते हैं।

6. ‘ मगर बात करने की जगह उसने मेरा बिस्तर लपेटकर खिडकी से बाहर फेंक दिया और खुद मेरा सूटकेस लिए हुए नीचे उतर गया। ‘ अविनाश के इस आचरण से मोहन राकेश और अविनाश के बीच की मित्रता का क्या अंदाज़ा मिल जाता है ?

इससे पता चलता है कि अविनाश और मोहन राकेश के बीच घनिष्ठ मित्रता है। अविनाश चाहता है कि उस दिन राकेश जी अपने साथ रहे। लेखक के बारे में निर्णय लेने का पूर्ण स्वतंत्रता अविनाश को था।

7.’मगर आप चाहें तो चंद गज़लें तरन्नुम के साथ अर्ज कर सकता हूँ।‘ इस कथन से आम जनता के साथ गज़लों के रिश्ते का क्या परिचय मिलता है?

गज़लों के प्रति आम जनता का लगाव ही यहाँ प्रकट होता है।

8. ‘ उसके खामोश हो जाने से सारा वातावरण ही बदल गया। ‘– इससे आपने क्या समझा ?

गज़लों में मग्न रहने से बाहर की दुनिया से लेखक और मित्र कुछ समय केलिए अनजान थे। गज़ल रुकते ही वे बाहर का वातावरण यानी रात, सर्दी, नाव का हिलना और झील का विस्तार महसूस करने लगे। किसीमें मग्न होने से हम बाहर की बातों से अनजान रहना स्वाभाविक है।

9. मल्लाह अब्दुल जब्बार की वेशभूषा कैसी थी ?

वह सिर्फ एक तहमद पहना था। उसकी दाढी और छाती के सारे बाल सफेद हो चुके थे।

10. यहाँ ‘ गालिब की चीज़ ’ का तात्पर्य क्या है ?

गालिब की गज़ल

11. मल्लाह अब्दुल जब्बार की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

मोहन राकेश के यात्रावृत्त दिशाहीन दिशा का पात्र है अब्दुल जब्बार नाम का एक बूढा मल्लाह। वह गरीब , परिश्रमी और सादा जीवन बितानेवाला व्यक्ति था। लेखक के मित्र का अनुरोध मानकर रात के ग्यारह बजे के बाद वह नाव लेकर आया। आधी रात के समय कडी सर्दी में वह केवल एक तहमद पहनकर नाव चलाया। उस शांत वातावरण में लेखक का मित्र गाना सुनना चाहे तो उसने नाव चलाते हुए एक के बाद एक करके अच्छे गज़लें गाए। वह बडा विनयशील था। उसका स्वर काफी अच्छा था और सुनाने का अंदाज़ भी शायराना था। उसकी दाढी और छाती के सारे बाल सफेद हो चुके थे। बूढा होने पर भी पतवार चलाते समय उसकी मांसपेशियाँ इस तरह हिलती थीं जैसे उनमें फौलाद भरा हो। उसके गायन ने लेखक और मित्र के सैर को यादगार बना दिया।

12. पटकथा - नाव में ताल यात्रा करना

स्थान –भोपाल ताल के एक नाव।

समय – रात के साढे गयारह बजे।

पात्र – लेखक, अविनाश और मल्लाह। (लेखक और अविनाश 50 साल के कुर्ता और पतलून पहने हैं। मल्लाह 60 साल के, सिर्फ एक तहमद पहना है।)

घटना का विवरण – लेखक और अविनाश नाव में लेटे ताल की सवारी करने लगते हैं। तब लेखक मल्लाह से कुछ पूछने लगता है।

संवाद -

लेखक – आधी रात को बुलाने से आपको कोई तकलीफ हुई है क्या ?

मल्लाह – क्या तकलीफ है साब ? यही तो हमारा गुज़ारा है न ?

लेखक – आपका नाम क्या है ?

मल्लाह – जी, मेरा नाम अब्दुल जब्बार है।

लेखक – क्या आप इस ताल के पास ही रहते हो ?

मल्लाह – हाँ साब। मैं यहाँ पास ही रहता हूँ।

लेखक – सुना है, आप जैसे मल्लाह अच्छे गायक भी हैं। क्या आप हमारेलिए एक गाना गाएँगे ?

मल्लाह – मैं गा तो नहीं सकता, हुज़ूर।

लेखक – कोशिश तो करो यार। देखो कितना अच्छा नज़ारा है यह ! इस वक्त एक गाना भी हो तो मज़ा आता।

मल्लाह – आप चाहें तो चंद गज़लें तरन्नुम के साथ अर्ज कर सकता हूँ, माशा अल्लाह चुस्त गज़लें हैं।

लेखक – ज़रूर ज़रूर ! आपको जैसे आता है वैसा गाओ।

मल्लाह – ठीक है साब।

(मल्लाह उनकेलिए गज़लें सुनाने लगता है।)

13. वार्तालाप – सर्दी बढने से मल्लाह लौटने के बारे में कहने पर

मल्लाह – अब हम लौट चलें साहब ।

अविनाश - क्यों ? क्या हुआ ?

मल्लाह – सर्दी बढ रही है न ?

अविनाश - तो क्या ?

मल्लाह – जी,मैं अपनी चादर साथ नहीं लाया ।

अविनाश - (कोट अतारकर उसकी तरफ बढाते हुए) लो, तुम यह पहन लो । अभी हम लौटकर नहीं चलेंगे ।

मल्लाह - (कोट पहनते हुए) ठीक है साहब । यही तो काफी है ।

अविनाश – तुम्हें घर जाने की कोई आवश्यकता है क्या ?

मल्लाह - नहीं साहब । आपकी सैर खतम होने पर ही मैं जाऊँगा ।

अविनाश – ऐसा हो तो तुम्हें कोई गालिब की चीज़ याद हो, तो सुनाओ ।

मल्लाह - ज़रूर साहब ।

14. वार्तालाप – स्टेशन पर लेखक और मित्र अविनाश के बीच

लेखक – अरे, अविनाश तुम यहाँ ? क्या बात है ?

अविनाश – कुछ नहीं । मैं तुमसे मिलने आया । बंबई तक की यात्रा में है न तुम ?

लेखक – हाँ । क्या तुम मेरे साथ आता है ?

अविनाश – नहीं । क्या यह तुम्हारा बिस्तर है ?

लेखक – हाँ, क्या है ?

अविनाश – (बिस्तर लपेटकर खिडकी से फेंककर सूटकेस लेकर बाहर उतरते हुए) आज तुम मेरे साथ भोपाल में ठहरोगे ।

लेखक – तुम्हारी इच्छा । मैं तुमसे कैसे न कहूँ यार ।

अविनाश – ठीक है । आओ मेरे साथ । कार बाहर खडी है ।

15. मोहन राकेश की डायरी (नाव यात्रा)

तारीख: ....

आज मेरेलिए कैसा दिन था, बता नहीं सकता । आज मैं कन्याकुमारी की यात्रा में था । भोपाल स्टेशन पहुँचने पर मेरा मित्र मुझे मिलने आया और उसके साथ एक रात रहने का निश्चय किया । रात को ग्यारह के बाद हम घूमने निकले । झील के पास आते ही कुछ देर नाव लेकर झील की सैर करने की इच्छा हुई । एक नाव मिल गई । नाव में बैठे यात्रा का मज़ा लूट रहा था । तभी मित्र के अनुरोध पर मल्लाह ने हमारेलिए कुछ गज़लें सुनाईं । कितना मीठा था उनका स्वर । रात के साथ ठंड बढने लगी । लेकिन लौटने का मन नहीं हुआ । इसलिए मित्र ने अपना कोट उतारकर उसको दिया । कुछ देर फिर सैर की । चार बजे ही लौटे । आज की यह मज़ेदार नाव यात्रा मैं कैसे भूलूँ ?

16. यात्रा के बारे में लेखक का पत्र

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? वहाँ तुम्हारी क्या–क्या समाचार हैं ? मैं अब मित्र अविनाश के साथ भोपाल में हूँ । सकुशल मैं यहाँ पहुच गया ।

स्टेशन पर मेरे मित्र अविनाश आया था । एक दिन उसके साथ रहने का निश्चय किया । रात को हमने झील की सैर करने को सोचा । ग्यारह बजे निकले । एक नाव मिल गई । उसमें घूमने लगे । बहुत–ही सुंदर लग रही थी । तभी अविनाश की इच्छा हुई कि कोई कुछ गाए । मैं गा नहीं सकता था । आखिर मल्लाह गाने को तैयार हुए । वे कुछ गज़लें सुनाने लगे । बहुत मीठा था उनका स्वर । रात के साथ ठंड भी बढने लगी । लेकिन लौटने का मन नहीं हुआ । कुछ देर फिर सैर की। चार बजे ही लौटे ।

अगली बार तुम भी मेरे साथ आओ । ऐसी यात्राएँ बहुत ही आकर्षक होती है । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

17. लेखक का पत्र (भोपाल से लौटकर पर अपना मित्र अविनाश को शुक्रिया अदा करते हुए)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

नमस्ते । आप कैसे हैं ? आपके परिवार सब कैसे हैं ? मैं यहाँ ठीक हूँ। सकुशल मैं यहाँ पहुच गया ।

मैं इस पत्र के द्वारा भोपाल की यात्रा के अनुभव के बारे में बताना चाहता हूँ । वास्तव में मेरा लक्ष्यस्थान भोपाल नहीं था । लेकिन आपने उसे बदल दिया । आप मेरा सूटकेस लेकर चले थे । मेरे सामने और कोई उपाय नहीं था, सिर्फ आपके साथ चलना था । आपके साथ बोपाल में घूमने का अनुभव विशेष आनंददायक था । भोपाल झील में उस बूढे मल्लाह की नाव में जो सैर हुई थी वह तो विशेष उल्लेखनीय थी । रात की उस बूढे मल्लाह के गायन का आस्वादन मैंने खूब किया था । मैं इन अच्छे अनुभवों केलिए आपके कृतज्ञ हूँ । बहुत धन्यवाद ।

आपके परिवार को मेरा हैलो बोलना । आपसे फिर मिलने की प्रतीक्षा में,

सेवा में,
नाम
पता ।

आपका मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

SREEJITH P, KOVOOR VARKALA, SCRIUS

18. विवरणिका (ब्रॉशर) – गोआ की विशेषताएँ

पर्यटकों का बेस्ट डेस्टिनेशन

आदिम स्पर्श लिए प्राकृतिक रमणीयता

गोआ

* दूर तक फैला समुद्र का किनारा
* मस्ती भरा माहौल
* पार्टी
* एडवेंचर खेल
* काजू से बनी लाजवाब फेनी

दार्शनीय स्थानें

* पणजी
* ओल्ड गोआ
* वास्को-डा-गामा
* पोंडा
* मापुसा
* मारगाँव
* छापोरा
* वेगाटोर
* वेनॉलिम
* दूध सागर झरने
* नेशनल पार्क
* अगुडा किला

हनीमून, दोस्तों के साथ व फामिली ट्रिप ऐसी छुट्टी बिताने केलिए

बेहतरीन समय – अक्तूबर से मार्च तक

यातायात के मार्ग

* हनाई जहाज़ के द्वारा
* ट्रैन के द्वारा
* रोड के द्वारा

कम से कम एक हफ्ता बिताए ... आराम से यहाँ का मज़ा लें ...

यातायात की आनंद लूटें ... जल्दी आ जाएँ गोआ ...

सबका स्वागत

10. बच्चे काम पर जा रहे हैं   PART - 1   (कोहरे से ढँकी सडक पर बच्चे ------- काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे ?)

1. समानार्थी शब्द लिखें।

1. नौकरी - काम 2. वक्त – समय 3. प्रश्न - सवाल 4. सबेरे - सुबह 5. रास्ता - सडक

2. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के प्रमुख कवि श्री.राजेश जोशी की सुंदर कविता है बच्चे काम पर जा रहे हैं से ली गई हैं। इसमें कवि बाल मज़दूरी पर तीखा प्रहार करते हैं।

कवि कहते हैं कि बडे सबेरे कोहरे से ढँकी सडक पर बच्चे काम करने केलिए जा रहे हैं। भूख और गरीबी के कारण कई बच्चों को काम पर जाना पडता है। यह हमारे समय की सबसे बडी समस्या है। क्योंकि यह उनको काम करने की उम्र ही नहीं है। यह इतनी भयानक समस्या है कि विवरण की तरह नहीं लिखा जा सकता। इसे एक सवाल की लिखना चाहिए। हमें चिंता करना है कि बच्चों के हँसने-खेलने की उम्र में उन्हें काम पर क्यों जाना पड रहा है ? कवि के अनुसार समस्याओं को सवालों की तरह लिखा जाने से आम जनता का ध्यान इस तरफ आकर्षित हो जाएगा। काम पर जानेवाले बच्चे सुरक्षित रहने व शिक्षा पाने के हकों से वंचित रह जाते हैं। आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। इसलिए उनको बचपन में ही शारीरिक एवं मानसिक विकास का अवसर मिलना चाहिए। इस अभिशाप को जड से मिटाने हम सब मिलकर कोशिश करना पडेगा।

समाज की एक बडी समस्या को कविता के द्वारा प्रस्तुत करने में कवि को पूर्ण सफलता मिली है। कविता की भाषा अत्यंत सरल एवं हमें चिंतित करने की प्रेरणा देनेवाली है।

3. प्रश्नों का उत्तर लिखें।

1. बच्चे काम पर कब जा रहे हैं ?

   सुबह-सुबह (बडे सबेरे)

2. कवि के मत में वर्तमान समय के सबसे भयानक बात क्या है ?

   बच्चों का काम पर जाना

3. ‘ हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह ’- ऐसा क्यों कहा गया है ?

   छोटी उम्र में ही बच्चों को काम पर भिजवाने को कवि आज के समय की सबसे भयानक समस्या बताते हैं। बच्चों से काम करवाना कानूनी अपराध है। फिर भी कई बच्चे अपने परिवार की भूख मिटाने केलिए काम पर जाने को मज़बूर हो रहे हैं। अत: यह देश की डरावनी स्थिति है। क्योंकि बचपन का समय उनके भविष्य निर्माण का है, न कि काम करने का।

4. बातों को सवाल की तरह लिखा जाने से क्या फायदा है ?

   छोटी उम्र में ही बच्चों को काम पर भिजवाने को कवि आज के समय की सबसे भयानक समस्या बताते हैं। इसलिए कवि इसे विवरण की तरह लिखना भयानक होने से सवाल की तरह लिखने की कोशिश करते हैं। बातों को सवालों की तरह लिखा जाने से आम जनता का ध्यान इस तरफ आकर्षित हो जाएगा। समस्या को प्रस्तुत करने में समाज की ओर समस्या उठाना ही सशक्त मार्ग है।

5. बच्चे काम पर क्यों जाते होंगे ?

   अकसर ऐसे बच्चे गरीब परिवार में जन्मे होंगे। अपनी आर्थिक कठिनाई उन्हें काम पर जाने को मज़बूर करते हैं। अनपढ माता –पिता बच्चों को काम पर भेजना पसंद करते हैं। कभी अनाथत्व के कारण, भूख सह न पाने से काम पर जाते होंगे।

PART - 2 (क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं ------ सारे मदरसों की इमारतें)

1. समानार्थी शब्द लिखें।

1. पुस्तक, ग्रंथ – किताब 2. पाठशाला, स्कूल, विद्यालय – मदरसा 3. मकान – इमारत 4. पर्वत - पहाड

5. ढह जाना – तबाह हो जाना/ ध्वस्त होना

2. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के प्रमुख कवि श्री.राजेश जोशी की सुंदर कविता बच्चे काम पर जा रहे हैं से ली गई हैं। इसमें कवि बाल मज़दूरी पर तीखा प्रहार करते हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि अपनी आशंका प्रकट करते हुए पूछते हैं कि बच्चों के पढने-खेलने के उम्र में उन्हें काम पर क्यों जाना पड रहा है ? क्या इनके खेलने की सारी गेंदें अंतरिक्ष में गिर गई हैं ? क्या इनके पढने की सारी रंग-बिरंगी किताबों को दीमकों ने खा लिया है ? क्या इनके खेलने के सारे खिलौने काले पहाड के नीचे दब गए हैं ? क्या इनके पढने के सारे मदरसों की इमारतें किसी भूकंप में ढह गए हैं ? कवि हमारे सामने यह खतरनाक स्थिति पेश करते हैं कि भूख और गरीबी के कारण आज भी कुछ बच्चों को रंग-बिरंगी किताबें, गेंदें, खिलौने, स्कूली इमारतें, हँसी-खेल और पढाई का संसार छोडकर काम पर जाना पडता है। गरीब बच्चे अपनी और अपने घर की तकलीफों के कारण बचपन की खुशियाँ छोडकर काम पर जाते होंगे। इनकी समस्याओं को खतम करने का उत्तरदायित्व समाज पर है। गैर कानूनी होने पर भी बालश्रम आज भी संसार के कई देशों में चालू है। इसके विरुद्ध आवाज़ उठाने का आह्वान है यह कविता।

समाज की एक बडी समस्या को कविता के द्वारा प्रस्तुत करने में कवि को पूर्ण सफलता मिली है। कविता की भाषा अत्यंत सरल एवं हमें चिंतित करने की प्रेरणा देनेवाली है।

4. प्रश्नों का उत्तर लिखें।

1. ‘ क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं सारे मदरसों की इमारतें ’– इन पंक्तियों द्वारा कवि क्या कहना चाहते हैं ?
   बचपन मुख्य रूप से स्कूल में जाकर पढने का समय है। लेकिन काम पर जाने के कारण बच्चों की स्कूल जाने का अवसर नहीं मिल रहा है। इसलिए कवि आशंकित हैं कि उनके स्कूल भूकंप में पडकर ढह गए हैं।
2. ‘ क्या काले पहाड के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने ’– इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं ?
   बचपन बच्चों केलिए खेलने का समय है। लेकिन बडे सबेरे ही काम पर जाने कारण उन्हें खेलने का समय नहीं मिलता है। इसलिए कवि आशंकित हैं कि उनके सारे खिलौने नष्ट कर दिए गए हैं।
3. ‘ क्या दीमकों ने खा लिया है सारी रंग–बिरंगी किताबों को ’–इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं ?
   जो उम्र बच्चों के पढने–लिखने की है उस समय में वे किताबों को छोडकर काम पर जा रहे हैं। इस तरह बच्चे शिक्षा से वंचित हो रहे हैं, पुस्तकों और पढाई के मनमोहक दुनिया से अलग हो रहे हैं। इसलिए कवि आशंकित हैं कि उनकी किताबों ने खा लिया होगा।
4. ‘ क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें ’–इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं ?
   खेलने से बच्चों का मानसिक तथा शारीरिक विकास होता है। लेकिन आज बच्चों के पास खेलने का समय नहीं है।
5. ‘ क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें ’- कवि इससे क्या कहना चाहते हैं ?
   गरीबी के कारण बच्चे स्कूल छोडकर, खेल छोडकर माँ-बाप के साथ काम पर जाते हैं। गेंद एक खिलौना है। बचपन की खुशी से वंचित बच्चों के बारे में कवि यहाँ कहते हैं।

PART - 3 (क्या सारे मैदान, ------------- सारी चीज़ें हस्बमामूल)

1. समानार्थी शब्द लिखें।

1. अधिक – ज़्यादा 2. साधारण – हस्बमामूल 3. कार्य, सामान – चीज़ 4. अचानक - एकाएक

2. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के प्रमुख कवि श्री.राजेश जोशी की सुंदर कविता बच्चे काम पर जा रहे हैं से ली गई हैं। इसमें कवि बाल मज़दूरी पर तीखा प्रहार करते हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि अपनी आशंका प्रकट करते हुए पूछते हैं कि क्या बच्चों के खेलने के मैदान, घरों के आँगन और सारे बगीचे एकाएक खतम हो गए हैं ? अगर ऐसा है तो इस दुनीया में फिर बचा ही क्या है ? यह स्थिति बहुत भयानक है। कवि के अनुसार इसे मामूली प्रथा या कायदा मानना और भी भयानक है। काम पर जाने के कारणखेलने से मिलते बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास के अवसर से वे वंचित हो रहे हैं। दुनिया की हज़ारों सडकों से गुज़रते हुए बच्चे बहुत छोटे बच्चे काम पर जा रहे हैं। यह दृश्य ज़रूर ही खतरनाक है। गरीब बच्चे अपनी और अपने घर की तकलीफों के कारण बचपन की खुशियाँ छोडकर काम पर जाते होंगे। इनकी समस्याओं को खतम करने का उत्तरदायित्व समाज पर है। गैर कानूनी होने पर भी बालश्रम आज भी संसार के कई देशों में चालू है। इसके विरुद्ध आवाज़ उठाने का आह्वान है यह कविता।

समाज की एक बडी समस्या को कविता के द्वारा प्रस्तुत करने में कवि को पूर्ण सफलता मिली है। कविता की भाषा अत्यंत सरल एवं हमें चिंतित करने की प्रेरणा देनेवाली है।

3. प्रश्नों का उत्तर लिखें।

1. ‘ क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन खतम हो गए हैं एकाएक ’– इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं ?
   खेलने की जगहों से बच्चे वंचित हैं। उन्हें ऐसी जगहों पर जाने का अवसर नहीं मिलता है। वे तो काम पर जा रहे हैं।
2. ‘ भयानक है लेकिन इससे भी ज़्यादा यह / कि हैं सारी चीज़ें हस्बमामूल ’- इस पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहते हैं ?
   काम पर जाने से बच्चे रंग-बिरंगी किताबें, खिलौने, हँसी-खेल की दुनिया, पढाई का संसार आदि से वंचित होते हैं। ऐसे उन्हें इस दुनिया में कुछ भी बचा नहीं। इसलिए कवि के मत में इन बातों को मामूली प्रथा या कायदा मानना इससे भी भयानक है।

PART - 4 (पर दुनिया की हज़ारों सडकों से -------- काम पर जा रहे हैं ।)

1. समानार्थी शब्द लिखें।

1. संसार –दुनिया   2. नन्हे - छोटे

2. कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक हिंदी के प्रमुख कवि श्री.राजेश जोशी की सुंदर कविता बच्चे काम पर जा रहे हैं से ली गई हैं । इसमें कवि बाल मज़दूरी पर तीखा प्रहार करते हैं ।

अंतिम पंक्तियों में कवि कहते हैं कि बालश्रम के प्रति हमारा दृष्टिकोण चाहे कुछ भी हो, यह अक सच्चाई है कि दुनिया भर के कई छोटे-छोटे बच्चे काम पर जा रहे हैं । भूख या गरीबी ही वह कारण है जो कुछ बच्चों को काम पर जाने केलिए विवश करता है । बचपन ज़िंदगी का वह समय है जब बच्चों को सारी परेशानियों और दुखों से बेखबर हो हँसना-खेलना चाहिए । लेकिन खिलौनों और रंग-बिरंगी किताबों की दुनिया कुछ बच्चों के भी नसीब में है । कवि हमारे समाज की इस असमानता पर दुखी है ।

समाज की एक बडी समस्या को कविता के द्वारा प्रस्तुत करने में कवि को पूर्ण सफलता मिली है । कविता की भाषा अत्यंत सरल एवं हमें चिंतित करने की प्रेरणा देनेवाली है ।

3. प्रश्नों का उत्तर लिखें ।

1. यह कविता किस सामाजिक समस्या की चर्चा कर रही है?

बालश्रम

2. लेख - बालश्रम

आज बालश्रम दुनिया भर के सबसे भीषण समस्या है । 5 से 14 साल तक के बच्चों को अपने बचपन से ही लगातार काम करवाना बालश्रम कहलाता है । बचपन सभी बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है जो माता-पिता के प्यार और देख-रेख में सभी को मिलना चाहिए । यह अभिशाप बच्चों को अपने दोस्तों के साथ मिलकर खेलने, स्कूल में जाकर पढाई करने, किताबों की मनमोहक दुनिया में घूमने, पौष्टिक भोजन मिलने तथा प्रकृति की सुंदरता का आनंद लेने के अधिकार से वंचित कर देते हैं । माता-पिता अपने बच्चों को परिवार के प्रति बचपन से ही ज़िम्मेदार बनाना चाहते हैं । बालश्रम का मुख्य कारण गरीबी, आर्थिक कठिनाई, बेरोज़गारी, स्कूलों की कमी, माँ-बाप की निरक्षरता, शक्तिहीन कानून व्यवस्था, अनाथत्व, काम करने में विवश माता-पिता आदि हैं । इसकी वजह से बच्चे देश की शक्ति बनने के बदले देश की कमज़ोरी का कारण बनता है । देश के भविष्य उज्वल बनाने केलिए उन्हें अपने बच्चों को हर तरह से स्वस्थ बनाना चाहिए । बाल मज़दूरी भारत में बडा सामाजिक मुद्दा बनता जा रहा है, जिसे नियमित आधार पर हल करना चाहिए । राष्ट्र का कर्तव्य यह है कि वे बच्चों को अवश्य एवं निशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करें । यह एक गंभीर सामाजिक कुरीति है तथा इसे जड से समाप्त करना चाहिए ।

3. पोस्टर (points) संदेश – बालश्रम के विरुद्ध

1. बालश्रम दुनिया की एक भीषण समस्या है...
   बच्चों को काम केलिए नहीं,स्कूल में भेज दें ।
2. बालश्रम रोको...
   बच्चों को पढने,खेलने और बढने दें ।
3. बालश्रम कानूनी अपराध है...
   बालश्रम करानेवालों को कठिन दंड दें ।
4. आज के बच्चे कल के नागरिक हैं...
   मिटाओ जड से बालश्रम,बचाइए भविष्य अपने देश की ।
5. जिस देश के बच्चों का कोई भविष्य नहीं...
   उस देश की अपनी कोई भविष्य नहीं ।
6. बालश्रम एक अभिशाप है...
   एकसाथ हम इस सामाजिक समस्या का उन्मूलन करें ।

विश्व बालश्रम विरुद्ध दिवस – जून 12

4. पोस्टर (points) संदेश – बच्चों को पढने का अवसर दें , शिक्षा-बालकों का अधिकार है ।

1. आज के बच्चे कल के नागरिक हैं
   पढे-लिखे बच्चे ही देश का भविष्य बनेगा ।
2. शिक्षा – बालकों का अधिकार है
   बच्चों को पढने का अवसर दें ।
3. शिक्षा सबका हक
   सब पढें सब बढें ।
4. बच्चों को पढाई का प्रबंध करें
   पढ-लिखकर उन्हें आगे बढने दें ।
5. देश की भविष्य को उज्वल बनाएँ
   देश में साक्षरता को बढाएँ ।
6. शिक्षा प्राप्त करना बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार
   बच्चों से यह अधिकार मत छीनो ।

देशीय शिक्षा दिवस – नवंबर 11

11. गुठली तो पराई है **PART - 1** (यूँ तो बडी बुआ गुठली को .... उसके पैरों के नीचे से ज़मीन खींच ली गई हो ।)

1. बुआ की राय में लडकियों केलिए -------------?

पति का घर / ससुराल ही अपना घर है ।

2. कहानी में किसको ‘ पराई अमानत ’ कहा गया है ?

गुठली को (लडकी को)

3. लडके-लडकियों में भेदभाव दिखाने के संबंध में आपका विचार क्या है ?

लडका-लडकी के बीच भेदभाव रखना ठीक नहीं है । बुद्धि और क्षमता में दोनों बराबर है । इसलिए परिवार में लडके को मिलती स्वतंत्रता, प्यार, हक, देख-रेख लडकी को भी मिलना चाहिए । दोनों को समान मानना ही एक स्वस्थ समाज केलिए हितकर होगा ।

SREEJITH P. KOVOOR VARKALA SCRIPS

4. माँ की बातों से गुठली और भी हताश हो गई । हताश होने के पीछे क्या-क्या कारण हैं ?

बुआ ने गुठली को पराए घर की अमानत बताया था। माँ भी बुआ का साथ देते हुए उससे बातें की । गुठली ने सोचा कि माँ बुआ की बातों को इनकार करेगी,पर ऐसा न हुआ । इसलिए वह बहुत हताश हो गयी ।

5. गुठली क्यों उदास हो गई ?

माँ को बुआ का साथ देता देख

6. ‘ यूँ तो बड़ी बुआ गुठली को अच्छी लगती हैं पर उनसे बात करना उसे कुछ खास पसंद नहीं ।‘ क्यों ?

बुआ सदा उपदेश देती रहती है । हर बात में मनाही करती रहती है । उनका कहना है कि गुठली पराई घर की अमानत है । इसलिए गुठली बुआ से बात करना पसंद नहीं करती थी ।

7. ‘ अरी बेवक़ूफ़ यह घर तो पराया है ।‘ बुआ गुठली से ऐसा क्यों कहती है ?

सामाजिक रिवाज़ों के अनुसार घर में पुरुष की प्रधानता है । लडकी को अपना घर में कोई स्थान नहीं है । उसे पराए घर की अमानत समझती है । गुठली शादी के बाद ससुराल जाएगी । तब पति का घर उसका अपना घर बनेगा । इसलिए बुआ गुठली से ऐसा कहती है ।

8. ‘ लगा उसे जैसे उसके पैरों के नीचे से ज़मीन खींच ली गई हो ।‘- गुठली ऐसा क्यों लगती है ?

बुआ गुठली से कहती है कि गुठली का घर अपना नहीं पराया है । उस समय वह दुखी होकर अपनी माँ की ओर देखती है । लेकिन माँ बुआ की बातों से हामी भरती है । माँ को भी बुआ का साथ देते देखकर गुठली को लगा कि अपने पैरों के नीचे से ज़मीन खींच ली गई है ।

9. माँ की बातों से गुठली और भी हताश हो गई । हताश होने के पीछे क्या कारण है ?

बुआ ने गुठली को पराए घर की अमानत बताया था । माँ भी बुआ का साथ देते हुए उससे बातें की । गुठली ने सोचा माँ बुआ की बातों को इनकार करेगी, पर ऐसा न हुआ । इसलिए वह बहुत हताश हो गयी ।

10. ‘ अरी बेवकूफ यह घर तो पराया है ।‘– बुआ के इस कथन से क्या आप सहमत हैं ? क्यों ?

बुआ के इस कथन से मैं सहमत नहीं हूँ । बुआ के अनुसार लडकी पराए घर की अमानत है । ससुराल (पति का घर) ही उसका अपना घर है । परिवार में लडके को मिलती स्वंतत्रता, प्यार और देख-रेख लडकी को नहीं मिलती । लडकी के साथ ऐसा भेदभाव रखना कभी उचित नहीं है । दोनों को समान मानना ही एक स्वस्थ समाज केलिए हितकर होगा ।

11. गुठली की डायरी (बुआ की नसीहतें)

तारीख : ……………………..

आज मुझे बहुत दुखदायक दिन था । ज़िंदगी में पहली बार एक लडकी होने पर निराशा का अनुभव होने लगती है । लडके जैसे भी चलें और जैसे भी बातचीत करें । लडकियों को कुछ भी करने की स्वतंत्रता नहीं । बुआ ने कहा कि मेरा घर अपना नहीं है, वह तो पराया है । पर इस घर में ही मैं पैदा हुई हूँ । फिर यह घर मेरेलिए क्यों पराया हुआ है ? बुआ के अनुसार लडकियाँ ससुराल को अपना घर मानें । मुझे सब बातें समझने की अकल नहीं आई है । मेरी प्रतीक्षा यह थी कि इस विषय पर माँ मेरी सहायता करती । किंतु वे भी बुआ का साथ देता देखकर मुझे बडा आघात हुआ है । मैं अपना दुख किससे कहूँ ? काश मैं भी एक लडका होता तो कितना अच्छा होता !

12. पटकथा (बुआ की नसीहतें)

स्थान - घर के अंदर ।

समय - शाम के साढे पाँच बजे ।

पात्र - गुठली और बुआ (गुठली 14 साल की लडकी, चुडीदार पहनी है। बुआ 50 साल की औरत, साडी पहनी है ।)

घटना का विवरण - गुठली अपनी मर्ज़ी से कुछ करने लगी तो बुआ हमेशा की तरह उसे डाँटते हुए नसीहतें देना शुरू करती है ।

संवाद -

बुआ - गुठली ज़रा इधर आओ ।

गुठली - बताइए … क्या बात है बुआ ?

बुआ - यह क्या है बेटी ? तुम्हें ऐसा मत करना है, ऐसा पट-पट मत बोलना है, धम-धम मत चलना है ।

गुठली - बुआ, आप बार-बार मुझसे ऐसा क्यों कहती है ?

बुआ - अरे, तू एक लडकी है न ?

गुठली - क्या लडकी होने से कोई दोष है ?

बुआ - अरे छोरी, लोग नाम तो तेरी माँ को ही रखेंगे । कहेंगे कुछ सिखाया ही नहीं । ऐसा ही करोगी क्या अपने घर जाकर ?

गुठली - (क्रुद्ध होकर) आप क्या कह रही है ? अपना घर ? यही तो मेरा घर, जहाँ मैं पैदा हुई ।

बुआ - (हँसती हुई) अरी बेवकूफ यह घर तो पराया है । बाकी लडकियों की तरह तू भी किसी और की अमानत है । ससुराल ही तेरा असली घर होगा । मैं भी इसी घर में पैदा हुई थी, पर अब तेरे फूफाजी का घर ही मेरा घर है । कुछ समझी ?

गुठली - मैं नहीं मानूँगी ।

बुआ - तुम भी बडे होकर अपने घर चली जाओगी ।

गुठली - यही है मेरा, मैं इसे छोडकर कहीं नहीं जाऊँगी ।

(गुठली रोती हुई वहाँ से भाग जाती है ।)

13. वार्तालाप – माँ और गुठली के बीच

माँ - गुठली, तू इधर आकर बैठ रही है ?

गुठली - क्या मैं यहाँ बैठ भी नहीं सकती ?

माँ – क्या हुआ बेटी, तू नाराज़ क्यों है ?

गुठली – किसीको मुझपर प्यार नहीं, मैं पराई हूँ न ...?

माँ – किसने बताया ? तू तो हमारी प्यारी है न ?

गुठली – तो क्यों माँ बुआ के साथ मुझे पराई मानती ?

माँ – बेटा बुआ की बात का बुरा मत मान । और जो कल होना है उसे लेकर आज क्यों परेशान होना ।

गुठली – नहीं माँ, मैं नहीं मानती । मुझे कहीं नहीं जाना है ।

माँ – छोड बेटा ... आ, आकर चाय पीलें ।

14. गुठली का पत्र (बुआ की नसीहतें)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ ।

अपने घर के लोग मुझे पराई घर की चीज़ मानते हैं । बुआ, माँ सब यही बीच-बीच में कहती रहती है । ससुराल ही लडकियों का अपना घर है । घर में स्वतंत्रता से कुछ करने, चलने या बातचीत करने का भी हक लडकियों को नहीं । क्या यह सही है ? क्या हमें अपने भाइयों की तरह अपने घर में रहने का अधिकार नहीं ? हम लडकियों से घर में इतना भेदभाव क्यों ? मेरी समझ में नहीं आती । क्या लडकी होना कोई बुरी बात है ? क्या लडकियों केलिए हमारे संविधान में अलग नियम है ? मैं इससे बहुत दुखी हूँ । आगे मैं ऐसी व्यवहार सह नहीं सकती । लडकी-लडके से कभी कम नहीं है । इस रूढी के विरुद्ध मैं ज़रूर आवाज़ उठाऊँगी । क्या तुम भी मेरे साथ होगी ।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे हो रही है ? तुम कब यहाँ आओगी ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

PART - 2 (उसे याद आया पिछले साल दीदी की शादी में, ... गुठली माँ के प्यार सो मान गई ।)

1. ‘ भूला नहीं है रे ... अपने घर की छोरियों के नाम कार्ड पर नहीं छपते ।‘ ये वाक्य किसकी ओर इशारा करते हैं ?
   सामाजिक असमानता की ओर
2. ‘ गुठली का नाम कार्ड पर नहीं था ’– कारण क्या था ?
   घर की छोरियों का नाम कार्ड पर नहीं छपते थे ।
3. ‘ अपने घर की छोरियों के नाम कार्ड पर नहीं छपते ।‘– कार्ड पर किसका नाम नहीं है ?
   गुठली का
4. ‘ पर ताऊजी उसमें भइया के छोटे–से बेटे का भी नाम है जो अभी बोल भी नहीं सकता तो मेरा ... ।‘ यहाँ कौन–सी सामाजिक अव्यवस्था की झलक मिलती है ?
   यहाँ परिवार की लडका–लडकी के भेदभाव की ओर संकेत है । लडकी को पराए घर की संपत्ति मानी जाती है । उसके साथ घरवाले उपेक्षा का व्यवहार करते हैं । परिवार में लडकों को जो स्थान मिलता है वह लडकियों को नहीं मिलता ।
5. ‘ भूला नहीं है रे ... अपने घर की छोरियों के नाम कार्ड पर नहीं छपते ।‘ ताऊजी इस विचार पर आपकी राय क्या है ?
   गुठली के परिवार में शादी के कार्ड में वधु को छोडकर अन्य लडकियों के नाम छपवाने की परंपरा नहीं थी । पर सारे लडकों का नाम छपवाते थे । इसलिए गुठली का नाम नहीं छपवाया । ऐसा भेदभाव रखना कभी ठीक नहीं । मेरी राय में लडकी और लडका बराबर है । बुद्धि और क्षमता में दोनों समान है, इसलिए लडके को जो प्यार, सुविधाएँ और हक दिया जाता है, वे सब लडकियों को भी मिलना है । लडके-लडकियों के बीच भेदभाव रखना एक स्वस्थ समाज केलिए लायक नहीं है ।
6. गुठली रोने लगी । क्यों ?
   कार्ड में गुठली का नाम नहीं था ।
7. माँ ने गुठली से अपना प्यार कैसे प्रकट किया ?
   दीदी की शादी के कार्ड में गुठली का नाम छपा नहीं था । इससे दुखी होकर गुठली शिकायत करने और रोने लगी । तब उसका नाम कलम से लिख जोडकर माँ ने अपना प्यार प्रकट किया ।
8. गुठली के हाथ में किसकी शादी का कार्ड था ?
   उसकी बहन की
9. गुठली का मुँह उतर गया । क्यों ?
   अपनी बहन की शादी के कार्ड में भइया के छोटे से बच्चे का नाम तक छपा था । लेकिन गुठली का नाम नहीं था । यह देखकर गुठली का मुँह उतर गया ।
10. माँ ने गुठली को मानने केलिए क्या किया ?
   माँ ने अपने हाथ से, कलम से गुठली का नाम कार्ड पे लिख दिया ।
11. माँ ने अपने हाथ से उसका नाम कार्ड पे लिख दिया । क्यों ?
   दीदी की शादी के कार्ड में गुठली का नाम छपा वहीं था । इससे दुखी होकर गुठली शिकायत करने और रोने लगी । तब अपना प्यार प्रकट करने केलिए माँ ने अपने हाथ से यानी कलम से गुठली का नाम कार्ड पे लिख दिया ।

SREEJITH P, KOVOOR VARKALA

B

12. गुठली की डायरी (शादी के कार्ड पर गुठली का नाम नहीं छपा)

तारीख : ....

दीदी की शादी की तैयारियाँ हो रही थी । घर मेहमानों से भरा था । हम सब बडी खुशी में थी । इसी बीच शादी के कार्ड छपके आए । बडी उत्सुकता के साथ मैंने कार्ड खोला । दुख सह न पाई । मेरा नाम कार्ड में न था । भैया के छोटे बच्चे का नाम भी छपा था जो अभी बोल भी नहीं सकता । मैंने सोचा, भैया भूल गया होगा । मैंने बहुत दुखी होकर ताऊजी से शिकायत की । उनका विचार है कि घर की छोरियों के नाम कार्ड पर नहीं छपते । मैं रोने लगी तो बुआ ने डाँटते हुए कहा, शादी के घर में मनहूसियत मत फैलाना । मैं मानने को तैयार नहीं थी । मुझे दुखी देखकर आखिर माँ ने अपने हाथ से कार्ड में मेरा नाम लिख दिया । छपाई जैसा नहीं तो भी माँ के प्यार से मैं मान गई । लडकी के साथ अपने घर में भी इतना विवेचन क्यों ? इस रूढी के खिलाफ ज़रूर आवाज़ उठाना है । आज का यह दिन मैं कभी नहीं भूलूँगी ।

13. पटकथा (शादी के कार्ड पर गुठली का नाम नहीं छपा)

स्थान - घर की बैठक ।

समय - शाम के साढे पाँच बजे ।

पात्र - गुठली 14 साल की लडकी, चुडीदार पहनी है ।
ताऊजी 50 साल के आदमी, धोती और कुर्ता पहने है ।

घटना का विवरण - ताऊजी बैठक की कुर्सी पर बैठे पान खा रहे हैं । गुठली शादी के कार्ड लेकर आती है । उसके चेहरे पर निराशा है ।

संवाद -

गुठली - ताऊजी, क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकती हूँ ?

ताऊजी – क्या बात है बेटी ? जल्दी बताओ ।

गुठली - देखिए ताऊजी, भइया मेरा नाम कार्ड पर छपवाना भूल गया ।

ताऊजी – (हँसते हुए) भूला नहीं है बेटी ।

गुठली - फिर?

ताऊजी – अपने घर की छोरियों का नाम कार्ड पर नहीं छपते ।

गुठली - पर ताऊजी, उसमें भइया के छोटे बेटे का नाम भी है, जो अभी बोल भी नहीं सकता, तो मेरा ...

ताऊजी – तो क्या हुआ ? तेरा नाम तो तेरे अपने कार्ड में छपेगा, यहाँ नहीं ।

गुठली - लेकिन ताऊजी ... दीदी के कार्ड में सिर्फ मेरा नाम नहीं है । यह तो बिलकुल अन्याय है ।

ताऊजी – अरे छोरी ... मुझे गुस्सा मत करना । अब चल भाग यहाँ से ।

(गुठली रोती हुई वहाँ से चलने लगती है ।)

14. पिताजी के नाम गुठली का पत्र (दीदी की शादी के कार्ड पर उसका नाम नहीं छपा)

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

पूज्य पिताजी,

आप कैसे हैं ? आशा है आप सकुशल हैं । मैं यहाँ ठीक हूँ । आपसे एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ ।

पिताजी, आप जानते हैं कि यहाँ दीदी की शादी की तैयारियाँ हो रही हैं । कल दीदी की शादी का कार्ड छपकर आया । कार्ड तो देखने में अच्छा है । लेकिन पिताजी, उसमें मेरा नाम छोड दिया है । उसमें भइया के छोटे-से बेटे का भी नाम है जो अभी बोल भी नहीं सकता । मैंने ताऊजी से इसका कारण पूछा । वे कहते हैं कि छोरियों का नाम कार्ड पर नहीं छपते । ऐसा क्यों पिताजी ? बडी बुआ भी हमेशा मुझसे कहती है कि यह मेरा घर नहीं है । मैं पराए घर की संपत्ति हूँ । ससुराल ही मेरा असली घर है । पिताजी आप ही बताइए, क्या यह सही है?

घर में सब कुशल हैं । आप कब यहाँ आएँगे ? मुझे बहुत-सी बातें करनी है । जल्दी ही आने की प्रतीक्षा में,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

15. गुठली का पत्र (दीदी की शादी के कार्ड पर उसका नाम नहीं छपा)

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ ।

बुआ हमेशा उपदेश देती रहती है । वे कहती हैं कि लडकी तो पराए घर की अमानत है । ससुराल ही लडकियों का अपना घर है । घर में स्वतंत्रता से कुछ करने, चलने या बातचीत करने का भी हक लडकियों को नहीं । दीदी की शादी के कार्ड छपके आई तो सिर्फ मेरा नाम उसमें नहीं था । भइया के छोटे बेटे का भी नाम उसमें था । ताऊजी का कहना है कि घर की लडकियों का नाम कार्ड पर नहीं छपते । ये लोग ऐसा क्यों कहते हैं ? मेरी समझ में नहीं आती। क्या लडकी होना कोई बुरी बात है ? क्या लडकियों केलिए हमारे संविधान में अलग नियम है ?

आगे मैं ऐसी व्यवहार सह नहीं सकती । लडकी-लडके से कभी कम नहीं है । इस रूढी के विरुद्ध मैं ज़रूर आवाज़ उठाऊँगी । मेरी प्रतीक्षा है कि तुम ज़रूर कुछ बताएगी । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता ।

तुम्हारी सहेली
(हस्ताक्षर)
नाम

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRT45

PART – 3 (पर अब तो हद हो गई । .... गुठली टिफिन-बैग उठाकर स्कूल के लिए चल दी ।)

1. कहानी में किसका संकेत है ?
वर्तमान समाज में स्त्री–पुरुष समता का अभाव है ।

2. गुठली को सब लोग पराई क्यों कहते हैं ?
गुठली तो एक लडकी है । घरवालों के विचार में लडकी पराए घर की अमानत है । ससुराल ही लडकी का अपना घर है । लडके केलिए ही जन्मगृह अपना होगा । असल में यह विचार सही नहीं है ।

3. गुठली केलिए कौन–सी विशेषता उचित है ?
प्रतिक्रिया करनेवाली

4. ‘ देर रात तक यही सब सोचती रही गुठली । ‘- गुठली के मन में क्या–क्या विचार आए होंगे ?
उसे पराए अमानत माननेवालों को कुछ सबक सिखाना है । लडकी केलिए जन्मगृह पराया घर हो तो वहाँ के काम उसे करने की कोई ज़रूरत नहीं । भइया केलिए ही यह घर अपना है तो वही सारा काम करना होगा ।

5. घरवाले सब मुँह बाए गुठली को देखते रहने के कारण क्या –क्या होंगे ?
घरवालों के गुठली को पराए घर की अमानत बताने के बदले उसने अपने को मेहमान कहते हुए घर के काम करने से इनका कर लेता है । लडके केलिए ही जन्मगृह अपना है और घर का देखभाल करना उसका कर्तव्य है । ऐसा कहते हुए गुठली टिफिन-बैग उठाकर स्कूल केलिए निकलने लगा तो घरवाले सब मुँह बाए उसको देखता रहा ।

6. सामाजिक असमानता के खिलाफ गुठली अपने ढंग से आवाज़ उठाती है। असमानताओं के विरुद्ध आप क्या–क्या कर सकते हैं ?
सामाजिक असमानताओं के विरुद्ध आवाज़ उठाना हरेक नागरिक का कर्तव्य है । अपने माँ–बाप एवं रिश्तेदारों को यह समझाना चाहिए कि लडका–लडकी एक समान है । सामाजिक असमानता का मुख्य कारण शिक्षा का अभाव है । सभी को शिक्षा मिलने से इस समस्या का एक हद तक हल हो जाता है ।

7. वार्तालाप – गुठली और सहेली के बीच (घर के अनुभव)

गुठली – आज मैं बहुत निराश हूँ यार ।

सहेली – क्या हुआ गुठली, क्यों उदास हो ?

गुठली – बताओ यार, क्या स्त्री होना कोई पाप है ?

सहेली – मुझे कुछ भी समझ में नहीं आया । बुआ की नसीहतें आज भी हुआ क्या ?

गुठली – हाँ । उसने कहा मेरेलिए अपना घर पराया है । मैं किसी और की अमानत है । मुझे लगता है माँ भी बुआ के पक्ष में है ।

सहेली – ऐसा कहने को क्या हुआ ?

गुठली - आज माँ ने कहा, बुआ का कहना सही है। कल की बातों को लेकर आज परेशान न होना। बचपन के दिन फिर लौटके नहीं आनेवाले हैं, इसे जी भरके जी लें।

सहेली – गुठली, तुम निराश मत बनो, उन्हें कुछ सबक सिखाओ ।

गुठली – मैं भी ऐसा सोचती हूँ ।

8. वार्तालाप - माँ और गुठली के बीच का (गुठली कुछ समय पहले स्कूल केलिए निकलने पर)

माँ - गुठली, तुम इतनी जल्दी स्कूल क्यों जा रही हो ?
गुठली - आज मुझे जल्दी जाना है, यहाँ रहकर क्या करने का ?
माँ - आजकल तुम बहुत नटखट हो रही हो । मेरी बातें नहीं मानतीं ।
गुठली - अब तो क्या हो गया, आकाश गिर गया है ?
माँ - तुमने अपना काम कर लिया । देखा, तुम्हारा नानू को खाना नहीं दिया, भैया तुमसे अनुरोध किया था न !
गुठली - मैंने तो अपना काम कर लिया । बस, वह तो इस घर का कुलदीपक है न ! यह घर, बगीचा, वह नानू सब उसका है न ! आखिर मैं तो पराई अमानत हूँ न !
माँ - छोटे मुँह से बडी बात कर रही हो । स्कूल से वापस आओगे न ! मैं तुम्हें सब कुछ सिखाऊँगी, समझी ।
गुठली - ठीक है माँ ।

9. वार्तालाप - माँ और गुठली के बीच का (शादी के कार्ड पर अपना नाम न होने से गुठली दुखी होने पर)

माँ - बेटी तुम यहाँ बैठकर अभी रो रही है क्या ?
गुठली - हाँ माँ, फिर मैं क्या करूँ ? लडकी होने से शादी के कार्ड में जगह नहीं ... घर में रोने का भी हक नहीं ... ।
माँ - तुम जीनती हो न बेटी, यहाँ की प्रथा ऐसी है ।
गुठली - हे भगवान ! अब मेरी मदद कौन करेगी ?
माँ - तुम्हें इसी कार्ड में अपना नाम चाहिए है न ? मैं तुम्हारी यह इच्छा पूरा करूँगी । वह कार्ड मुझे दो ।
गुठली - (कार्ड देते हुए) कैसे माँ ?
माँ - कार्ड में छपवाना तो मेरी वश की बात नहीं, पर कलम से लिख तो सकती है न ?
गुठली - ये अक्षर छपाई जैसे नहीं है, फिर भी आप प्यार से लिखी है न इसलिए मैं मानती हूँ । धन्यवाद माँ ।
माँ - अब तुम खुश हो न ? हाथ-मुँह धोकर आओ, खाना खाएँ ।
गुठली - ठीक है माँ ।

10. टिप्पणी - गुठली की चरित्रगत विशेषताओं पर

कनक शशि की गुठली तो पराई है कहानी का मुख्य पात्र है गुठली नामक की लडकी । वह एक संयुक्त परिवार का अंग है । घर में भाई को मिलती स्वतंत्रता भी गुठली को नहीं मिलती है । घर में उसको स्वतंत्र रूप से चलने या बातें करने का अधिकार नहीं था । घरवालों के अनुसार वह पराए घर की अमानत है । दीदी की शादी के कार्ड पर गुठली का नाम नहीं छपवाने से वह इसके खिलाफ आवाज़ उठाती है । अंत में वह घर में हो रहे लडका-लडकी भेदभाव पर सबको सबक सिखाने का निश्चय करती है । सभी से ऐसा कहती है कि वह एक मेहमान है और मेहमानों से काम करवाना अच्छी बात नहीं है । गुठली सामाजिक असमानता की ओर अपने ढंग से आवाज़ उठानेवाली आज के ज़माने की साहसी लडकियों की प्रतिनिधि है ।

11. गुठली की डायरी (रात को घर की रूढी के खिलाफ प्रतिक्रिया करने की सोच करना)

तारीख : ……………….

आज मैं बहुत उदास हूँ । बुआ की नसीहतें ज़ारी रही हैं । माँ भी बुआ का साथ देना मेरेलिए दुखी की बात है । उनके विचार में जन्मगृह मेरेलिए पराया घर ही है । सब मुझे पराई अमानत मानती हैं । ऐसा हो तो मैं अपने घर का मेहमान है न ? मेहमान को काम करने की क्या ज़रूरत है ? भैया केलिए तो यह घर अपना होगा न ? ऐसा हो तो घर का सारा काम वही करे । कल से मुझे एक अलग लडकी बननी है । घर का काम करवाना बंद करना होगा । ऐसे उन्हें ज़रूर सबक सिखाना है । आगे कभी वे मुझे पराई अमानत न कहे । ऐसा सोचते ही मुझे खुशी आ जाती है । देख लेना कल क्या होगा ?

12. गुठली की डायरी (घरवालों को एक सबक सिखाने के प्रसंग)

तारीख : ……………….

आज मैं बहुत खुश हूँ । मैंने आज अपने घरवालों को एक सबक सिखाया । यहाँ के लोग मुझे पराए घर की चीज़ समझती थी । अब समझ में आए होंगे । लडकियाँ केवल घर का काम काज निपटाने केलिए नहीं है । उनका भी अपना अस्तित्व है । क्या ज़माना है यह ? हम बहिनों को भी अपने भाइयों की तरह अपने घर में रहने का अधिकार ज़रूर है । इसलिए मैंने घरवालों केलिए एक गंभीर समस्या पेश करते हुए कहा, मैं इस घर का मेहमान हूँ और मुझसे काम करवाना उचित बात नहीं है । यह तो भइया का अपना घर है वही यहाँ का सारा काम करे । मेरी बातें सुनकर सब चकित हो गए । किसीके पास उत्तर नहीं था । मुझे विश्वास है, वे ज़रूर कुछ सोचेंगे । मैं यहाँ से शुरू करना चाहती हूँ । मैं पढूँगी और दिखाऊँगी कि लडकी भी लडके के समान कुछ कर सकती है । बहुत नींद आ रही है । बस, बाकी कल ।

13. गुठली का पत्र (अपनी हालत पर सहेली के नाम)

स्थान : ……………….

तारीख : ……………….

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए यह पत्र भेज रही हूँ । बुआ हमेशा उपदेश देती रहती है । वे कहती हैं कि लडकी तो पराए घर की अमानत है । ससुराल ही लडकियों का अपना घर है । घर में स्वतंत्रता से कुछ करने, चलने या बातचीत करने का भी हक लडकियों को नहीं । दीदी की शादी के कार्ड छपके आई तो सिर्फ मेरा नाम उसमें नहीं था । भइया के छोटे बेटे का भी नाम उसमें था । ताऊजी का कहना है कि घर की लडकियों का नाम कार्ड पर नहीं छपते । ये लोग ऐसा क्यों कहते हैं ? मेरी समझ में नहीं आती। क्या लडकी होना कोई बुरी बात है ? क्या लडकियों केलिए हमारे संविधान में अलग नियम है ?

आगे मैं ऐसी व्यवहार सह नहीं सकती । लडकी-लडके से कभी कम नहीं है । इस रूढी के विरुद्ध मैं ज़रूर आवाज़ उठाऊँगी । मेरी प्रतीक्षा है कि तुम ज़रूर कुछ बताएगी । जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

तुम्हारी सहेली
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता ।

14. टिप्पणी – लडकियों को समानता का अधिकार है

भारतीय संविधान के अनुसार लडके-लडकियों को समानता का अधिकार है । लेकिन लडकियों को अकसर भेदभाव सहना पडता है । यह आज के समाज की बडी समस्या है । लडकी को जन्म से लेकर अंत तक घर का काम करना पडता है । सभी कहते हैं कि ससुराल ही लडकियों का असली घर है । इसलिए उसे अपने घर में अन्य होने का अनुभव होता है । समाज में हो या परिवार में हो लडकों के समान लडकियों को उचित स्थान नहीं मिलता है । समाज में भी यही भेदभाव हम देख सकते हैं । उसे स्वतंत्र रूप से चलने का अधिकार भी नहीं है । उन्हें लडकों के जैसे पढाई की सुविधाएँ नहीं मिलती हैं । आज नारी समाज के सभी क्षेत्रों में कर्मरत हैं । उसे समाज से अलग रखना उचित नहीं है । गर्भ में ही लडकियों की हत्या करने का निर्मम व्यवहार भी कभी-कभी चलता है । यानी वे लडकियों को जन्म देना भी नहीं चाहते । लजकियों के प्रति हीन भाव रखना ठीक नहीं है । लडका-लडकी एक जैसा है । लडकियों को समानता का अधिकार मिलना चाहिए ।

15. पोस्टर (points) संदेश – लडका - लडकी भेदभाव

1.लडकी-लडके को समान मानो...
दोनों समता से रहनेवाला देश रचो ।

2. लडकियाँ अनमोल संपत्ति हैं...
तोड दो पुरानी विश्वास, नए सोच अपनाओ ।

3. हर बच्चे का अपना-अपना हक है...
सुरक्षित रहने का और शिक्षा पाने का ।

4. कम उम्र में लडकियों की शादी मत करवाओ, उन्हें अपशकुन मत मानो...
लडकियों को भी अपने पैरों पर खडा होने दो ।

5. लडकी-लडके के बीच भेदभाव न करें...
वह तो पराया धन नहीं, अपना ही है ।

6. देश की उन्नति में लडकियों का भी हाथ है...
वे सिर्फ घर के काम-काज निपटाने को नहीं ।

7. संविधान में दोनों को समान अधिकार है...
देश से इस असमानता मिटाना हमारा कर्तव्य ।